श्री गुरु अमरदास जी विशेषांक

 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

माघ-फाल्गुन, संवत् नानकशाही ५४२
फरवरी 2011 वर्ष ४ अंक ६

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए., एम. एम. सी.*
सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए. (हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

सलोकु मः ३ ॥
सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ ॥
मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥
बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ ॥
इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥
नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥१॥ (पन्ना ६४४)

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी महाराज "रागु सोरठि वार महले ४ की" में दर्ज इस पावन श्लोक द्वारा मनुष्य-मात्र को नैतिक आचरण के निर्माण एवं आध्यात्मिक विकास-विगास में इसका महातम दर्शाते हुए सच्चे गुरु की मन-चित्त-आत्मा की गहराइयों से सच्ची सेवा कमाने का गुरमति शाह-मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि सच्चे गुरु की किसी मनुष्य-मात्र द्वारा की गई सेवा सफल होती है अथवा वह परमात्मा के दर-घर में स्वीकृत होती है, लेकिन यह सेवा सफल अथवा स्वीकृत होने की एक कसौटी या शर्त अवश्य है। वह कसौटी है कि यह सेवा मन लगाकर कर ली जाए। यह प्राय: देखा जाता है कि कई मनुष्य विभिन्न सेवा-कार्य तो जैसे-कैसे निभा रहे होते हैं परंतु वे अंतर्मन से यह सेवा नहीं कमा रहे होते जिससे वे सेवा का वांछित फल अर्जित करने से वंचित रह जाते हैं। और तो और कई बार गुरु-घर में शरीर तो किसी सेवा-कार्य में लगा दिखाई देता है, परंतु व्यक्ति का मन-चित्त, उसकी आत्मा इस सेवा-कार्य में पूर्णत: शामिल नहीं हो सकने से वह मनुष्य सेवा का वास्तविक लाभ उठाने से पीछे रह जाता है। कहने का भाव सेवा मन-आत्मा की गहराइयों से ही की जाए।

सच्ची सेवा का महातम दर्शाते हुए गुरु जी फरमान करते हैं कि सेवक मनवांछित फल पाता है। उसके भीतर से अहंकार दूर हो जाता है भाव नम्रता का गुण संचारित होता है। सच्चे सतिगुरु की सच्ची सेवा कमाने से मनुष्य-मात्र सांसारिक बंधनों से छूट जाता है और मनुष्य-जीवन का परम उद्देश्य परमात्मा का मिलाप प्राप्त करता है। वह परमात्मा के सच्चे नाम के साथ समाया रहता है अथवा उसको सांसारिक बाधाएं परेशान नहीं कर सकतीं।

इस संसार में परमात्मा का नाम दुर्लभ वस्तु है अर्थात् मनुष्य-जन्म प्राप्त करने के उपरांत मनुष्य की वृत्ति साधारणत: संसार की माया के अनावश्यक प्रभाव तले आ जाती है और वह नाम-सिमरन के मूल उद्देश्य को ही भुला बैठता है। जिस भाग्यवान मनुष्य पर गुरु की दृष्टि पड़ जाती है, जो अपना मुख सच्चे गुरु की ओर कर लेता है वह नाम-सिमरन के वास्तविक जीवन-उद्देश्य को कदापि नहीं भूलता। सतिगुरु जी ऐसे गुरमुखजनों की स्तुति करते हुए कथन करते हैं कि जो अपने गुरु की सेवा करते हैं, जो सच्ची सेवा अर्जित करते हैं मैं उन पर बलिहार जाता हूं।





तीसरे पातशाह का अद्वितीय जीवन तथा व्यक्तित्व बने हम सबके लिए प्रेरणास्रोत!

दसों सिक्ख साहिबान अपने आप में संसार के अद्वितीय व्यक्तित्व हुए हैं। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी महाराज का जीवन तथा व्यक्तित्व उनके समय से ही लेखकों, कवियों एवं भट्ट साहिबान आदि के चिंतन, विश्लेषण और गायन का विषय रहा है। इस प्रकार अब तक एक बहुत बड़ी संख्या में गुरु जी के जीवन के विभिन्न घटनाक्रम कमलबद्ध हुए मिलते हैं और यह क्रम आज भी निरंतर जारी है। गुरु साहिब के जीवन तथा उनके व्यक्तित्व, उनके विस्मादी कृत्यों तथा मानवता पर उनके महान परोपकारों की पूरी गणना तो असंभव है फिर भी लेखक और कवि-जन इस क्षेत्र में सदैव की भांति आज भी क्रियाशील हैं और अपना कर्त्तव्य गुरु जी के व्यक्तित्व का गुण-गायन करके पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। इसी संदर्भ में वर्तमान लेखकों को विशेष आग्रह करके गुरु जी के जीवन और व्यक्तित्व पर खोज करके 'गुरमति ज्ञान' के पाठकों की जानकारी बढ़ाने का यह अदना-सा प्रयास 'गुरमति ज्ञान' के विशेषांकों की श्रृंखला रूप में किया गया है। इस गंभीर प्रयास के बावजूद हम यह दावा करने की स्थिति में नहीं हैं कि हम उपलब्ध सभी स्रोतों को अपने पाठकों के सामने ला सके हैं। गुरु जी के जीवन तथा कृत्यों का दोहराव इस विशेषांक के विभिन्न आलेखों में अवश्य हुआ है फिर भी प्रत्येक लेखक का मौलिक दृष्टिकोण होने के कारण उनकी प्रस्तुति में कुछ न कुछ नयापन भी है।

भट्ट भल ने तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी संबंधी जो निर्मल वचन उच्चारण किये हैं वे हम सभी के लिए विशेष रूप से जानने, मानने और विचारने के लिए बहुत ही मूल्यवान हैं। यहां तक कथन किया गया है कि कोई व्यक्ति ध्यान अथवा यंत्र द्वारा बादलों की बूंदों की तो शायद गणना कर सके, धरती पर उपजने वाली वनस्पति का तो हिसाब लगा ले, कोई सूरज की किरणों को तो शायद गिन ले, विशाल समुद्र का तो माप कर ले, शायद कोई गंगा में उठने वाली लहरों की तो गिनती कर ले परंतु श्री गुरु अमरदास जी महाराज के गुण कोई किसी प्रकार से भी नहीं गिन सकता। भट्ट भल जी ने गुरु पातशाह जी को संबोधित करके बिलकुल सही कहा कि *"तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥"*

श्री गुरु अमरदास जी का गुरगद्दी पर विराजमान होने से पहले का जीवन मुख्यत: एक सच्चे आध्यात्मिक मार्ग को ढूंढने में लगा। आप एक धार्मिक वृत्ति के धारक थे तथा ईमानदारी से किरत-कार करते हुए अपनी गृहस्थी को चला रहे थे। आपने तीर्थ-यात्राओं का सिलसिला कई वर्षों से चलाया हुआ था, परंतु मन-आत्मा अभी इच्छित तृप्ति की अनुभूति से काफी दूर थी। फिर आप गुरबाणी सुनकर गुरु-घर की ओर खिंचे चले आए और प्रथम भेंट ही में दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी महाराज के सच्चे शिष्य बन गए। सभी आशंकाएं मिट गईं लेकिन सच्ची सेवा का क्रम तो अभी शुरू ही हुआ था। इस समर्पण में आपने अपनी बड़ी आयु को न तो

बाधा माना और न ही रिश्तेदारी को आड़े आने दिया। रिश्तेदारी भी समधी होने की थी। उस युग का ख्याल करें तो ऐसी सामाजिक तथा भाईचारक सीमाओं को पार करना बहुत ही कठिन घाटी थी जो आपने पार की और अधेड़ आयु में शुरू हुआ था गुरु तथा गुरु-घर की सेवा और गुरु-समर्पण का सिलसिला। गुरु-सेवा के न जाने वास्तविक रूप में कितने आयाम होंगे! बहुत रात रहते खडूर साहिब से चलकर गोइंदवाल के पास स्थित ब्यास दरिया से गागर में जल भर कर लाना और अपने प्रिय गुरदेव जी को अमृत वेले स्नान कराना तो उस सेवा का एक हिस्सा था। सारी दिनचर्या ही गुरु-घर की सेवा को समर्पित थी। जल की गागर उठाये हुए अंधेरी रात में खूंटी से ठोकर खाकर गिरने पर भी गागर में से अमूल्य जल को न गिरने देना अत्यंत विस्मादी कृत्य है सच्चे सेवक सिक्ख बाबा अमरदास जी का। यह कुदरत अथवा करता पुरख वाहिगुरु की अपनी लीला ही थी। इसी अडिग समर्पण-भाव को देखते हुए ही आपको श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने जीते-जी ही दैवी गुरगद्दी पर स्थापित कर दिया था, जिस प्रकार करतारपुर में गुरु नानक पातशाह ने भाई लहिणा जी के गुरु-समर्पण और गुरु-सेवा को शिखरतम बिंदु पर पहुंची जगत को दर्शाकर उनको श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में गुरगद्दी पर अपने जीते-जी स्थापित किया था। यह भी उल्लेखनीय है कि गुरु नानक पातशाह स्वयं चलकर श्री गुरु अंगद देव जी को खडूर साहिब आकर मिलते रहे और श्री गुरु अंगद देव जी भी श्री गुरु अमरदास जी को खडूर साहिब से गोइंदवाल जाकर स्वयं ही मिलते रहे। श्री गुरु अमरदास जी महाराज का 'गुरु' के रूप में कार्यकाल, सिक्ख धर्म के उसूलों को संसार में प्रभावशाली रूप में फैलाने की दृष्टि से बहुत ही विस्मादी तथा ऐतिहासिक रूप में महत्वपूर्ण समय है। गुरु-रूप में जो पावन बाणी आपने उच्चारण की वह श्री गुरु ग्रंथ साहिब में १७ रागों में अंकित मिलती है। इस पावन बाणी का एक-एक निर्मल वचन अति सरल और अत्यंत भावभीना है।

इस विशेषांक में गुरु जी के गुरु-काल के कृत्यों में से कुछ चुनिंदा कृत्यों और उनकी अथाह सागर रूप पावन बाणी में से कुछ बाणी को संक्षिप्त रूप में पाठकों के सम्मुख किया जा रहा है। गुरु जी का सच्चे सिक्ख सेवक के रूप में समय भी हमारे माननीय लेखकों ने अपनी गुरु-बख्शी क्षमता के अनुरूप वर्णन करने का प्रयास किया है। 'सेवा' सिक्ख धर्म के उदय से पूर्व भी अपना अस्तित्व अवश्य रखती थी परंतु इसका बेहद विस्मादी रूप सिक्ख गुरु साहिबान ने ही स्वयं अमल तथा व्यवहार द्वारा कमाकर इस संसार के सामने रखा। गुरु साहिबान द्वारा दर्शायी मानवता की सच्ची निष्काम 'सेवा' की आज भी मानवता को बहुत आवश्यकता है। यदि हम सब श्री गुरु अमरदास जी के महान अद्वित्य व्यक्तित्व से, उनके सिक्ख सेवक के रूप में दर्शाये सेवा-कार्यों को सामने रखते हुए स्वयं को मानवता की सेवा हेतु समर्पित कर सकें तो यह अमूल्य मनुष्य-जन्म को सफल करने की दिशा में एक सशक्त कदम हो सकता है। अत: आओ! गुरु-समर्पण, गुरु-घर की सेवा और मानवता की सेवा की मंजिलें तय करते हुए श्री गुरु अमरदास जी के अद्वितीय जीवन व व्यक्तित्व से रचनात्मक प्रेरणा लें। श्री गुरु अमरदास जी का सारा जीवन हमारे सामने एक रौशन-मीनार है, उनकी पावन बाणी हमारे लिए अपने अनेकों भ्रम, अपनी भ्रांतियां दूर करने में पूर्णत: सक्षम है। आवश्यकता है इस अद्वितीय जीवन, इस लासानी व्यक्तित्व व इस निर्मल पावन बाणी को अपने सामने प्रेरणास्रोत के रूप में रखने की! 

ज्ञानी गिआन सिंघ द्वारा रचित "तवारीख गुरू खालसा" में श्री गुरु अमरदास जी का जीवन एवं विचारधारा

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

जान-पहचान : श्री गुरु अमरदास जी का जीवन उन लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है जो यह कहते हैं कि आयु के साथ-साथ संस्कार ऐसे पक जाते हैं कि उन्हें बदला नहीं जा सकता। गुरु साहिब ने उस प्राचीन मिथ को भी तोड़ा है जिसमें मनुष्य-जीवन को १०० वर्ष का मानकर कार्य करने के लिए कहा गया है। इस मिथ को तोड़ते हुए गुरु जी ने यह साबित करने का यत्न किया है कि आयु के किसी भी पड़ाव में मनुष्य प्रभु-भक्ति की तरफ मुड़ सकता है और इस कार्य के लिए उसे समाज छोड़कर जंगलों एवं पहाड़ों में एकांतवास के लिए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। श्री गुरु अमरदास जी का जीवन सेवा, संयम, नम्रता एवं प्रेम का प्रतीक है। उनके जीवन के बहुत-से पहलुओं को विद्वानों ने उजागर करने का यत्न किया है, मगर यहां ज्ञानी गिआन सिंघ की दृष्टि में गुरु साहिब के जीवन के कुछ प्रमुख पहलुओं को जानने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रारंभिक जीवन : बाबा अमरदास जी का जन्म संवत् १५३६ बिक्रमी में जिला अमृतसर के गांव बासरके में पिता श्री तेजभान तथा माता लक्खो जी के घर हुआ। सणखत्रे गांव के श्री देवीचंद की सपुत्री राम कौर (मनसा देवी) के साथ विवाह के बाद उनके घर दो सपुत्रों--बाबा मोहन व बाबा मोहरी तथा दो सपुत्रियों--बीबी भानी व बीबी निधानी पैदा हुए। बचपन से ही वे शील स्वभाव के थे और भक्ति-भावना में विश्वास रखते थे। संतों की संगत करने के साथ-साथ वे किरत-कमाई करके जीवन-यापन करते थे। साधु-स्वभाव होने के कारण मन की शांति को कायम रखने हेतु लगातार यत्न करते थे, इसी लिए प्रत्येक वर्ष गंगा-स्नान किया करते थे। गंगा की यात्रा से वापस आते समय एक बार राह में उनकी मुलाकात पंडित दुरगा दत्त से हुई। उसने इनके पैरों में एक पदम-चिन्ह देखकर इनके प्रतापी होने के बारे में भविष्य-वाणी की। जब बाबा अमरदास जी पंडित को चार आने की मिठाई देने लगे तो उसने यह कह कर मिठाई लेने से इंकार कर दिया कि "निगुरे के हाथ से मैंने कभी कुछ ग्रहण नहीं किया।" पंडित के इस वाक्य ने उनका जीवन बदल दिया।

उसी दिन से ही वे 'गुरु' की खोज में लग गए और अनेकों साधुओं की संगत की मगर मन शांत न हुआ। मन की शांति उनको घर से ही प्राप्त हुई। श्री गुरु अंगद देव जी की सपुत्री बीबी अमरो जी का विवाह बाबा अमरदास जी के भतीजे के साथ हुआ था। घर में वो गुरु नानक साहिब की बाणी बड़े प्रेम से पढ़ा करती थीं। एक दिन उनके मुख से गुरु जी का शबद बाबा अमरदास जी ने सुना तो उनका मन शबद में ही जुड़ गया, जिससे उनका मन शांति एवं आनंद की भावना में बह निकला। बाबा अमरदास जी ने बीबी अमरो जी को गुरु अंगद साहिब के दर्शन कराने के लिए कहा जिनके

*सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९८७२०-७४३२२

पास गुरु नानक साहिब सहित सारी गुरबाणी का संग्रह था तथा जो गुरु नानक साहिब की गुरगद्दी पर वर्तमान दूसरे 'गुरु' के रूप में विराजमान थे।

गुरु-सेवा : श्री (गुरु) अमरदास जी का सिक्खी-सेवा वाला जीवन उस समय आरंभ होता है जब गुरु अंगद साहिब की सपुत्री बीबी अमरो उन्हें लेकर खडूर साहिब आई। गुरु अंगद साहिब के दर्शन करके उनका मन शांत हो गया। रिश्ते में गुरु अंगद साहिब बाबा अमरदास जी के समधी लगते थे और उन्होंने पहली बार जब श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन किए तो उस समय गुरु अंगद साहिब जी की आयु लगभग ३६ वर्ष थी और बाबा अमरदास जी की आयु लगभग ६२ वर्ष थी। बाबा अमरदास जी ने यहीं पर अपना निवास कर लिया और तत्कालीन समाज के रिवाज के अनुसार रिश्तेदारी तथा आयु में बड़े होने की परवाह किए बिना वे श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा में लग गए। रोजाना गुरु जी को स्नान कराने की सेवा उन्होंने अपने जिम्मे ले ली और निर्विघ्न सहित इस कार्य में जुट गए। वे पहर रात रहते ब्यास दरिया पर जाते, पहले खुद स्नान करते, फिर गुरु जी के लिए गागर भर कर लाते। गुरु जी को स्नान करवाकर वे सारा दिन संगत की सेवा में लगे रहते।

गोइंदवाल की स्थापना व नित्तनेम : खडूर साहिब में श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शनार्थ संगत निरंतर आती रहती थी। वहीं पर गोंदा नाम का एक मरवाहा खत्री भी गुरु-दर्शन को आया। उसने गुरु जी को अपने पूर्वजों के टीले पर एक गांव बसाने की विनती की। गुरु जी ने बाबा अमरदास जी को वहां भेज कर एक गांव आबाद करवाया था। बाबा अमरदास जी ने गांव बासरके से अपने परिवार तथा अन्य लोगों को बुलाकर वहां गांव बसा दिया। जुलाही वाली घटना के बाद जब गुरु अंगद साहिब ने बाबा अमरदास जी को गुरिआई सौंपी तो साथ ही नए बसाए गांव 'गोइंदवाल' में निवास करने के लिए कह दिया था।

श्री गुरु अमरदास जी के समय गोइंदवाल सिक्खी का केंद्र बना। लेखक बताता है कि श्री गुरु अमरदास जी प्रतिदिन अमृत वेले डेढ़ पहर रात रहते उठते, स्नान आदि करके पारब्रह्म परमेश्वर के ध्यान में जुड़ जाते। भाई सादू-बादू कीर्तन करते और गुरु जी संगत को दर्शन-उपदेश देकर निहाल करते।

गुरु जी के गोइंदवाल साहिब निवास करने के कारण संगत वहां हाजरी भरने लगी और बहुत-से सिक्खों ने गुरु-हजूरी में जीवन बिताने हेतु वहीं निवास करने का मन बना लिया था। इसके अलावा गुरु-घर के सेवादारों एवं श्रद्धालुओं में निरंतर बढ़ोत्तरी होती जा रही थी। संगत के लिए लंगर आदि हेतु बहुत सारे ईंधन तथा अन्य सामान की जरूरत थी। गुरु जी ने अपने भतीजे सावन मल को कांगड़ा से लकड़ी लाने का आदेश दिया। गुरु जी के आशीर्वाद का सदका उसने कांगड़ा क्षेत्र में सिक्खी का प्रचार किया, जिससे प्रभावित होकर वहां का राजा तथा बहुत-सी प्रजा गुरु जी की श्रद्धालु हो गई। उसने गुरु जी की इच्छा के अनुसार भारी मात्रा में ईंधन गोइंदवाल साहिब भेजा। इस प्रकार गोइंदवाल साहिब एक बड़े नगर के रूप में विकसित होने लगा।

गुरु जी की शिक्षाएं : श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा प्रचारित सिद्धांतों को प्रसारित करने का कार्य आरंभ किया हुआ था। गुरु-घर

आने वाले हर स्त्री-पुरुष को बराबरी का दर्जा देने तथा सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की शिक्षा प्रदान की जाती थी। स्त्रियों के उत्थान के लिए विशेष यत्न किए जा रहे थे। *"सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान"* की शिक्षा को और अधिक दृढ़ कराने के लिए पर्दे व सती की रस्म बंद करने तथा विधवा विवाह को उत्साहित करने की प्रेरणा दी जाती थी।

श्री गुरु अमरदास जी ने समाज में से जात-पात तथा ऊंच-नीच के भेदभाव को जड़ से उखाड़ने के लिए विशेष यत्न किए जिनका उदाहरण दुनिया में अन्य कहीं भी देखने को नहीं मिलता। श्री गुरु नानक देव जी ने संगत तथा पंगत की प्रथा आरंभ की। श्री गुरु अमरदास जी ने इस प्रथा को और भी मजबूती से आगे चलाने हेतु समूह संगत को यह आदेश कर दिया कि गुरु-दर्शन को आने से पहले प्रत्येक व्यक्ति पंगत में बैठकर लंगर छके। *"पहिले पंगत पाछै संगत"* की प्रथा उनके समय ही स्थापित हुई थी। उनके समय दृढ़ कराई गई लंगर की प्रथा ने समाज-सुधार के लिए नए कीर्तिमान स्थापित किए। जात-पात तथा ऊंच-नीच के भेदभाव की भावना को खत्म करने में इस प्रथा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। श्री गुरु अमरदास जी की अन्य शिक्षाओं का जिक्र करता हुआ लेखक ज्ञानी गिआन सिंघ "तवारीख गुरू खालसा" में लिखता है कि गुरु साहिब दर्शन को आने वाली संगत को पंगत के बाद सतसंगति की प्रेरणा करते थे। सतसंगति से मनुष्य के मन में से बादी वृत्तियों का नाश होता है और मनुष्य-मन में शुभ गुणों का संचार हो जाता है।

'नम्रता को सिक्खी की जड़ माना गया है।' श्री गुरु अमरदास जी ने इस शिक्षा का केवल उपदेश ही नहीं दिया बल्कि इसे अपने जीवन के माध्यम से प्रकट भी किया है। श्री गुरु अंगद देव जी का पुत्र दातू एक बार गोइंदवाल आया। वो गुरगद्दी छिन जाने के कारण गुरु जी के साथ ईर्ष्या करता था। उसने गुरु-पुत्र होने के अहंकार में गुरु जी को लात मार दी। वृद्धावस्था होने के कारण वे आगे की ओर गिर पड़े, मगर जल्दी ही उन्होंने खुद को संभाला और दातू के पैर दबाने लगे तथा कहा, "भाई! ये हमारे सतिगुरु के सपुत्र हैं। इनके बिना हमें और कौन ताड़े (डांटना, भांपना, जानना)?" इस घटना से संगत में गुरु जी का सम्मान और भी बढ़ गया लेकिन दातू के प्रति गुरु-सपुत्र होने के कारण पैदा हुआ सम्मान खत्म हो गया।

लेखक बताता है कि एक बार भाई किदारी ने गुरु जी को विनती की कि "योगी-सन्यासी कहते हैं कि घर-बार, पुत्र-पत्नी को छोड़कर संत-पहरावा धारण करना, देश-प्रदेश निकल जाना तथा जप-तप करना, इसके बिना जीव की कल्याण नहीं होती। वैरागी कहते हैं कि तुलसी की कंठी, माला, तिलक, जनेऊ रखो, प्रितमां की पूजा करो, चारों धाम तीर्थ परसो, द्वारिका छापे लगवाओ तो स्वर्ग जाओगे। कोई कहता है कि मांग कर खाना, एकांत रहना यही मुक्ति की राह है। हम आपके सेवक हैं। जो कुछ हुक्म करो वही करें, क्योंकि हम अनजान हैं। हम नहीं जानते कि कौन-सा रास्ता अच्छा है। जैसे माता-पिता पुत्र को सुखी रखने के लिए अच्छी राह पर डालते हैं उसी प्रकार आप सतिगुरु हो, हमें विश्वास है कि आप हमें प्रगति और मुक्ति के आसान राह पर चलाओगे।" यह प्रश्न सुन कर गुरु साहिब बहुत प्रसन्न हुए और

बोले, "भाई सिक्खो! घर त्यागने से भक्ति नहीं मिलती, किरत करने से प्राप्त होती है। साधु होकर भी गृहस्थियों के घर से भिक्षा लेनी पड़ती है। गृहस्थी तब छोड़नी चाहिए यदि गृहस्थी के द्वार न जाना पड़े। गृहस्थ आश्रम का धर्म पालने जैसा अन्य कोई आश्रम कल्याणकारी नहीं। घर में रहो, किरत करके छको, मेहमानों को छकाओ, सतसंग व भक्ति करो। यही सब करने पर तुम्हारा लोक तथा परलोक सुधरेगा।"

जात-पात भारतीय समाज को घुन की तरह खा रही है। यह समाज में भेदभाव पैदा कर लोगों को सदियों तक लड़ाने का कार्य करती है। श्री गुरु अमरदास जी ने समाज को जात-पात के बंधन से मुक्त करने के लिए 'संगत' के साथ-साथ 'पंगत' की प्रथा को मजबूती प्रदान की ताकि जाति का अभिमान करके संगत से अलग होकर बैठने वाले व्यक्ति का यदि दूसरों के साथ लंगर (भोजन) सांझा हो जाए तो उसके मन में से ऊंच-नीच की भावना दूर हो सकती है और वो गुरमति को अच्छी तरह से मन में दृढ़ कर सकता है। एक बार प्रिथीमल तथा तुलसा खत्री बड़े अहंकारी दौलतमंद गुरु जी के पास आए और नमस्कार न की, बोले, "आपकी-हमारी जाति एक ही है।" गुरु जी बोले, "संतों की कोई जात-पात नहीं होती, देह पंच तत्व की सबकी है, जीव परमेश्वर की जाति है, परलोक में करनी (कर्म) प्रवान होती है, जाति-देह वहां नहीं जाती।" बाउली के निर्माण ने भी जहां पानी की किल्लत को दूर किया वहां सब धर्मों एवं जातियों द्वारा इसके सांझे रूप से इस्तेमाल किए जाने से जात-पात की बुराई को खत्म करने में अहम भूमिका निभाई। इसके अलावा गुरु साहिब ने गुरमति के प्रचार व प्रसार हेतु मंजी-प्रथा (प्रचार-केंद्र) की स्थापना की जिसमें मंजीदार (प्रचारक) की नियुक्ति गुणात्मक स्तर पर आधारित की गई।

श्री गुरु अमरदास जी संगत को सेवा, संयम तथा सिमरन का उपदेश करते थे। बहुत-से साधु गुरु जी के दर्शन को आते और उनमें से कइयों का तप-संयम एवं शुद्धता देखकर संगत बहुत प्रभावित होती। एक बार माईदास नामक आचारी वैष्णो साधु गुरु जी के दर्शनार्थ गोइंदवाल आया तो संगत ने पहले लंगर छककर फिर गुरु-दर्शन को जाने के लिए कहा। वैष्णो ने कहा कि वो अपना अलग चौका (रसोई) लगाकर भोजन तैयार करता है। गुरु जी के आदेशानुसार उसे लंगर में से रसद दे दी गई, मगर जब वो लंगर तैयार करने लगा तो उसे चौका लगाने के लिए कोई 'शुद्ध' जगह न मिली। उसने दूर दरिया किनारे लंगर तैयार किया और फिर गुरु जी के दर्शन किए। गुरु जी ने समझाया कि "शरीर बाहर से देखने को बहुत सुंदर लगता है लेकिन यह अंदर से मैला-कुचैला है। जितना मर्जी बढ़िया व स्वादिष्ट भोजन इसमें डालो, अंदर जाकर मल-मूत्र बन जाता है। भोजन तो प्राण-रक्षा के लिए है लेकिन मन की शुद्धता परमात्मा की भक्ति के बिना नहीं होती।" माईदास अपने साथी केशो गोपाल पंडित सहित गुरु जी का सिक्ख बना और झूठी शुद्धता को छोड़कर गुरु-घर सेवा करने लगा। यही केशो गोपाल गुरु-आशयानुसार धर्म-ग्रंथों की कथा दृढ़ कराने लगा।

श्री गुरु अमरदास जी के चरण-स्पर्श प्राप्त गोइंदवाल साहिब तथा उसके इर्द-गिर्द उनकी याद में बहुत-सी यादगारें निर्मित हुई हैं। यहीं पर गुरु जी ज्योति-जोत समाए थे।



श्री कन्हैया लाल रचित "तारीख-ए-पंजाब" के संदर्भ में श्री गुरु अमरदास जी

*-डॉ. जगजीत कौर**

सिक्ख गुरु परंपरा में तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी हुए हैं। उनके सम्बंध में भाई गुरदास जी लिखते हैं :

लहणे पाई नानकों देणी अमरदासि घरि आई।
गुरु बैठा अमरु सरूप होइ गुरमुखि पाई दादि इलाही। . . .
दाति जोति खसमै वडिआई ॥ (वार १:४६)

श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी में अपनी ज्योति प्रतिष्ठित करके सर्व संसार के सामने उस अद्वितीय महापुरुष के दिव्य ज्ञान व आध्यात्मिक शक्ति को प्रकट कर दिया। श्री गुरु अमरदास जी दिव्य ज्ञान के पुंज थे, इसी लिए "गुर बिलास पातशाही दसवीं" के रचयिता भाई कुइर सिंघ ने उन्हें "ज्ञान-रूपा" कहा है।

यकीनन वे ज्ञान-पुंज थे, जिसका प्रमाण है कि ८४ साल की अवस्था को प्राप्त एक महापुरुष १७ रागों में अत्यंत उच्च कोटि की बाणी की रचना कर रहे हैं। संसार के इतिहास में यह एक अनोखी मिसाल है। ७३ वर्ष की आयु के वृद्ध महापुरुष आध्यात्मिक जगत में उजागर हो रहे हैं और श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी के पश्चात बाणी-रचना की दृष्टि से तीसरे महापुरुष हैं जिन्होंने सर्वाधिक उच्च आध्यात्मिक गुण ही नहीं सरसता, मधुरता एवं भाव-गांभीर्य की दृष्टि से भी अपूर्व बाणी की रचना की है। यह एक पक्ष तो उनके बौद्धिक वैभव का है, इसके अतिरिक्त उन्हें गुरु-पद की प्रतिष्ठा एक अनन्य सेवक, निर्भय एवं नि:स्वार्थ, निरीह, विनीत, विनम्र गुरु-सेवक परोपकारी, संतोषी और एक उद्यमी तथा उत्साही धर्म-प्रचारक होने के कारण प्राप्त हुई।

ऐसे निराश्रयों के आश्रय, दुर्बल दीन-दुखियों के बल गुरदेव जी का जीवन-चरित्र अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से किया है, परंतु हम अपना विचार श्री कन्हैया लाल रचित "तारीख-ए-पंजाब" पर केंद्रित कर रहे हैं।

यह ग्रंथ मूल रूप से फारसी में है परंतु पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला ने इसे पंजाबी रूप में छापा है। इसका पंजाबी में अनुवाद स. जीत सिंघ सीतल ने किया है। दरअसल लेखक ग्रंथ के आरंभ में अपने विषय में लिखते हुए बताता है कि वह स्वर्गीय लाला हरीनारायण कायस्थ माथुर का पुत्र था। उसका पिता जलेसर से आकर लाहौर में बस गया था। लेखक को पंजाब के अंग्रेज लेफ्टीनेंट गवर्नर सर हेनरी डेविस ने कई काम सौंप रखे थे, किंतु उसे लिखने का शौक था और काम के बावजूद भी वह समय निकाल कर लिखता रहता था। इस पुस्तक के लिखने तक उसके छ: ग्रंथ पहले प्रकाशित हो चुके थे जो ज्यादातर नजमों में थे। तब उसने महाराजा रणजीत सिंघ का हाल नजम में तैयार किया, परंतु वह फारसी में होने के कारण आम लोगों के कम काम का था। तब उसने इसे उर्दू वारतक (गद्य) में बदल दिया जिसका पंजाबी में अनुवाद "तारीख-ए-पंजाब"

*1801-C, Mission Compound, Near Saint Mary's Academy, Saharanpur-247001 (U.P.), Mob. : 92197-87756

नाम से प्रकाशित किया गया। लेखक ने इसे १८७२ में लिखना शुरू किया और सन् १८७५ में पूरा किया। पंजाबी यूनीवर्सिटी ने इसका प्रथम प्रकाशन जनवरी १९६८ में किया है।

सात भागों में इस ग्रंथ के पहले भाग में श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक का वृत्तांत है। तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी के सम्बंध में विवरण प्रस्तुत करते हुए लेखक लिखता है, "यह महान पुरुष अर्थात् तीसरे पातशाह गांव बासरका तअलका पट्टी परगना अमृतसर सूर्यवंशी खानदान में लाला तेजू राय के घर ९ वैशाख, संवत् १५३६ को सुदी चौदह पहर रात रहे जन्मे। जब बाबा अमरदास जी बालिग हुए तो प्रतिवर्ष हरिद्वार जाते और गंगा-स्नान करते। एक बार रास्ते में जब आप सो रहे थे तो एक ब्राह्मण ने आपके चरणों पर पदम का निशान देखा तो बोला, आप दीन के बादशाह होंगे और दुनी आपकी मुरीद होगी। इसी तरह उनकी आयु बढ़ती गई।"

श्री गुरु अंगद देव जी की सुभागी सुपुत्री बीबी अमरो जी थे और वे बासरके गांव में ही तेजू राय के घर ब्याही थीं। वे बीबी अपने पिता द्वारा सिखाए गए दिव्य बाणी के शबद पढ़ती थीं। एक दिन उन शबदों की आवाज बाबा अमरदास जी के कानों में पड़ी तो वे बहुत प्रसन्न हुए और दिल की कशिश से खिंचे वे श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा में आ हाजिर हुए और सेवा करनी शुरू कर दी। बेशक बाबा अमरदास जी रिश्ते में गुरु जी के समधी थे परंतु इस रिश्ते की परवाह न करते हुए गुरु का सिक्ख बनने की इच्छा जाहिर की। श्री गुरु अंगद देव जी ने उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया, हालांकि दिल ही दिल वे जान गए थे कि यही उनके उत्तराधिकारी हैं। श्री गुरु अमरदास जी ने सेवकों जैसी मर्यादा अपनाई और लंगर की सेवा अपने जिम्मे ले ली। यद्यपि उनकी आयु अधिक हो चुकी थी और वृद्ध अवस्था के कारण शरीर में कमजोरी भी आ गई थी, परंतु उन्होंने जवानों जैसे उत्साह से सेवा के लिए कमरकस्सा कर लिया और दिन-रात सेवा करने लगे। श्री गुरु अंगद देव जी उनकी सेवा से बहुत प्रसन्न हुए।

एक प्रमुख सेवा जो बाबा अमरदास जी ने अपने जिम्मे ली वो थी श्री गुरु अंगद देव जी को प्रतिदिन स्नान करवाना। तब दरिया ब्यास खडूर से तीन मील की दूरी पर था। बाबा अमरदास जी रोजाना रात्रि के पिछले प्रहर दरिया पर जाते, पानी की गागर भर कर लाते और श्री गुरु अंगद देव जी को स्नान करवाते। एक रात जब वे पानी की गागर लेकर खडूर साहिब की ओर आ रहे थे तो अक्समात उस समय आकाश पर घनघोर बादल छा गए, अंधेरा छा गया और वर्षा होने लगी। अंधेरे के कारण बाबा अमरदास जी के पैर पास ही गाढ़ी गई जुलाहे की खड्डी में पड़ गए और गिर गए। जुलाहा घर के भीतर था। खड़का सुनकर उसने जुलाही से पूछा, "यह आवाज कैसी है?" जुलाही बोली, "लगता है कोई फिसल कर गिरा है . . . वही होगा 'अमरू निथावां', जिसका न घर है न ठिकाना, जो इसी समय रोज जल की गागर भर कर लाता है।"

श्री गुरु अंगद देव जी प्रात: जब दरबार में सिंघासन पर विराजमान हुए तो अंतरयामी गुरु जी ने उस जुलाही और जुलाहे को बुलवा भेजा, हालांकि बाबा अमरदास जी बिलकुल शांत रहे और इस घटना का जिक्र किसी से नहीं किया। गुरु जी ने जुलाहे से पूछा कि रात के

पिछले प्रहर जो घटना घटी थी उसका ठीक-ठाक सत्य वर्णन करो। जुलाही ने कबूल किया कि उसके मुंह से सहज स्वाभाविक ही 'अमरू निथावां' शब्द निकल गए थे।

गुरु जी के नेत्र सजल हो उठे। उन्होंने बाबा अमरदास जी को बुलवा कर अपने गले से लगा लिया और ऊंचे स्वर में एकत्रित समूह संगत में घोषणा की कि "अमरू निथावां नहीं है बल्कि ये तो निथावों की थांव, बेघरों का घर, बेपनाहों की पनाह, गरीब निवाज, करण-कारण समरथ, नानकशाही पंथ के तीसरे गुरु हैं।" जुलाहे को रहने के लिए दूसरा घर दिया और जुलाहे की खड्डी को पवित्र स्थान घोषित किया और हुक्म किया कि खड्डी के निकट डेरा बनाया जाए। इसके पश्चात बाबा अमरदास जी को स्नान करवा नए सुंदर वस्त्र पहनाए गए। अपने निकट बैठा कर बाबा अमरदास जी को सम्मानित किया गया। भांति-भांति के भोजन तैयार कराए गए और गुरु-घर की मर्यादानुसार बाबा अमरदास जी को समूह संगत की उपस्थिति में 'गुरु' घोषित किया गया और गुरु-पदवी बख्शी गई। संवत् १६०९ में श्री गुरु अंगद देव जी ज्योति-जोत समाए, तब गुरु-पद पर आसीन होकर आपने सिक्ख पंथ के प्रसार-प्रचार के लिए अनेक उपकारपूर्ण कार्य किए। संवत् १६०९ में गोइंदवाल नगर बसाने के साथ यहां ८४ सीढ़ियों वाली 'बाउली' की खुदाई की गई जिसे सम्पूर्ण होने में सात वर्ष लगे। गोइंदवाल आबाद कर और बाउली साहिब के रूप में मेहरों तथा बख्शिशों का स्रोत जारी कर हजारों प्राणियों को परमात्मा के साथ जोड़ा, रूहानी बाणी की रचना की। क्षत्रिय और ब्राह्मण जाति के अनेक प्राणी आपके सेवक बने। आम-खास सभी प्राणियों ने बख्शिशों से अपनी-अपनी झोलियां भरीं।

आपके महान प्रभावी व्यक्तित्व के कारण कामल रूहानी फकीरों की २२ मंजियां (गद्दी) स्थापित हुईं। इन मंजियों का सदका सिक्खी-सेवकी का खूब प्रचार-प्रसार हुआ।

आपका लंगर हर समय चलता रहता था, जिसमें भांति-भांति के भोजन हमेशा पकते रहते थे और प्रत्येक प्राणी को एक जैसा, एक समान भोजन बिना किसी जाति-नस्ल, भेदभाव के मिलता था। चारों वर्णों के लोग यहां एक साथ एक पंगत में बैठ कर भोजन करते थे। जो भी गुरु जी के दर्शन के लिए हाजिर होता उसके लिए यह शर्त थी कि पहले लंगर का परशादा छके, फिर गुरु-दरबार में दर्शन करे। यदि कोई लंगर छकने से परहेज करता तो उसे दर्शन नसीब नहीं होते थे। गुरु जी आप तो बहुत सादा भोजन, जौ का बिना नमक का दलिया खाते थे और प्रभु-भक्ति में लीन रहते थे। श्री गुरु अमरदास जी की निष्काम भक्ति की प्रशंसा सुनकर अकबर बादशाह गुरु जी के दर्शन करने आया। नियमानुसार उसने भी लंगर में से परशादा ग्रहण किया और बिना किसी भिन्न-भेद के इस निष्काम सेवा को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बहुत-सा इलाका भेंट में दिया, जिन पर बाद में श्री अमृतसर, तरनतारन, करतारपुर और हरिगोबिंदपुर के चक्क बांधे गए।

श्री गुरु अमरदास जी के दो पुत्र--बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी तथा दो सपुत्रियां--बीबी भानी जी और बीबी दानी जी थीं। गुरु साहिब की सपुत्री बीबी भानी जी जब ब्याहने योग्य हुई और घर का पुरोहित एक दिन जब उसके नाते सम्बंधी बात कर रहा था तो माता जी ने एक लड़का, जो सामने द्वार पर खड़ा था, उसकी ओर इशारा करते हुए कहा कि इस उम्र का इस जैसा ही लड़का होना

चाहिए। श्री गुरु अमरदास जी ने यह सुनकर फरमाया कि जब इसकी तरफ इशारा हो गया है तो बस यही लड़का ठीक रहेगा। पता चला कि वह लड़का भाई जेठा जी लाहौर के सोढी खत्री घराने का है। नाम 'रामदास' है। उसी समय (गुरु) रामदास जी के साथ यह रिश्ता स्वीकार कर लिया गया। गुरु जी ने पहले से ही अनुभव कर लिया था कि यही उनका उत्तराधिकारी भी होगा। (गुरु) रामदास जी ने भी दिलो-जान से गुरु जी की सेवा की। ये हर समय गुरु-घर की सेवा में व्यस्त रहते। बीबी भानी जी भी पिता की इतनी सेवा करतीं कि उनकी सुयोग्य सेवा अपने आप में एक मिसाल बन गई। इस कठिन सेवा से श्री गुरु अमरदास जी इतने प्रसन्न हुए कि एक दिन कृपा-दृष्टि करते हुए कहा कि "प्यारी सपुत्री! तुम्हारा पिता 'गुरु' है, अब तुम्हारा पति 'गुरु' होगा, तुम्हारा पुत्र भी 'गुरु' होगा और तुम्हारा पोता भी 'गुरु' होगा।" यह आशीर्वाद बीबी भानी जी को दिया गया।

श्री गुरु अमरदास जी ने हुक्मनामे भेज कर सारी सिक्ख संगत एकत्रित की। भांति-भांति के स्वादिष्ट पकवान-मिष्ठान बनाए गए, खुला लंगर रचा गया और तब गुरु जी ने (गुरु) रामदास जी को गुरतागद्दी बख्श दी। श्री गुरु अमरदास जी के दोनों पुत्र बहुत आज्ञाकारी थे। दोनों बहुत खुश हुए। बाबा मोहरी जी ने अपने पिता की हद से बढ़कर ताबेदारी की। गुरु जी ने प्रसन्न होकर उसे सिक्खी बख्शी और उसकी प्रफुल्लता के लिए अरदास की।

महान गुरदेव ९५ वर्ष की आयु भोगकर संवत् १६३१ (सन् १५७४), बाईस वर्ष, पांच महीने, बारह दिन गुरगद्दी पर विराजमान रहकर भादों की पूर्णिमा मंगलवार चार घड़ी रात रहते परम ज्योति में विलीन हो गए।

श्री कन्हैया लाल ने अन्य कुछ ऐसे तथ्यों का भी जिक्र किया है जो मर्यादानुसार भी और अन्य इतिहासकारों के तथ्यों से भी मेल नहीं खाते। कई संवत् तथा बहुत-सी घटनाएं और तिथियां, तर्कसंगत प्रतीत नहीं होतीं। जहां तक श्री गुरु अमरदास जी के गंगा-स्नान और हरिद्वार-यात्रा का वर्णन है यद्यपि डॉ. साहिब सिंघ और अन्य कई इतिहासकारों ने इसका जिक्र किया है कि गुरु-सेवा में आने से पूर्व वे २१ बार हरिद्वार आए थे और सन् १५५३ ई. में गुरगद्दी पर आसीन होने के पश्चात वे पुन: २२वीं वार हरिद्वार आए, जिसका उद्देश्य श्री गुरु रामदास जी ने तुखारी राग में रचित अपनी बाणी के एक पद में किया है :

नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ . .
मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥
अनदिनु भगति बणी खिनु खिनु निमख विखा ॥
हरि हरि भगति बणी प्रभ केरी सभु लोकु वेखणि आइआ ॥
जिन दरसु सतिगुर गुरू कीआ तिन आपि हरि मेलाइआ ॥
तीरथ उदमु सतिगुरू कीआ सभ लोक उधरण अरथा ॥ *(पन्ना ११६)*

श्री गुरु रामदास जी के हुक्मवाक के अनुसार यह बाईसवीं बार की यात्रा *"लोक उधरण अरथा"* थी। जनसमूह को ज्ञान-भक्ति-प्रेम का सच्चा मार्ग दिखा कर उन्हें विकार-सागर से मुक्त करने के उद्देश्य से यह यात्रा की गई थी। चतुर्थ गुरदेव जी यात्रा का मार्ग भी बता रहे हैं कि *"प्रथम आए कुलखेति"* कुरुक्षेत्र में पहला पड़ाव किया। *"दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ"*--दूसरा पड़ाव यमुना के तट पर हुआ जहां हरि-नाम का जाप

(शेष पृष्ठ २३ पर)

डॉ. हरीराम गुप्ता द्वारा लिखित "सिक्ख इतिहास" में प्रस्तुत श्री गुरु अमरदास जी का जीवन-वृत्त

*-प्रो. सुरिंदर कौर**

इतिहास उन घटनाओं का लड़ीवार संग्रह है जिन्होंने अपने समय में अहम प्रभाव उत्पन्न करते हुए भविष्य के लिए नए संदेश दिए, जिन्होंने अपने काल में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए और जो आने वाले समय में मील का पत्थर साबित हुईं। वे ही घटनाएं ऐतिहासिक कहलाईं, फिर चाहे वह युद्ध हो, सत्ता-परिवर्तन हो, कोई आंदोलन हो, किसी महानुभाव का जन्म या मरण हो या नई विचारधारा का जन्म और बिजली की तेजी से उसका प्रसार, गुरु साहिबान द्वारा लिए गए अति महत्वपूर्ण निर्णय, धार्मिक अस्तित्व के लिए संघर्ष और अनगिनत शहादतों से परिपूर्ण "सिक्ख इतिहास" अपने आप में इतिहास की एक विशेष धारा बन जाता है जो हमेशा इतिहासकारों को आकर्षित करता रहा है। सिक्ख इतिहास को चार श्रेणी के लोगों ने कलमबद्ध किया है। सबसे पहले मुसलमान लेखक आते हैं जिन्होंने घटनाओं के समकालीन परिप्रेक्ष्य में, उनके बहुत निकट के काल में उन्हें लिखा है। इसमें अधिकतर या तो सरकारी ओहदेदार थे या स्वतंत्र लेखक जिन्होंने सरकारी दस्तावेजों, सफरनामों और अन्य स्फुट लेखों के रूप में सिक्ख इतिहास की घटनाओं को दर्ज किया। इनका दृष्टिकोण बहुत हद तक अपने शासकों जैसा ही था। दूसरी श्रेणी है अंग्रेज इतिहासकारों की, जिन्होंने कई महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रमाणिक वर्णन लिखा है, साथ ही उन्होंने जनश्रुतियों और किवदंतियों को भी इतिहास के साथ संजोकर रख लिया। तीसरी श्रेणी है भारतीय लेखकों की, जिन्होंने सिक्ख धर्म को केवल भक्ति-आंदोलन के रूप में स्वीकार किया, परंतु "भक्ति में शक्ति" के सैद्धांतिक पक्ष पर ध्यान देने की अपेक्षा उन्होंने केवल साहित्य को ही अपना केंद्र बनाया। चौथी श्रेणी है सिक्ख लेखकों व इतिहासकारों की, जिन्होंने गुरमति साहित्य व इतिहास को पूरी तरह समझकर लिखा, फिर भी कई तथ्यों की प्रमाणिकता पर प्रश्न अब भी अनसुलझे हैं। पहली दोनों श्रेणियों ने एक मत से सिक्ख धर्म को एक पृथक धर्म के रूप में स्वीकार किया, परंतु तीसरी श्रेणी तो अभी तक इसे एक संप्रदाय, समुदाय या मत के नाम से ही संबोधित करती है। उनकी दृष्टि में सिक्ख धर्म का उदय, समय की एक मांग मात्र था। संपूर्ण पृथक अस्तित्व के स्वर वहां मंद पड़ जाते हैं, अतः ऐसी दशा में उन लेखकों द्वारा वर्णित सिक्ख इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है।

इसी श्रेणी में डॉ. गुप्ता का नाम अग्रणी इतिहासकारों में आता है। भारतीय साहित्य में इतिहास लिखने की प्रथा काफी नई है। प्राचीन काल से ऐतिहासिक व मिथिहासिक घटनाओं का संग्रह पद्य-कथा शैली में अवश्य किया जाता था, परंतु वहां प्रमाणिकता से अधिक महत्व कथा के प्रवाह व रोचकता को दिया गया। आधुनिक काल में प्रमाणिकता बहुत महत्वपूर्ण मानी जाने लगी। इसी काल में भारतीय विद्वानों ने

Room No. 2, Banta Singh Chawl, Opp. Manish Park, Jija Mata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093

प्रमाणिक स्रोतों के आधार पर पूर्ण विश्लेषण के साथ गद्य में इतिहास को लिपिबद्ध किया। डॉ. गुप्ता द्वारा लिखित इतिहास इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण व उपयोगी है। आम वाचकों के साथ-साथ शोध-छात्र भी उससे लाभान्वित होते हैं। उनकी पुस्तक "The History of the Sikhs", सिक्ख इतिहास के प्रमुख स्रोतों में एक मानी जाती है। यह पुस्तक अंग्रेजी में लिखी गयी है। यह पुस्तक बहुत विस्तृत है व इसमें गुरु नानक साहिब के आगमन-काल के पूर्व से लेकर आधुनिक काल तक की सभी प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन प्रस्तुत है। यह पुस्तक एक ही प्रति के रूप में भी मिलती है और पांच भिन्न-भिन्न प्रतियों में भी प्राप्त होती है। ये पांच प्रतियां सिक्ख इतिहास के पांच प्रमुख काल-खंडों पर केंद्रित हैं, जिनमें से पहली प्रति सिक्ख इतिहास के आरंभिक काल अर्थात् गुरु-काल का ब्यौरा है। इसमें सन् १४६९ से १५८१ तक का इतिहास अंकित है। डॉ. गुप्ता ने सिक्ख-सिद्धांतों के विकास में गुरु साहिबान के प्रदेय व प्रभाव का बहुत सुंदर अंकन किया है, अतः इस आलेख में उनके द्वारा चित्रित श्री गुरु अमरदास जी के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जा रहा है।

श्री गुरु अमरदास जी का जीवन : डॉ. गुप्ता ने महिमा प्रकाश, पंथ प्रकाश, गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, महान कोश, तारीखे-पंजाब, श्री आदि ग्रंथ साहिब, मैकालिफ, कनिंघम व अन्य लेखकों की कृतियों के आधार पर श्री गुरु अमरदास जी के जीवन को चित्रित किया है। अब आगे का वर्णन उनकी पुस्तक पर आधारित है। डॉ. गुप्ता का ध्यान गुरु साहिब के व्यक्तिगत जीवन से अधिक उनके द्वारा सिक्खी के विकास में दिए गए योगदान पर केंद्रित है, इसलिए उन्होंने श्री गुरु अमरदास जी की जन्म-तिथि, माता-पिता तथा शिक्षा आदि पर बहुत संक्षेप में लिखा है। उन्होंने उस वर्ष से गुरु साहिब का जीवन-ब्यौरा प्रस्तुत किया है जिस वर्ष वे गुरु अंगद साहिब की शरण में आए थे। ६२ वर्ष की आयु में एक साधु द्वारा 'गुरु' के विषय में पूछे जाने पर (गुरु) अमरदास जी को अपने 'निगुरे' होने का दुख हुआ। वे कई वर्षों से हरिद्वार की यात्रा के लिए जा रहे थे, परंतु गुरु की आवश्यकता कभी महसूस नहीं हुई, मगर इस घटना के बाद उनका मन व्याकुल हो उठा और वे आत्मिक शांति के लिए सच्चे 'गुरु' की तलाश में जुट गए। एक दिन बीबी अमरो जी से गुरबाणी का पाठ सुनकर वे भाव-विह्वल हो उठे। हो सकता है कि उन्होंने पहले भी गुरबाणी सुनी हो परंतु मन जिज्ञासु न होने के कारण सार ग्रहण न कर सके। यह घटना सन् १५४१ की है। इसके बाद बीबी अमरो जी के साथ वे गुरदेव जी के पास पहुंचे।

एक सिक्ख के रूप में जीवन : एक सिक्ख के रूप में (गुरु) अमरदास जी ने अपने आप को गुरु अंगद साहिब के चरण-कमलों पर समर्पित कर दिया और ग्यारह वर्षों तक अनथक सेवा की जिसका बहुत विस्तृत वर्णन डॉ. गुप्ता ने किया है, जैसे उनका पहर रात रहते ब्यास नदी से जल लाना, गुरु साहिब जी के स्नान का प्रबंध, दिन भर लंगर आदि की सेवा, संगत में बैठकर कीर्तन श्रवण करना और अंत में सन् १५५२ में गुरु-पदवी पर मनोनीत किया जाना।

गुरु-रूप में भूमिका : श्री गुरु अमरदास जी २२ वर्ष गुरतागद्दी पर आसीन रहे। उन्होंने ब्यास के तट पर 'गोइंदवाल' नगर बसाया और खडूर साहिब से यहां रहने के लिये आ गए। उनके गुरु-काल के कुछ महत्वपूर्ण कार्य

निम्नलिखित हैं:

* श्री गुरु नानक देव जी द्वारा आरंभ की गई लंगर की प्रथा को उन्होंने अनिवार्य बना दिया। यह सिक्ख धर्म को जातिगत भेद सिद्धांत की निषेधता की प्रौढ़ता की ओर एक ठोस कदम था। 'पंगत' की रीति आरंभ कर उन्होंने सभी जाति-धर्म के लोगों को एक करने का सशक्त प्रयास किया। उनके लंगर में दाल, रोटी, खीर आदि परोसे जाते थे। स्वयं गुरु साहिब जी तेल व नमक के व्यापार से अपनी आजीविका चलाते थे। सम्राट अकबर ने भी गोइंदवाल साहिब में पंगत में बैठकर लंगर छका था।

* बीबी भानी जी का विवाह (गुरु) रामदास जी से कराके गुरु साहिब ने विवाह संबंधी रीतियों में क्रांतिकारी कदम उठाया। उन्होंने जात-पात, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब का भेद छोड़कर पारस्परिक गुणों को अधिक महत्व दिया।

* सन् १५५३ में गुरु साहिब सिक्ख संगत को लेकर हरिद्वार व कुरुक्षेत्र की यात्रा पर गए। इससे पहले भी वे एक श्रद्धालु की भांति इक्कीस बार हरिद्वार की यात्रा के लिए गए थे, पर इस बार उनकी यात्रा का लक्ष्य भटकी हुई लुकाई को "सतिनामु" के मार्ग पर लाना था। (इस यात्रा का संपूर्ण वृत्तांत श्री गुरु रामदास जी ने तुखारी राग में प्रस्तुत किया है।)

* श्री गुरु अमरदास जी ने समूची सिक्ख संगत की एकत्रता का महत्व समझते हुए वर्ष में दो बार गोइंदवाल साहिब में जोड़-मेलों का आयोजन किया, जिसका आरंभ सन् १५५४ की वैसाखी से हुआ। ये दो अवसर वैसाखी व दीवाली थे। इन जोड़-मेलों के कारण समूचे पंथ का केंद्रीकरण हुआ व पंथक संप्रेषण के लिए वे अति महत्वपूर्ण सिद्ध हुए।

* पंथक केंद्रीकरण को एक कदम और आगे बढ़ाते हुए गुरु साहिब ने 'मंजी-प्रथा' आरंभ की। सिक्ख पंथ के उदय के पश्चात यह पहला अवसर था जब प्रचार को सुनियोजित रूप से संचालित किया गया था। 'मंजी' का वास्तविक अर्थ किसी एक क्षेत्र में सिक्खों का प्रचार-केंद्र है। 'मंजी' पर मनोनीत व्यक्ति केंद्रीय गुरु-स्थान और सुदूर प्रांतों की संगत के बीच का मध्यस्थ या सेतु था। इस प्रकार की कुल बाईस 'मंजियों' की स्थापना गुरु साहिब ने की। डॉ. गुप्ता ने ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर कुछ जिलों के प्रमुख 'मंजीदारों' के नाम भी दिये हैं जो इस प्रकार हैं :

माझा : (१) माणकचंद, झीवर, वैरोवाल, अमृतसर में, (२) सदाराम, लुहार, बकाला, अमृतसर में, (३) भाई हिंदाल, जंडिआला, अमृतसर में, (४) गंगू शाह, लाहौर में, (५) मत्थो मुरारी (एक समर्पित दंपत्ति), चुनीया, लाहौर में

जलंधर-दोआब : (१) पारो जुलका, जिला जलंधर और होशियारपुर में, (२) महेश धीर, सुलतानपुर लोधी में

कांगड़ा घाटी : (१) सावनमल (गुरु अमरदास जी के भतीजे), हरीपुर गुलेर में, (२) नाम अज्ञान, धर्मशाला में

कश्मीर घाटी : (१) भाई फिरिआ, मीरपुर में

मालवा : (१) भाई खैरा, जिला फिरोजपुर में, (२) माईदास बैरागी, लुधियाना में, (३) माई भागो, गांव वायूं, तहसील खरड़, जिला रोपड़, (४) माई सेवां, गांव गर्दनोह, जिला पटियाला, (५) भाई सच्चन शाह, जिला अंबाला

सिंध : (१) लालू, सिंध के किसी क्षेत्र में।

इतने महत्वपूर्ण पदों पर तीन स्त्रियों की नियुक्ति श्री गुरु अमरदास जी द्वारा उठाया गया

अति क्रांतिकारी कदम था।

* गोइंदवाल साहिब में उस समय हिंदू-मुसलिम की बहुलता थी। वहां सिक्ख अल्पसंख्यक थे, परंतु सिक्खों की उन्नति व समृद्धि से दोनों वर्ग ईर्ष्या करते थे। छुटपुट झड़पों के अतिरिक्त दो-एक बार तो हालात संवेदनशील व विस्फोटक हो गए थे। फिर गुरु साहिब ने सिक्खों से शांति बनाए रखने के लिए कहा। सारा संघर्ष ब्यास नदी के जल को लेकर था। इसके लिए गुरु साहिब ने एक शांतिपूर्ण विकल्प खोज निकाला।

* जल संबंधी समस्या के निवारण के लिए गुरु साहिब ने सन् १५५६ में एक विशाल बाउली (कुआं) की खुदाई आरंभ की जो सन् १५५९ में पूर्ण हुई। इस बाउली में चौरासी सीढ़ियां हैं जिन्हें चौरासी लाख योनियों का प्रतीक माना जाता है। यह जाति-भेद को मिटाने का एक और प्रयास था। जहां भारतीय संस्कृति में "बहता पानी निर्मल" की मान्यता थी और नदियों के घाट जाति के आधार पर बांटे जाते थे, वहीं बाउली सबके लिए एक समान थी।

* सम्राट अकबर ने गोइंदवाल साहिब में पंगत में बैठकर लंगर छका और गुरु साहिब के दर्शन किए। गुरु-घर की इस व्यवहारिक एकता का उसके अंतर्मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

* गुरु साहिब ने गोइंदवाल साहिब में दिन में दोनों समय संगत की एकत्रता, नाम-सिमरन और गुरु-यश गायन का नित्तनेम सुदृढ़ किया।

* उनके पुत्र भाई मोहन जी ने उनकी आज्ञा से बाकी दो गुरु साहिबान की बाणी के साथ श्री गुरु अमरदास जी की बाणी का संग्रह किया। इसे 'भाई मोहन वाली पोथी' कहा जाता है।

* गुरु साहिब ने समाज-सुधार व नारी-उत्थान की दिशा में बड़े महत्वपूर्ण निर्णय लिए। उन्होंने संगत व पंगत में स्त्रियों को बराबरी से बैठने का अधिकार दिया, घूंघट की प्रथा को समाप्त किया और स्त्रियों द्वारा मृत्यु पर सियापा (सामूहिक रुदन) का निषेध किया तथा सती-प्रथा जैसे घृणित कृत्य पर कानूनी प्रतिबंध लगाया। सच्ची 'सती' की व्याख्या उन्होंने गुरबाणी में भी की है।

* डॉ. गुप्ता के शब्दों में सन् १५७४ में श्री गुरु अमरदास जी ने अपने दामाद श्री (गुरु) रामदास जी को गुरतागद्दी सौंप दी और इसके पश्चात गुरगद्दी एक ही परिवार में रही। गुरु साहिब जी गोइंदवाल में ज्योति-जोत समा गए।

विचारधारा : श्री गुरु अमरदास जी ने मानवीय जीवन के सदुपयोग पर बहुत बल दिया है। उन्होंने देह को एक रथ, आत्मा को रथ का स्वामी तथा मन को सारथी बताया है, जहां आत्मा देह रूपी रथ पर सवार होकर अपने चरम लक्ष्य परमात्मा तक पहुंचती है। उन्होंने गुरमुख जीवन को श्रेयस्कर बताया है। सांसारिक रिश्तों की नश्वरता और गुरु की शरण को उन्होंने बहुत महत्व दिया, जैसे:

मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ॥
मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥
(पन्ना ३७)

ईश्वर की प्राप्ति हेतु वाह्याडंबरों के स्थान पर उन्होंने आत्मिक समर्पण व स्मरण को महत्वपूर्ण बताया है :

मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥
नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ ॥ *(पन्ना ५६५)*

उनकी सबसे अधिक प्रचलित बाणी "अनंदु" है जिसके सार को तीन भागों में बांटा जा सकता है :

(१) सबसे पहले भाग में गुरु जी सिक्ख

के जीवन की कठिनाइयों को दूर करते हैं, उन्हें अहंकार, झूठ, तृष्णा आदि से बचाते हैं। सिक्ख को पारिवारिक व सामाजिक जीवन में इनका परित्याग कर सहज जीवन की प्रेरणा देते हैं।

(२) सिक्ख को सत्य के सन्मुख रहते हुए संगत में गुरबाणी का गायन व नाम-सिमरन करना चाहिए।

(३) सिक्ख को गुरु-चरणों पर संपूर्ण समर्पण करना चाहिए, जिससे उसके दुखों का नाश होकर वह गुरमति द्वारा जीवन-मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर सकता है।

श्री गुरु अमरदास जी की सारी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है, जहां १७ रागों में कुल ८७४ शबद हैं।

श्री गुरु अमरदास जी का व्यक्तित्व : डॉ. गुप्ता ने गुरु साहिब के व्यक्तित्व को बहुत ही कुशलता से उभारा है। उन्हें एक सच्चा जिज्ञासु दर्शाते हुए सतिगुरु की प्राप्ति हेतु अनन्य भाव से समर्पण करने वाला शिष्य बताया गया है। ६२ वर्ष की आयु से ७३ वर्ष की आयु तक जहां लोग सेवानिवृत्त होकर विश्राम की सोचते हैं वहीं बाबा अमरदास जी अनथक सेवा करते हैं, ऐसी सेवा जो किसी युवा के लिए भी कठिन हो। इससे उनके कर्मठ और कर्त्तव्यपरायण होने की पुष्टि होती है। गुरु-पदवी प्राप्त होने के पश्चात तो जैसे उनकी चारित्रिक विशेषताओं का वास्तविक स्वरूप सामने आता है, उनकी प्रबल संगठनात्मक शक्ति के दर्शन होते हैं, जहां वे सिक्ख पंथ को एकत्रित करने और रखने हेतु जोड़-मेलों और मंजियों की स्थापना करते हैं। वे अत्यंत दूरदर्शी थे। भविष्य में जल की समस्या और नदियों के घटने वाले जल-स्तर का उन्हें ज्ञान था, तभी उन्होंने बाउली का निर्माण करवाकर समकालीन व भविष्य के लिए एक मिसाल कायम की, साथ ही बाउली के निर्माण द्वारा विभिन्न समुदायों के टकराव को बचाकर उन्होंने अपनी शांतिप्रिय दृष्टि का भी प्रमाण दिया। वे एक निष्पक्ष गुणसाधक थे। एक सम्पन्न परिवार से होने पर भी, गुरु-पदवी पर आसीन होने पर भी उन्होंने अपनी सपुत्री बीबी भानी जी के गुणों के अनुकूल भाई जेठा जी को पाकर उनका हाथ उन्हें सौंप दिया। गुरु नानक साहिब के स्वर्णिम सिद्धांतों का पालन करते हुए पूरी तरह से योग्यता की कसौटी पर खरे उतरने वाले भाई जेठा जी को "गुरु रामदास जी" के रूप में गुरतागद्दी पर मनोनीत किया। वे एक समाज-सुधारक थे व एक निडर व्यक्तित्व के धनी थे। स्त्री जाति की दुर्दशा को मूल से समाप्त करने हेतु उन्होंने बड़ी निडरता से सदियों पुरानी कुप्रथाओं को समाप्त करके उनको बराबरी का अधिकार दिया। समग्र रूप में यदि उनके व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करें तो बहुत कठिन होगा। अतः भट्ट भल जी की ये पंक्तियां ही उन्हें पूर्णतः व्याख्यायित कर सकती हैं :

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥
रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर को कबि जन भल्य उनह जो गावै ॥
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥

(पन्ना १३९६)



डॉ. हरीराम गुप्ता की नज़र में श्री गुरु अमरदास जी

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म ५ मई, सन् १४७९ ई को श्री अमृतसर की दक्षिण-पश्चिमी दिशा में लगभग १३ किलोमीटर की दूरी पर स्थित बासरके गांव के एक भल्ला खत्री परिवार में हुआ था। उनका परिवार सनातनधर्मी विचारधारा में दृढ़ आस्था रखने वाला निरामिष-भोजी था। श्री गुरु अमरदास जी अपनी पत्नी, दो बेटियों तथा दो बेटों के साथ प्राय: हरिद्वार और ज्वालामुखी की यात्रा करते थे। वे सभी धार्मिक परंपराओं और रीति-रिवाजों का दृढ़ता से पालन करते थे। ऐसे मौकों पर वे साधुओं और सन्यासियों की सेवा करते थे।

श्री गुरु अमरदास जी की अवस्था साठ वर्ष से अधिक हो गई थी। एक साधु ने उनसे पूछा "तुम्हारा 'गुरु' कौन है?" उत्तर में उन्होंने कहा कि "मैंने कोई 'गुरु' धारण नहीं किया है।" साधु ने आश्चर्यचकित होकर सुझाव दिया कि वे जल्दी से जल्दी कोई 'गुरु' धारण करें। इस सुझाव से बाबा अमरदास जी सोच में पड़ गए।

उनके घर के समीप ही उनका भाई मानक चंद रहता था। उसकी पुत्र-वधू बीबी अमरो जी द्वितीय सिक्ख गुरु श्री गुरु अंगद देव जी की बेटी थी, जो कि उषा काल में हर रोज दूध बिलोते समय गुरु नानक साहिब की बाणी का पाठ करती थीं। अब बाबा अमरदास जी उसके गुरबाणी-पाठ को ध्यानपूर्वक सुनने लगे। एक बार उन्होंने बीबी अमरो जी से पूछा कि वे प्रतिदिन किसकी पदावलि गाती हैं? उनका उत्तर सुनते ही बाबा अमरदास जी ने गुरु नानक साहिब के शिष्य और बीबी अमरो जी के पूज्य पिता श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने का तुरंत मन बना लिया। यह घटना सन् १५४१ ई की है, जबकि बाबा अमरदास जी ६२ वर्ष की अवस्था के थे।

शिष्यत्व : श्री गुरु अंगद देव जी से पहली मुलाकात में ही बाबा अमरदास जी को यह आभास हुआ कि उन्हें अपना नौबंध मिल गया हो। खडूर (साहिब) नामक स्थान ने उनके मन तथा आत्मा को कील लिया। उस समय बाबा अमरदास जी की आयु ६२ वर्ष थी और श्री गुरु अंगद देव जी की ३७ वर्ष। अपनी बड़ी उम्र और रिश्तेदारी के बढ़प्पन को ताक पर रखकर बाबा अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी के चरण-कमलों के दास बन गए। (Discarding the prestige of relationship and age, Amar Das became a slave to the lotus feet of Angad.) उन्होंने शारीरिक और आध्यात्मिक (साधना) वाली कड़ी जीवन-पद्धति को अपना लिया। श्री गुरु अंगद देव जी सुबह तीन बजे उठकर स्नान करने के पश्चात् ध्यान में लीन हो जाते थे। बाबा अमरदास जी तांबे की गागर खडूर साहिब से ५ किलोमीटर की दूरी पर बहती ब्यास नदी से भरकर गुरु जी के स्नानार्थ लाने लगे। साठ वर्ष से ऊपर की अवस्था वाले बाबा अमरदास जी को चांदनी रात अथवा अंधेरी रात में यह सेवा करने में लगभग तीन घंटे लग जाते थे। एक बार तो अंधेरे में उनका पैर एक जुलाहे के ताने-बाने

९०१, टावर डी-३, सागर दर्शन टावर्स सोसायटी, पाम बीच रोड, सेक्टर-१८, नेरूल (नवी मुंबई)-४००७०६

में फंस गया और उन्हें चोट भी आई। धड़ाम से गिरने वाले महापुरुष पर जुलाहे की पत्नी ने टिप्पणी की : "यह बेचारा अमरू था, कोई चोर नहीं।" (It was poor Amru and no thief.)

बाबा अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी के उपदेश सुनते, शबद-कीर्तन में शामिल होते और उसकी व्यवस्था करते। वे 'लंगर' की सेवा भी लगन से करते तथा भोजन तैयार करने, बर्तन मांजने और संगत को परशादा छकाने में पूरा योगदान देते। निःस्वार्थ सेवा-भक्ति से बाबा अमरदास जी का अहं लुप्त हो गया। उन्हें प्रशंसा की कोई चाह न रही। उनमें धैर्य, सहन-शक्ति, विनम्रता और दानशीलता की भावना उमड़ आई। ग्यारह वर्ष तक गुरदेव एवं संगत की सेवा के फलस्वरूप बाबा अमरदास जी को श्री गुरु अंगद देव जी ने सिक्ख धर्म का तीसरा गुरु मनोनीत कर दिया। (पृष्ठ १२५)

गुरु साहिब का परिवार : श्री गुरु अमरदास जी के दो पुत्र थे, जिनके नाम थे--बाबा मोहन और बाबा मोहरी। गुरु साहिब की बेटियों के नाम थे--बीबी दानी और बीबी भानी। गुरु साहिब की सुपत्नी बीबी भानी के विवाह के लिए गुरु जी पर सदा जोर डालती रहती थीं। एक दिन गुरु साहिब ने उनसे पूछा कि "वे अपनी पुत्री के लिए कैसा वर चाहती हैं?" (गुरु) रामदास जी, जिन्हें लोकप्रिय नाम 'जेठा' अर्थात् 'सबसे बड़ा बालक' पुकारा जाता था, सन् १५४६ से श्री गुरु अमरदास जी के संपर्क में थे। वे सिक्ख संगत की सेवा बड़े प्रेम-भाव से करते थे और उनके पास ही खड़े थे। गुरु साहिब की पत्नी ने उनकी ओर संकेत करते हुए कहा कि "मेरी बेटी के लिए ऐसा वर बिलकुल उपयुक्त रहेगा।" गुरु साहिब का प्रत्युत्तर था कि जब उन्होंने स्वयं ही अपनी पुत्री के लिए वर ढूंढ लिया है तो किसी और की तलाश करने की कोई आवश्यकता नहीं है। अतः सन् १५५३ के आरंभ में भाई जेठा जी और बीबी भानी जी का विवाह संपन्न हुआ। भाई जेठा जी ने इस शुभ कार्य के विषय में प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा : *"वाहिगुरु ने कार्य संपन्न कर दिया है और वह एक पवित्र दुल्हन को ब्याहने आया है।" (The Lord has accomplished the work. He has come to wed a holy bride.) (पृष्ठ ११९)*

गुरु-काल के प्रशंसनीय कार्य : गुरगद्दी के दावेदारों से किसी प्रकार का टकराव न हो, इसलिए श्री गुरु अमरदास जी खडूर साहिब से गोइंदवाल चले गए। यह स्थान (गोइंदवाल) अमृतसर से ४५ किलोमीटर की दूरी पर है। वहां जाकर उन्होंने अपने शिष्यों को "शारीरिक क्षमता" बनाए रखने पर बल दिया। उनका उपदेश था कि मनुष्य का शरीर भगवान का मंदिर है, इसलिए प्रत्येक सिक्ख का कर्त्तव्य है कि वह अंतिम सांस तक अपना शरीर बिलकुल स्वस्थ रखे। यह तो भगवान का बहुमूल्य उपहार है, बुरी आदतों में पड़कर इसे बिगाड़ा न जाए। उन्होंने योगियों और साधुओं द्वारा अपने शरीर को यातना देने की निंदा की और मादक द्रव्यों को निषिद्ध ठहराया।

लंगर की महिमा : सिक्ख धर्म में लंगर की प्रथा श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही आरंभ हो गई थी। तीसरे गुरु साहिब ने सिक्खों को परस्पर एकता और भाईचारा बनाए रखने का उपदेश दिया। सिक्ख संगत को उपदेश करते समय वे कहा करते थे कि जात-पात का भेद दूर करो। इसके लिए उनका कथन था कि जो भी श्रद्धालु उनके दर्शनार्थ आए वह लंगर छककर पधारे। वस्तुतः उनका नारा था: *"पहिले पंगत पाछै संगत"*।

श्री गुरु अमरदास जी के समय लंगर-व्यवस्था सुदृढ़ हो गई थी। श्रद्धालु गुरु साहिब को जो भी धनराशि अथवा खाद्य-पदार्थ भेंट करते, उसका प्रयोग लंगर में होता। आगंतुकों के साथ गुरु साहिब के सतसंग में प्रतिदिन पधारने वाले सभी लोगों को भोजन के समय लंगर के कर्मचारी घी से चुपड़ी गेहूं की रोटी, तली हुई दाल, प्याज तथा खीर वितरित करते। प्राय: गुरु साहिब दोपहर के समय लंगर में पधार कर सुव्यवस्था देखने कतार में बैठे भोजन करने वालों के पास आते। (The Guru was usually present in the Langar at noon to look after the pangat.)

गुरु साहिब का अपना भोजन अत्यंत सादा होता था और उसमें साधारण से साधारण सामग्री का प्रयोग होता था। गुरु साहिब लंगर में पधार कर वहां पर उपस्थित सभी सिक्खों से उनके परिवार के कुशल-क्षेम की बातें पूछते तथा जिस व्यक्ति की जो समस्या होती, उसका समाधान भी बताते। गुरु साहिब और उनके शिष्यों के स्नेह-बंधन के कारण सिक्ख-लहर लोकप्रिय तथा शक्तिशाली बन गई।

श्री गुरु अमरदास जी की महिमा सुनकर मुगल बादशाह अकबर उनके दर्शनार्थ गोइंदवाल पहुंचा। उसने फर्श पर बिछी दरी पर पलथी लगाए बैठ कर लंगर छका। अकबर ने लंगर में कार्यरत पुरुषों तथा स्त्रियों की विनम्रतावश तथा गुरु साहिब के प्रति आदर के कारण लंगर को निरंतर चलाए रखने के लिए लगान रहित कुछ गांव भेंट करने का प्रस्ताव रखा किन्तु गुरु साहिब ने सम्मानपूर्वक बादशाह की यह सौगात अस्वीकार कर दी। फलत: बादशाह ने माझा क्षेत्र के मध्य में स्थित झबाल (चुबहाल, पृष्ठ १२२) नामक स्थान के समीप कुछ जमीन गुरु साहिब की बेटी बीबी भानी जी के नाम कर दी, जिसका उल्लेख भाई संतोख सिंघ ने "गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" में विस्तारपूर्वक किया है, यथा:

पट्टा परगने का लिख दीन,
रहें ग्राम सब गुरू अधीन।
आद झबाल बीड़ जेह करयो,
बोहते ग्राम अरप मरद भरयो। (रास २, पद १०)

इसी प्रकार कांगड़ा के पहाड़ी क्षेत्र (आधुनिक हिमाचल प्रदेश) में स्थित हरीपुर गुलेर के राजा ने गुरु साहिब का लंगर छककर तृप्त होने पर गोइंदवाल में बन रही गुरु साहिब की इमारतों के दरवाजों, खिड़कियों तथा छतों में प्रयुक्त होने वाली लकड़ी मुफ्त भेंट की। राजा का यह उपहार बैलगाड़ियों से नहीं बल्कि ब्यास नदी के पानी के तेज प्रवाह में गोइंदवाल पहुंचा।

धार्मिक-स्थलों की यात्रा : सन् १५५३ में गुरु जी सूर्य-ग्रहण के अवसर पर भारतवर्ष के तीर्थ-स्थान कुरुक्षेत्र और हरिद्वार में स्नानार्थ पहुंचे। सिक्ख संगत ने इन पवित्र स्थलों को देखने की अभिलाषा प्रकट की। गुरु जी ने तुरंत उनकी मंशा पूरी करने का वचन दिया। इसके पीछे उनके दो मन्तव्य थे। एक तो यह कि वहां पहुंचने वाले तीर्थ-यात्रियों में कितना जोश एवं भक्ति-भाव होता है, दूसरा, देश के विभिन्न भागों से कुरुक्षेत्र एवं हरिद्वार में पधारने वाले श्रद्धालुओं को अपने नए मत से परिचित करवाना। उनका यह कार्यक्रम खूब रंग लाया। गुरु साहिब और उनके शिष्यों को यह महसूस हुआ कि (गुरु नानक साहिब के) देशव्यापी सभी सिक्ख महानुभाव इसी प्रकार गुरु साहिब के मुख्य स्थल पर एकत्रित हों। वहां पर पवित्र स्नान हेतु ब्यास नदी समीपस्थ है।

सिक्खों के दो मेले : इससे श्री गुरु अमरदास जी के मन में एक और विचार उभरा। वे चाहते थे कि सभी सिक्ख श्रद्धालु अपने परिवार समेत गोइंदवाल में स्थित उनके डेरे में पधारें

ताकि पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों का दूसरे इलाके के निवासियों से मेल-मिलाप बढ़े। एतद्दर्थ उन्होंने दो महान त्यौहार चुने जो एक-दूसरे से लगभग छ: महीने बाद मनाए जाते हैं। उनमें से एक था वैसाखी का त्यौहार, दूसरा है दीवाली।

"वैसाखी" का सामूहिक समागम पहली बार सन् १५५४ में हुआ। स्त्रियों और बच्चों ने इसका खूब स्वागत किया। पंजाब के इतिहास में यह घटना पहली बार हुई जबकि सैंकड़ों महिलाएं बिना घूंघट काढे नि:संकोच एक-दूसरे से मेल-मिलाप करती हुई तथा "गुरु का लंगर" छकती हुई दिखाई पड़ीं। दीवाली के अवसर पर अगले समागम में इससे भी अधिक चहल-पहल दृष्टिगोचर हुई।

श्री गुरु अमरदास जी के दार्शनिक विचार: श्री गुरु अमरदास जी ने घोषणा की कि एक मनुष्य में शरीर, मन और आत्मा का समन्वय रहता है। शरीर की तुलना रथ से, मन की रथवान से तथा आत्मा की रथ के मालिक से की जा सकती है। शरीर के भावात्मक अंग घोड़े हैं और उनकी लालसा सड़क है। शारीरिक आनंद में विश्वास करने वाला मनुष्य मनमुख है। गुरु ही उसमें विद्यमान देवत्व का आभास करवा सकता है और उसकी अहंमन्यता पर रोक लगाकर उसे दैवी मार्ग अपनाने के लिए पथ-प्रदर्शक बन सकता है। इस प्रकार मनुष्य गुरमुख बन जाएगा।

श्री गुरु अमरदास जी ने १४ रागों में ८७४ पदों की रचना की थी। उनकी पद-रचनाएं सरल और सुरीली हैं तथा उनकी भाषा सादगीपूर्ण है, उदाहरणार्थ :

१) मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ॥
मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥
(पन्ना ३७)

२) मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥ *(पन्ना ५६५)*

३) लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ ॥
अंति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ ॥
(पन्ना १४१७)

धर्म-प्रचार के केंद्र और उप-केंद्र : उन दिनों सवारी के लिए रथों अथवा बैलगाड़ियों का प्रयोग होता था। गुरु साहिब वृद्ध हो गए थे और धर्म-प्रचार हेतु जगह-जगह घूम-फिर नहीं सकते थे। उनके श्रद्धालु वर्ष में एक बार वैसाखी अथवा दीवाली पर अकेले या अपने परिवार सहित उनके दर्शनार्थ गोइंदवाल साहिब पहुंचते रहते थे, किंतु गुरु साहिब की शुभ इच्छा थी कि उनके भक्त अपने निवास-स्थान के समीप समय-समय पर एकत्र होकर नाम-कीर्तन करें तथा वहीं पर लंगर छककर "गुरमति" के पावन सिद्धांत "संगत और पंगत" को चरितार्थ करते रहें। अत: उन्होंने अपने सिक्खों के निवास-क्षेत्र को २२ शाखाओं में बांट दिया और प्रत्येक को "मंजी" नाम दिया। "मंजी" शब्द के स्वरूप का वर्णन तथा प्रतीकात्मकता का उल्लेख डॉ. हरी राम गुप्ता ने इस प्रकार किया है :

"एक मंजी कुछ निश्चित क्षेत्र तक सीमित थी। शाब्दिक रूप में यह एक 'खाट' को चिन्हित करती है जिस पर साफ-सुथरी चादर बिछी हो और वह एक स्वच्छ कमरे में रखी हुई हो।

गुरु अथवा उसका प्रतिनिधि उस स्थल की यात्रा के दौरान अथवा स्थानीय सिक्ख प्रचारक उस पर बैठता था, जनसमूह जमीन पर विराजमान होता था। वे लोग एक निश्चित दिन और विशेष अवसरों पर आपस में मिल बैठते थे। इस स्थल का नियंत्रण एक परम भक्त शिष्य करता था, जो कि लंगर और गुरु को भेंट की जाने वाली निधि तथा खाद्य वस्तुएं एकत्र करता था। उसे 'संगतिआ' पुकारा जाता था।

इन २२ समागम-स्थलों और दान-प्राप्ति

क्षेत्रों को फिर ५२ भागों में बांटा गया, जिसमें से प्रत्येक को "पीढ़ी" कहा गया। इसकी व्याख्या डॉ. गुप्ता ने इस प्रकार की है :

"मंजी" केंद्रीय-स्थल पर स्थित होती थी। आस-पास के गांवों के निवासी सिक्ख एक पीढ़ी या बहुत छोटी खटिया रखते थे, जिस पर एक ही व्यक्ति बैठ सकता था। कोई स्थानीय सदस्य उस पर बैठ कर संगत को कीर्तन करने में नेतृत्व प्रदान करता था। (पृष्ठ ११९-१२०)

भाई सरूप दास भल्ला ने "महिमा प्रकाश" में, भाई काहन सिंघ ने "महान कोश" में तथा श्री कन्हैया लाल ने "तीरीख-ए-पंजाब" में २२ मंजियों और उनके नीचे ५२ पीढ़ियों का उल्लेख किया है, जो कि पंजाब के माझा क्षेत्र, जालंधर-दुआब क्षेत्र, कांगड़ा की पहाड़ियों, कश्मीर वादी में, मालवा और सिंध क्षेत्र में स्थापित की गई थीं। मालवा क्षेत्र की दो पीढ़ियों की "संगतियां" (संचालिकाएं) महिलाएं थीं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

१) जिला रोपड़ की खरड़ तहसील के व्यून गांव की माई भागो।

२) जिला पटियाला के गर्दनोह गांव की माई सेवां। (पृष्ठ १२१)

बाउलियों का निर्माण : गोइंदवाल में हिंदुओं और सिक्खों की अपेक्षा मुसलमान अधिक गिनती में थे। गुरु साहिब के श्रद्धालु सिक्खों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती देखकर कुछ धर्मांध मुसलमान अपने बच्चों को सिखा देते थे कि जब कोई सिक्ख कुएं से मटका भर कर ले जाता हुआ दिख पड़े तो वे उसका मटका फोड़ दें, इसलिए मुस्लिम बालक सिक्खों के सिर पर उठाए हुए मटकों पर ईंट-पत्थर फेंक कर उन्हें फोड़ कर कहीं छिप जाते थे।

जब श्री गुरु अमरदास जी के पास किसी सिक्ख ने शरारतियों की चर्चा की तो उन्होंने अपने सेवकों को केवल (शांत रहने के लिए) समझाया ही नहीं बल्कि सिक्खों के लिए एक स्वतंत्र बाउली खुदवाने की व्यवस्था भी कर दी। गोइंदवाल में पहली "बाउली" खुदवाने का काम सन् १५५६ में शुरू हुआ और सन् १५५९ में संपन्न हुआ। गुरु साहिब का उद्देश्य था कि लोगों को रस्सी में बालटी बांधे बिना शुद्ध पानी मिल सके। अत: उन्होंने बाउली में उतरने के लिए ८४ सीढ़ियां बनवा दीं।

इस प्रकार गोइंदवाल की बाउली सिक्खों का तीर्थ-स्थल बन गई। इसका निर्माण-कार्य संपन्न होने पर गुरु साहिब ने उसका जल मंगवाकर और उससे तैयार किए भोजन से एक दावत की, जिसमें केवल सिक्ख ही नहीं बल्कि गोइंदवाल और उसके आस-पास के गांवों के अन्य धर्मावलंबी भी सम्मिलित हुए। भाई सरूप दास के काव्य-ग्रंथ "महिमा प्रकाश" के आधार पर गुप्ता जी ने श्री गुरु अमरदास जी की उदारता का एक और उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि वे अपने निवास-स्थान में दोपहर के पश्चात् जो सतसंग करते थे उसमें पंडित केशो गोपाल कथाओं की व्याख्या करते थे।

सामाजिक सुधार : गुरु साहिब ने "संगत और पंगत" का सिद्धांत अपनाकर जात-पात का भेदभाव मिटाने का प्रयास किया। उन्होंने सती-प्रथा हटाने और किसी व्यक्ति की मृत्यु पर "सियापा" करने की प्रथा को रोका। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि स्त्री हो या पुरुष वह जीवन में एक ही विवाह करे। विधवाओं को पुनर्विवाह के लिए भी प्रेरित किया गया।

"मोहन पोथी" और "गुरु-पदवी" का हस्तांतरण: श्री गुरु अमरदास जी ने अपने पुत्र बाबा मोहन से अपने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी की पवित्र

बाणी के साथ ही अपनी बाणी का भी संकलन करवाया, जो कि "मोहन पोथी" के नाम से विख्यात हुआ। गुरु साहिब ने अपने दामाद (गुरु) रामदास जी की अपार सेवा-भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें गुरगद्दी का अधिकारी घोषित किया।

पहली सितंबर, सन् १५७४ को लगभग ९५ वर्ष और ४ मास की अवस्था में श्री गुरु अमरदास जी परलोक सिधारे।

गुरु साहिब का महान व्यक्तित्व : श्री गुरु अमरदास जी बड़े मधुर स्वभाव के महापुरुष थे। उन्होंने अपने बेटों के साथ मिलकर नमक तथा तेल के व्यापार द्वारा आजीविका अर्जित की। उनके पास पहनने वाले दो जोड़े कपड़े होते थे, जिनमें से एक धुलता तो वे दूसरा कुर्ता, पाजामा और पगड़ी पहनते थे। उनका भोजन बड़ा सादा था, जो कि दाल और रोटी तक सीमित था। उन दिनों साग-सब्जियों का भोजन हेतु अधिक प्रचलन नहीं था, केवल आलू और प्याज ही उस समय बाजारों में बिकता था। उनके घर पर दो-तीन गायें रहती थीं, जिनका दूध पीने और लस्सी-मक्खन के काम आता था। उन दिनों भैंसें केवल किसान ही रखते थे। श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी की भांति श्री गुरु अमरदास जी अपने भक्ति-भाव में चट्टान की तरह दृढ़ थे।

(पृष्ठ १२६)



श्री कन्हैया लाल रचित "तारीख-ए-पंजाब" . . . *(पृष्ठ १२ का शेष)*

समूह संगत ने किया। यमुना पार करने पर "यात्रा-कर" उगाहने के लिए बैठे सरकारी कर्मचारी गुरु जी के व्यक्तित्व से इतने सम्मोहित हो गए कि उन्हें 'कर' वसूल करने का ध्यान ही नहीं रहा, जो 'कर' उन दिनों हिंदुओं से धर्म-स्थानों की यात्रा को जाते हुए वसूल किया जाता था। तब :

त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥
मिलि आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥ . . .
कीरतन पुराण नित पुंन होवहि गुर बचनि नानकि हरि भगति लही ॥
मिल आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥ *(पन्ना ११११६)*

तीसरा पड़ाव गंगा तट पर हुआ जहां नगर के सभी संभ्रांत पुरुष एकत्रित हुए, कीर्तन-कथा और श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रदर्शित पुण्य-भक्ति की चर्चा होती रही। यह स्थान, जहां गुरु साहिब यात्रा दौरान ठहरते थे, कनखल का सती घाट है। विद्वानों का विचार है कि यहीं गुरु साहिब ने सती-प्रथा का विरोध किया था जो हिंदू समाज में स्त्री वर्ग के लिए कुप्रथा के रूप में प्रचलित थी कि हिंदु स्त्री को पति के मरने पर उसके साथ ही चिता पर आत्मदाह करना पड़ता था। यहां सुंदर ऐतिहासिक गुरुद्वारा बना हुआ है, जिसमें सोने के बाईस कलश लगे हैं। इन सोने के कलशों की स्थापना की सेवा में महाराजा पटियाला, महाराजा फरीदकोट, महाराजा नाभा, संगरूर और कुछ सिंधी श्रद्धालुओं का विशेष योगदान है। गुरु-स्थान और साथ में लगती काफी भूमि का पट्टा निरमले संत दरगाहा सिंघ के नाम से है। गत दस वर्षों से इस स्थान की सेवा-संभाल पूर्ण अमृतधारी सिंघ भाई अमीर सिंघ निष्ठा व मर्यादा सहित कर रहे हैं।



मैकालिफ कृत श्री गुरु अमरदास जी का जीवन-वृत्तांत

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

सिक्ख इतिहास के गहन और सूक्ष्म चिंतक मैक्स आर्थर मैकालिफ ने अपने महान ग्रंथ "सिक्ख रिलीजन" के दूसरे भाग में तीजे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का जीवन-वृत्तांत "Life of Sri Guru Amardas Ji" (गुरु अमरदास जी की जीवनी) शीर्षक से प्रस्तुत किया है। इसके पश्चात् उन्होंने तीसरे पातशाह की बाणी का कुछ चुनिंदा हिस्सा भी विभिन्न वैचारिक शीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत किया है।

जन्म एवं पूर्व जीवन : मैकालिफ ने तीसरे पातशाह के जन्म एवं पूर्व जीवन का वृत्तांत श्री गुरु अंगद देव जी की जीवन-कथा के अंतर्गत दिया है। उनके अनुसार श्री गुरु अमरदास जी ने वैसाख सुदी १४, संवत् १५३६ वि: मुताबिक सन् १४७९ ई को अमृत-वेला में पिता श्री तेजभान और माता बखत कौर (अधिकतर स्रोतों में गुरु जी की माता जी का नाम सुलक्खणी (लखमी) दिया है) के घर 'बासरके' निकट श्री अमृतसर में जन्म लिया। (गुरु) अमरदास जी चार भाइयों में सबसे बड़े थे और खेती तथा व्यापार का खानदानी कार्य करके जीविका कमाते थे। २३ वर्ष की अवस्था में आपका विवाह मनसा देवी जी के साथ हुआ। गुरु जी के दो पुत्र--बाबा मोहरी और बाबा मोहन एवं दो सपुत्रियां--बीबी दानी और बीबी भानी हुईं।

मैकालिफ लिखता है कि (गुरु) अमरदास जी वैष्णव मत के पक्के अनुयायी थे। ये एकादशी आदि के व्रत रखते और प्रतिवर्ष गंगा-स्नान के लिए हरिद्वार जाते। गुरु जी जब नदी गंगा की बीसवीं यात्रा से वापिस आ रहे थे तो उन्हें 'मिहड़ा' गांव के बाहरी भाग में एक साधु मिला। दोनों गहरे मित्र बन गये। साथ-साथ यात्रा शुरू की और आपस में मिलजुल कर भोजन बनाकर खा लिया करते। (गुरु) अमरदास जी के गुणों से प्रभावित होकर एक दिन उस साधु ने पूछा कि आपका 'गुरु' कौन है जिसने आपको ऐसी जीवन-युक्ति सिखाई? गुरु जी ने उत्तर दिया कि मेरा कोई 'गुरु' नहीं है। यह सुनकर साधु पश्चाताप करता हुआ बोला कि मैंने बड़ा पाप किया, एक 'निगुरे' के हाथ का भोजन किया . . .।" इस तरह शोक करता हुआ वह साधु चला गया।

(गुरु) अमरदास जी दीन होकर सोचने लगे कि मुझे 'गुरु' कहां मिलेगा? 'गुरु' के वियोग में ये ऐसे बेचैन हो गये कि खाना-पीना सब छूट गया।

एक दिन अमृत-वेला में (गुरु) अमरदास जी पूजा-पाठ में लगे थे कि उन्हें गुरबाणी की मीठी ध्वनि सुनाई दी। यह कोमल आवाज उनके भाई के घर की ओर से आ रही थी जहां उनके भाई के बेटे की पत्नी बीबी अमरो जी श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का पाठ कर रही थीं। बीबी अमरो जी श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री थीं जो कुछ समय पहले ही (गुरु) अमरदास जी के भतीजे से ब्याही थीं।

"करणी कागदु मनु मसवाणी . . ." शबद सुनते ही (गुरु) अमरदास जी विह्वल हो उठे। मैकालिफ ने इस शबद का पूरा अंग्रेजी अनुवाद

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१*

पेश किया है। (गुरु) अमरदास जी ने बीबी अमरो जी से पूछा कि यह 'शबद' तुमने कहां से सीखा? बीबी जी बोले कि अपने पिता श्री गुरु अंगद देव जी से। यह सुनते ही (गुरु) अमरदास जी का भक्ति-भाव जाग उठा और वे दूसरे पातशाह के दर्शन करने के लिए व्याकुल हो उठे।

श्री गुरु अंगद देव जी से भेंट : बीबी अमरो जी अपने ससुर (गुरु) अमरदास जी को साथ लेकर श्री गुरु अंगद देव जी के पास आये। गुरु अंगद साहिब से प्रभावित होकर (गुरु) अमरदास जी वैष्णव मत त्याग कर गुरु के 'सिक्ख' बन गये।

(गुरु) अमरदास जी ने गुरु अंगद साहिब की हजूरी में रहने का निर्णय लिया और अपने गुरु की सेवा में जुट गये। इन्हीं दिनों गुरु जी की आज्ञा एवं सिक्ख गोइंदा की विनती पर उन्होंने ब्यास के किनारे पर 'गोइंदवाल' नगर की स्थापना की।

दूसरे पातशाह की सेवा : (गुरु) अमरदास जी की अवस्था वृद्ध थी परंतु आप प्रेम-भक्ति के वशीभूत अमृत-वेला से ही उठकर सेवा-कार्य में डट जाते। मैकालिफ ने आपकी दिनचर्या के विषय में लिखा है--"(गुरु) अमरदास जी पहर रात रहते उठते . . . गुरु जी के स्नान के लिए ब्यास दरिया से जल लेकर आते . . . मार्ग में जपु जी साहिब का पाठ करते . . . आकर आसा की वार का कीर्तन श्रवण करते . . . फिर लंगर की सेवा में जुट जाते . . . जल ढोते, बर्तन मांजते, जंगल से लकड़ियां लाते . . . शाम को नितनेम सुनते और गुरु जी की सेवा करते हुए उनके विश्राम के बाद स्वयं विश्राम करने जाते।"

गुरिआई की प्राप्ति : वृद्धावस्था के बावजूद बारह वर्षों तक (गुरु) अमरदास जी गुरु-सेवा में लगे रहे। तांत्रिक 'तपा' का घमंड-खंडन एवं जुलाहे की स्त्री का (गुरु) अमरदास जी को अपशब्द बोलने पर पागल हो जाने वाले प्रसंगों से आपकी आध्यात्मिक कमाई पहले ही प्रकट हो चुकी थी। मैकालिफ ने इन प्रसंगों का जिक्र श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन-वृत्तांत में किया है।

दूसरे पातशाह ने (गुरु) अमरदास जी की सेवा एवं आध्यात्मिक-प्राप्ति को देखते हुए तथा आपको गुरगद्दी हेतु सभी प्रकार से योग्य मानते हुए 'गुरगद्दी' प्रदान करने का निर्णय लिया।

मैकालिफ लिखता है कि गुरु अंगद साहिब ने (गुरु) अमरदास जी को स्नान करा, नये वस्त्र पहना गुरगद्दी पर बैठाया और माथा टेका। दूसरे गुरु पातशाह ने अपने पुत्रों एवं सिक्खों से कहा कि गुरु-पदवी नम्रता, प्रेम और सेवा का फल है। (गुरु) अमरदास जी इसके सर्वाधिक योग्य अधिकारी हैं। इसके बाद दूसरे पातशाह ज्योति-जोत समा गये।

लंगर द्वारा जात-पात का खंडन : मैकालिफ श्री गुरु अमरदास जी द्वारा जात-पात के विरोध में चलाई मुहिम से बड़ा प्रभावित है। उसने गुरु जी का जीवन-वृत्तांत लिखते समय इस तथ्य को सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया है। मैकालिफ लिखता है कि गुरु जी का नियम था, जो भी उनसे मिलने आयेगा उसे पहले पंगत में बैठ कर 'परसादा छकना' पड़ेगा। इस प्रकार गुरु जी जात-पात, ऊंच-नीच के भेदभाव को समाप्त करके लोगों में समानता की भावना पैदा करना चाहते थे। मैकालिफ लिखता है कि गुरु जी के लंगर में अत्यंत स्वादिष्ट भोजन बनाये जाते और आगंतुकों को पेट भर खिलाये जाते। सिक्खों की अटूट सेवा में गुरु का लंगर अटूट बरतता।

दातू का लालच-बाबा बुड्ढा जी की बुद्धिमत्ता

श्री गुरु अमरदास जी की महिमा और प्रसिद्धि से दूसरे पातशाह के पुत्र बाबा दातू को बड़ी ईर्ष्या हुई। उसने एक पर्चा जारी करके कहा

कि वह गुरु अंगद साहिब की गुरगद्दी का असली वारिस है, अतः सिक्ख मेरे पास खडूर साहिब आया करें, परंतु सिक्ख संगत पहले की तरह गोइंदवाल साहिब श्री गुरु अमरदास जी के पास ही जाती रही।

ईर्ष्या से भरा दातू गोइंदवाल साहिब आया। गुरु जी को गुरगद्दी पर बैठे देखकर उसकी ईर्ष्या और बढ़ गई। उसने अपशब्द कहते हुए लात मार कर गुरु जी को गिरा दिया और स्वयं गुरगद्दी पर बैठ गया।

मैकालिफ ने इस प्रसंग का वर्णन बड़ी भावुकता से किया है। वह लिखता है कि इतना होने पर भी गुरु जी विनम्रता से बोले कि "महाराज! मुझे बख्श लो . . . आपके पैर में चोट लगी होगी।" गुरु जी के हृदय में वैराग्य उत्पन्न हो गया।

इसके बाद गुरु जी गोइंदवाल साहिब से बासरके आ गये और एक किसान की कोठरी में तप (आत्म-चिंतन) करने लगे। किसान से दरवाजे पर ईंटें चिनवा दीं और ऊपर लिखा दिया कि "जो कोई इस दरवाजे को खोलेगा वह मेरा सिक्ख नहीं और मैं उसका गुरु नहीं . . .।"

उधर दातू ने कुछ दिन आनंद मनाया पर जल्दी ही उसे लगा कि लोग मुझे घृणा करने लगे हैं तो उसने माल-असबाब इकट्ठा किया और खडूर साहिब ले जाने लगा। रास्ते में लुटेरों ने उसे लूट लिया और जाते-जाते उसकी वही टांग तोड़ गये जो उसने गुरु जी को मारी थी।

इधर गोइंदवाल साहिब में गुरु जी के बिना सिक्ख व्याकुल हो उठे। सभी बाबा बुड्ढा जी के पास गये। बाबा जी ने गुरु जी की घोड़ी छोड़ दी जो सीधे बासरके गांव में उस कोठरी के सामने जा खड़ी हुई। दरवाजे पर लिखे हुक्म को पढ़कर बाबा बुड्ढा जी ने कोठरी के पिछवाड़े 'सेंध' लगाई और भीतर प्रवेश कर गये। इस तरह बाबा जी ने गुरु-आज्ञा का उल्लंघन भी नहीं किया और विनती कर गुरु जी को वापस गोइंदवाल साहिब ले आये।

विभिन्न साखियों का वर्णन : मैकालिफ द्वारा लिखा गया श्री गुरु अमरदास जी का जीवन-वृत्तांत बहुत विस्तृत है। उसमें ऐसी अनेक साखियों का वर्णन किया गया है जो गुरु जी के धैर्य, विनम्रता, प्रेम, ज्ञान, आध्यात्मिक-प्राप्ति आदि गुणों को प्रकट करती हैं। इन साखियों में सावण मल और हरीपुर के राजा की साखी, सचनसच की साखी, भाई पारो का प्रेम, भाई लालो का उपकार, भाई महेशा की मुक्ति, उत्पाती मुस्लिमों का प्रसंग, माया वैरागी को उपदेश, माणिक चंद का कार्य, तपे की शुधाई, फकीर की साखी, गंगू सौदागर की साखी आदि प्रमुख हैं।

गुरु जी के उपदेशों का वर्णन : मैकालिफ ने गुरु जी के उपदेशों का विस्तार से वर्णन किया है।

उदाहरणतः एक बार गुरु जी घोड़े पर चढ़ कर जा रहे थे तो उन्होंने वर्षा से जर्जर हुई दीवार देखी। गुरु जी तेजी से घोड़ा दौड़ा कर आगे निकल गये। सिक्खों ने पूछा कि इस नश्वर शरीर से ऐसा मोह क्यों? गुरु जी ने उत्तर दिया कि यदि हम इस शरीर की रक्षा करेंगे तभी हम परमात्मा के प्रति अपना फर्ज निभा सकेंगे और ब्रह्म-ज्ञान तथा मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे। किसी वृक्ष को संभालेंगे तभी वह बार-बार पत्ते, फूल और फल देगा।

इसी प्रकार एक बार एक सिक्ख ने पूछा कि "कार्य का आरंभ करने के लिए श्रेष्ठ मुहूर्त कौन-सा होता है?" गुरु जी ने समझाया, "सबसे अच्छा मुहूर्त वो है जिसमें अकाल पुरख के आगे 'अरदास' की जाती है।"

इसी तरह एक धनी आदमी ने अपने पुत्र-जन्म पर भोज दिया। ब्राह्मणों ने कहा कि

'सूतक' के कारण घर अपवित्र है, अत: हम भोजन नहीं करेंगे। धनी आदमी ने गुरु जी से आग्रह किया तो उन्होंने सिक्खों को भोजन करने की आज्ञा दे दी। ब्राह्मणों ने कहा, "सिक्खों ने सूतक का भोजन खा लिया है।" गुरु जी ने उन्हें समझाया कि "सारी सृष्टि, अन्न, जल, मिट्‌टी आदि सब जगह सूतक ही सूतक है। मन भी लोभ-भ्रम की सूतक से ग्रस्त है जो मात्र 'नाम' से ही निर्मल हो सकता है।"

एक दिन एक व्यापारी ने आकर विनती की कि मैंने बहुत-से व्रत, तीर्थ आदि किये परंतु मन को शांति न मिली। गुरु जी ने उपदेश दिया "परमेश्वर का नाम जप, अभिमान त्याग कर विनम्र बन।"

एक बार सिक्खों ने पूछा, 'संत' कौन है? गुरु जी ने फरमाया "जो कीचड़ रूपी सृष्टि में रहकर भी कमल की भांति निर्लेप रहे।"

इस तरह मैकालिफ ने भिन्न-भिन्न प्रसंगों की चर्चा करते हुए विस्तार से गुरु जी के उपदेशों की प्रस्तुति की है।

सारे संसार का भला करो, सहनशीलता-क्षमा धारण करो, वैर मत करो, जाति का घमंड मत करो, गृह में रहकर ही निरालम रहो, त्याग-सन्यास में मन की शांति नहीं है आदि वे उपदेश हैं जिनका मैकालिफ ने विशेष रूप से वर्णन किया है।

बाउली-निर्माण : मैकालिफ ने गोइंदवाल साहिब में बाउली के निर्माण-प्रसंग का वर्णन भी किया है। गुरु जी ने जनता को तीर्थ-स्नान जैसे भ्रम से बचाने के लिए और सभी जातियों को समान रूप से जल उपलब्ध कराने के उद्‌देश्य से बाउली का निर्माण कराया। गुरु जी के आदेश पर सभी सिक्खों ने मिलजुल कर परिश्रम करके बाउली का निर्माण किया।

भाई जेठा जी-बीबी भानी जी का आनंद कारज: मैकालिफ ने भाई जेठा जी के गोइंदवाल साहिब आने, सेवा करने और बीबी भानी जी के साथ आनंद-कारज के प्रसंग का भी बहुत सुंदर वर्णन किया है। भाई जेठा जी निरंतर गुरु-घर की सेवा में लगे रहते और खाली समय में घुंघणियां (भुने गेहूं) बेचकर जीविका कमाते।

एक दिन गुरु जी की सुपत्नी माता मनसा देवी खेल में लगी बीबी भानी जी को देखकर गुरु जी से बोले कि "बेटी जवान हो गई है, अब इसका विवाह कर देना चाहिए।" गुरु जी ने पूछा, "वर कैसा चाहिए?" उस समय भाई जेठा जी घुंघणियां बेच रहे थे। माता जी ने कहा कि "वर तो उस लड़के जैसा होना चाहिए।" गुरु जी ने उत्तर दिया कि "उसके जैसा तो वह खुद ही है।" इस प्रकार भाई जेठा जी और बीबी भानी जी का आनंद-कारज सम्पन्न हुआ। कुछ समय पश्चात भाई जेठा जी-बीबी भानी जी के घर तीन पुत्रों का जन्म हुआ। पहले प्रिथी चंद, फिर महांदेव और तीसरे पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी।

अकबर की गोइंदवाल साहिब की फेरी: मैकालिफ ने मुगल बादशाह अकबर की गोइंदवाल साहिब की फेरी का भी सुंदर विवरण दिया है। मैकालिफ लिखता है कि लाहौर जाते समय अकबर ब्यास नदी पार करके गोइंदवाल साहिब आया। उसने गुरु जी की बड़ी महिमा सुनी थी, अत: वह गुरु जी के दर्शन करने का इच्छुक था। जब अकबर को पता चला कि गुरु जी के दर्शन करने से पहले 'लंगर छकना' अनिवार्य है तो उसने पंगत में बैठकर बड़े प्रेम से लंगर छका। अकबर गुरु जी से मिलकर बहुत प्रभावित हुआ और गुरु जी से जागीरें लेने की प्रार्थना की। गुरु जी ने विनम्रता से इंकार करते हुए कहा कि जिस अकाल पुरख ने आपको जागीरें दी हैं, वही हमारा पालन करता है।

फिर भी अकबर जाते-जाते बीबी भानी जी और भाई जेठा जी के नाम जागीरें लिख गया। इन जागीरों का प्रबंध बाबा बुड्ढा जी को सौंपा गया जो उन गांवों के मध्य 'बीड़' में जाकर निवास करने लगे।

जाति-अभिमानियों का विरोध--अकबर से शिकायत--भाई जेठा जी का बादशाह के दरबार में जाना: श्री गुरु अमरदास जी के मानवीय समता के लिए किये प्रयासों से नाराज होकर अनेक जाति-अभिमानियों ने बादशाह अकबर के पास शिकायत की। मैकालिफ ने इस प्रसंग का बड़े विस्तार से वर्णन किया है। जाति-अभिमानियों ने बादशाह से कहा कि "गुरु जी एक साथ खिलाते-पिलाते हैं और सबके साथ बराबरी का व्यवहार करते हैं। इस तरह इन्होंने जाति-प्रथा को खंडित करके हम उच्च-वंशियों का धर्म ही भ्रष्ट कर दिया है।"

बादशाह ने अपना एक दूत गोइंदवाल साहिब भेजा कि जाकर संदेश दो कि गुरु जी आकर हमें दीदार बख्शें।

गुरु जी को जब वस्तुस्थिति का ज्ञान हुआ तो उन्होंने भाई जेठा जी को आज्ञा दी कि बादशाह की कचहरी में जाओ और श्री गुरु नानक देव जी की सच्ची शिक्षा सबके सामने प्रकट करो।

भाई जेठा जी बादशाह के यहां पहुंचे तो उनका बड़ा स्वागत-सत्कार किया गया। भाई जेठा जी ने वाहिगुरु के नाम-सिमरन पर आधारित गुरमति-चिंतन की सुंदर व्याख्या की। बादशाह अकबर ने निर्णय दिया कि "गुरमति में किसी भी धर्म का कोई विरोध नहीं है।" जाति-अभिमानी अपना-सा मुंह लेकर लौट आये।

गुरु जी की हरिद्वार-यात्रा भाषा संबंधी विचार : इसके बाद बादशाह के आग्रह पर गुरु जी ने एक बार फिर हरिद्वार की यात्रा की। मार्ग में थानेसर में पंडितों ने गुरु जी से पूछा कि आप संस्कृत छोड़कर लोक-भाषा में बाणी क्यों उच्चारण करते हैं? गुरु जी ने फरमाया कि "कुएं का जल (संस्कृत) सिर्फ आस-पास की भूमि को ही सींचता है परंतु वर्षा (लोक-भाषा) सारी धरती को तृप्त करती है।" पंडित बोले, "वर्षा की क्या जरूरत है, जब यहां धरती पर पहले से ही इतना पानी है?" गुरु जी ने उत्तर दिया कि "वर्षा के कारण ही धरती पर पानी है। यदि वर्षा न हो तो कुएं भी सूख जाते हैं।"

"अनंदु साहिब" की रचना : मैकालिफ के अनुसार अपने पौत्र के जन्म पर गुरु जी ने 'अनंदु साहिब' की रचना की। मैकालिफ ने संपूर्ण 'अनंदु साहिब' का अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया है।

"अमृतसर" की स्थापना : इसके बाद गुरु जी ने भाई जेठा जी को आज्ञा दी कि एक नये सरोवर और नगर की स्थापना करो। भाई जेठा जी ने गुरु जी की आज्ञा शिरोधार्य करके अमृत-सरोवर का निर्माण करवाया और उसके आस-पास 'अमृतसर' नगर बसाने का उपक्रम किया।

दंत-कथा : बीबी भानी जी को वर : श्री गुरु अमरदास जी द्वारा बीबी भानी जी को वर देने वाली प्रचलित वार्ता (दंत-कथा) का मैकालिफ ने भी वर्णन किया। मैकालिफ लिखता है कि समाधि में लीन गुरु जी के पलंग का पाया अचानक टूट गया। समाधि न टूट जाये, इसलिए बीबी भानी जी ने पाये की जगह अपना हाथ दे दिया। जब गुरु जी उठे तो बीबी भानी जी के कार्य को देख प्रसन्न हुए और वर मांगने के लिए कहा। बीबी भानी जी ने कहा कि गुरिआई मेरी ही कुल में रहे। गुरु जी ने वर तो दे दिया परंतु साथ ही चेता दिया कि कष्ट बहुत सहने पड़ेंगे।

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" कृत भाई संतोख सिंघ के आधार पर श्री गुरु अमरदास जी का जीवन

*-स. कुलदीप सिंघ**

सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन-चरित्र आरंभ में गद्य में जन्म-साखी के रूप में लिखे गये, बाद में लोक-रुचि में परिवर्तन हुआ तथा वीर-रस से प्रभावित होकर जीवन-चरित 'गुर बिलास' के शीर्षक से काव्यबद्ध किये जाने लगे। 'गुर बिलास' की एक दूसरी विधा 'पंथ प्रकाश' के रूप में उभरी, जिसमें सिक्ख धर्म या पंथ के सम्पूर्ण इतिहास को प्रस्तुत किया जाने लगा। महाकवि भाई संतोख सिंघ ने सिक्ख धर्म के सम्पूर्ण इतिहास को दो महाकाव्यों में प्रस्तुत किया। प्रथम महाकाव्य 'नानक प्रकाश' की रचना १८२३ में की। इसमें श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-चरित है। 'नानक प्रकाश' के बाद १२ वर्ष की अनवरत खोज के उपरांत आठ वर्षों में विस्तृत महाकाव्य "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" की रचना की, जिसमें श्री गुरु अंगद देव जी के गुरगद्दी पर विराजमान होने से बाबा बंदा सिंघ बहादर तक के इतिहास को प्रस्तुत किया गया है। यह इतिहास सूरज के प्रकाश के आधार पर तीन मुख्य भागों में है--राशि, ऋतु और अयन। सूरज की १२ राशियों में भ्रमण के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का बाल-लीला तक का वर्णन है। उसके बाद पृथ्वी के द्वारा सूरज की परिक्रमा की छ: ऋतुओं के अनुसार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का वर्णन छ: ऋतुओं में अंकित है तथा अंत में सूरज के प्रकाश के पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रकाश के उत्तर और दक्षिण के अयन के आधार पर दो अयन में चार साहिबजादों और बाबा बंदा सिंघ बहादर का इतिहास है।

"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" की प्रथम राशि में श्री गुरु अंगद देव जी तथा श्री गुरु अमरदास जी का जीवन-चरित है। श्री गुरु अमरदास जी की कथा का औपचारिक आरंभ उनके गुरगद्दी पर विराजमान होने के बाद अध्याय २९ से किया गया है :

अब स्री सतिगुर अमर की कथा कहौं रुचि ठानि।
श्रोता सुनहु प्रसंन है दिहु सिक्खी मुझ दानि ॥१॥
(अंसू २९)

गुरगद्दी से पूर्व का विवरण श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन-चरित से सम्बंधित अध्यायों के अंतर्गत है। श्री गुरु अमरदास जी की सेवा, श्री गुरु अंगद देव जी से मिलन तथा उनके द्वारा श्री गुरु अमरदास जी को बख्शिश का वर्णन चार अध्यायों (१४-१७) में है। श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन की मुख्य घटना श्री गुरु अमरदास जी से मिलन था। इस प्रकार श्री गुरु अमरदास जी के जीवन का कथा-सूत्र आरंभ होता है :

करों निरूपनि अब कथा भल्लयन कुल टीका।
आइ मिले जिस रीति सों सेवन किय नीका।
इक बासर के ग्राम है तहिं बसहि निकेतं।
तेजो छत्री भाग बड निस दिन प्रभु चेतं ॥२॥
(अंसू १४)

श्री गुरु अंगद देव जी की सपुत्री बीबी अमरो जी श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे भाई जस्सो जी की पत्नी थीं। श्री गुरु अमरदास जी

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६*

का गुरबाणी की ओर आकर्षण बीबी अमरो जी द्वारा किए जाते शबद-गायन से हुआ :

हे पुत्री अबि फेर पढ मुझ देहु सुनाई।
मरयो हुतो मैं, सुधा की बूंदै मुख पाई।
करयो जिवावन, सुख दियो इह बडि उपकारा।
सुनि अमरो सुकचति कुछक गुरसबद उचारा ॥८॥
(अंसू १५)

श्री गुरु अमरदास जी घर-परिवार छोड़कर श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा करने लगे। सात वर्ष की सेवा के बाद श्री गुरु अमरदास जी के हृदय में नवीन प्रकाश का आभास हुआ।

श्री गुरु अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी के लिए प्रात: काल नदी से स्नान के लिए जल लाते थे। एक दिन वे जुलाहे की खंदक में गिर गये। जुलाही की नींद खुलने पर उसने गुरु जी को "अमरू निथावां" (बिना घर का 'अमरदास') कहा। गुरु जी के मुंह से अचानक जुलाही के प्रति 'बौरी' शब्द निकल गया तथा वह पागल हो गई। भाई संतोख सिंघ ने श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु अमरदास जी में हुए संवाद का सुंदर वर्णन किया है। श्री गुरु अमरदास जी ने नम्रता से अपना पक्ष प्रस्तुत किया कि उन्हें 'निथावां' कहने पर अपने प्रति रोष नहीं है किन्तु ऐसा कहना गुरु-घर का अपमान है जो उनसे सहन नहीं हुआ :

मोहि निथावां इन कहयो सो साच बखानी।
जब लौ आतम रूप को मन लेय न जानी ॥२०॥
थाउं पाइ करि थिरहि नहिं तब लगौं निथावा।
भटकति म्रिग त्रिशना बिखै कित शांति न पावा।
जब तुमरी सेवा रुचिर किय तरक जुलाही।
सही गई नहिं मोहि ते-बौरी-तब प्राही ॥२१॥
(अंसू १७)

श्री गुरु अमरदास जी के वचन सुनकर श्री गुरु अंगद देव जी का हृदय द्रवित हो गया, उनका हृदय बख्शिश करने को उमड़ पड़ा। श्री गुरु अंगद देव जी का वरदान श्री गुरु अमरदास जी के व्यक्तित्व का दृढ़ आधार बन गया :

तुमहो निथावन थान।
करि हो निमानहिं मान।
बिन ओट की तुम ओट।
निधरेन की धिर कोट ॥२३॥
बिन जोर के तुम जोर।
सम को न है तुम होर।
बिन धीर को बर धीर।
सभि पीर के बड पीर ॥२४॥ (अंसू १७)

श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को अपना उत्तराधिकारी बनाने का निश्चय कर लिया :

तुव तन महिं करि परवेसु।
करने हैं जग काज विसेसु।
इमि प्रसंन इक रूप बनायो।
सतिगुर सेव सकल सफलायो ॥२९॥ (अंसू १७)

श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को खडूर साहिब छोड़कर दूसरे स्थान पर जाने को कहा, क्योंकि उनके पुत्र श्री गुरु अमरदास जी से ईर्ष्या करेंगे :

अबि खडूर को बसिबो छोर।
अपर सथान बास को टोर। . . . ॥३७॥ . . .
दासू दातू सदन रहैंगे।
पिखहिं न तुम इरखा न लहैंगे। . . . ॥४०॥
(अंसू १८)

उन्हीं दिनों देवयोग से गोंदा नामक सिक्ख उपस्थित हुआ तथा नवीन गांव बसाने का आग्रह किया। गुरु जी ने पहले अपने पुत्रों को जाने का आदेश दिया। उनके आज्ञा-पालन न करने पर श्री गुरु अमरदास जी ने आज्ञा-पालन किया और 'गोइंदवाल' नगर बसाया। श्री गुरु अंगद देव जी गोइंदवाल गये और संगत को उपदेश दिया।

श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी प्राप्त

होने से पूर्व एक प्रसंग खडूर साहिब में तपस्वी सम्बंधी है जिसके माध्यम से श्री गुरु अमरदास जी को आध्यात्मिक शक्ति पर संयम बरतने का संदेश दिया गया है। खडूर साहिब में एक तपस्वी गुरमति विचारों का विरोधी था और सन्यास का समर्थक था। उसने वर्षा न होने का आरोप श्री गुरु अंगद देव जी पर लगाया। गुरु जी ने अपने आत्मिक बल को न दिखाकर सामान्य-जन का व्यवहार किया तथा खडूर साहिब छोड़कर बाहर जंगल में रहने लगे। श्री गुरु अमरदास जी ने इसका प्रतिकार किया और आत्मिक बल से वर्षा हुई। जनता के रोष से तपे की मौत हो गई। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को समझाया :

घन बरखाइ तपा मरवायो।
अपन आप को महद जनायो ॥५३॥
सतिगुर को घर है नित नीवा।
होन हंकार थांव नहिं थीवा। . . . ॥५४॥ . . .
कारन करन एक जग नाथा।
करति करावति सो सभि साथा ॥५५॥
अपन आप निज क्रित प्रक्रित महिं।
नहीं अरोपहिं कबि सुधीर लहि।
एकुंकार आसरो करिकै।
नहीं जनावहिं आपा हरि कै ॥५६॥ (अंसू २३)

सतिगुरु के घर का आभूषण 'नम्रता' है, क्योंकि अहंकारी को कोई स्थान नहीं प्राप्त होता। एक जगत का स्वामी सभी प्राणियों के कर्मों का कारण और कर्त्ता है। प्रकृति उसकी आज्ञा से क्रियाशील है। हमें धैर्य रखना चाहिए और अपनी इच्छा को आरोपित नहीं करना चाहिए। अपने अहंकार को छोड़कर हमें उस एक प्रभु का भरोसा करना चाहिए।

श्री गुरु अंगद देव जी श्री गुरु अमरदास जी से मिलने गोइंदवाल गये। उनका मिलन श्री गुरु अमरदास जी के साथ रास्ते में हुआ। उक्त दृश्य का भावपूर्ण वर्णन भाई संतोख सिंघ ने इस प्रकार किया है :

पकरि भुजा गर संग लगाइव।
दुहदिस प्रेम अधिक उमगाइव।
कर सों कर गहि करि पुन चले।
ग्यान विराग मनहु दो मिले ॥११॥ (अंसू २५)

वास्तविक मिलन आत्मा की पहचान से होता है। हमारे शरीर अलग-अलग हैं, किंतु हमारी आत्मा एक है। हे अमरदास! तुम मेरा ही रूप हो। हम में और तुम में भेद नहीं है। हमें शरीर और आत्मा के सम्बंध में वास्तविक ज्ञान न होने से शरीर से आसक्ति होती है। शरीर से पहले आत्मा की स्थिति और शरीर के नाश की अंतिम स्थिति को जानने से हम संसार में शरीर सहित स्थिति को समझ सकते हैं :

देहनि केर सनेहु अछेहा।
मिथ्या अहै न राखहु एहा।
आदि अंत जो नहि पय्यति।
मध्य सत्य सो कैसे लहियति ॥१८॥ (अंसू २५)

देह के पांच तत्व जन्म के पूर्व दिखाई नहीं देते, बीच में शरीर धारण करने पर दिखाई देते हैं। पुन: निधान होने पर देह का स्वरूप दिखाई नहीं देता। यह स्वाभाविक है और हमारे दुख का कारण नहीं होना चाहिए।

श्री गुरु अंगद देव जी ने बाबा अमरदास जी को आदर्श चरित्र प्रस्तुत करने का उपदेश दिया :

भगति बिथारहु संगति मांहू।
चलहि सिक्ख पिख करि तुम राहू। . . . ॥२४॥
कीनि आपने सद्रिस क्रिपाला।
जिमि मसाल ते जगहि मसाला। (अंसू २५)

गुरगद्दी पर विराजमान होने पर श्री गुरु अमरदास जी का जीवन सरल और सात्विक था, एक पंक्ति में बैठकर परसादा ग्रहण करने

का विधान था। गुरु जी स्वयं बिना लवण के अल्पाहार करते थे :

आबिम बरन बिचार नहिं इक पंकति बैसें।
सुंदर बिसद मराल सभि इकसम ह्वै जैसे ॥१४॥
लवन बिना हुइ ओगरा सतिगुर सों खावैं।
अलप अचहिं, रहि छुधा जुति, नहिं उदर भरावै ॥५॥ (अंसू ३०)

भाई संतोख सिंघ ने लवण रहित भोजन का वर्णन सम्राट अकबर के द्वारा श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन के समय किया है। चित्तौड़गढ़ की विजय के बाद सम्राट अकबर ने गुरु जी के दर्शन किये तथा गुरु जी के आहार (लंगर) को ग्रहण करने की प्रार्थना की :

कर जोरति कहि मिहर करीजहि।
वही तवर्रक मुझ को दीजहि। . . . ॥५४॥ . . .
दरशन पाइ भयो मैं धंन।
देहु तवर्रक होहुं प्रसंन। . . . ॥५५॥ . . .
जनम धार जो स्वाद न पायो।
लवन बिहीन ओगरो खायो ॥६०॥ (अंसू ६३)

श्री गुरु अमरदास जी स्वभाव से सहनशील थे। श्री गुरु अंगद देव जी के पुत्र दातू ने श्री गुरु अमरदास जी को लात मारी। गुरु जी ने रोष नहीं किया और गोइंदवाल से गांव बासरके चले गए। संगत बाबा बुड्ढा जी को साथ लेकर गुरु जी को वापस लाई।

गुरु जी का सद्व्यवहार में दृढ़ विश्वास था। ग्राम डल्ला में पारो तथा अन्य सिक्खों के प्रति उपदेश में इसका विस्तार से वर्णन है। सिक्खों से परोपकार, त्याग तथा प्रेम-भक्ति की चर्चा की तथा तुर्कों के दुर्व्यवहार के बदले सद्व्यवहार का उपदेश दिया :

जे काहू को बुरा करावै।
तो क्या करै? कहो सुखदावै!
भला करै जो बुरा करावै।
बदला लेवन ते हटि जावै ॥४२॥ . . .
जैसी करै सु तैसी पावै।
गुर सथान नीवो ब्रिधावै।
स्री परमेसुर है समरत्थ।
संतन को राखति दै हत्थ ॥४४॥ (अंसू ३८)

श्री गुरु अमरदास जी नम्रता के साथ निर्भयता के भी पक्षधर थे। सम्राट अकबर के मंत्री बीरबल ने 'कर' के रूप में अहंकार से धन की मांग की तथा गुरु-घर की महिमा नहीं समझी। सम्राट अकबर ने बीरबल को युद्ध में भेजा जिसमें बीरबल की मृत्यु हो गई। श्री गुरु अमरदास जी का वचन सत्य हो गया :

बरफ संग तिह ठां गर जाइ।
हंकारी नहिं जीवन पाइ ॥६९॥ (अंसू ४१)

श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल नगर बसाने के बाद नगर में जल-व्यवस्था के लिए बाउली का निर्माण कराया। जब बाउली का खनन हो रहा था तो उसमें एक मजबूत चट्टान थी जिसका भेदन करना कठिन था। भाई संतोख सिंघ ने चट्टान-छेदन के कार्य का समय एक किवदंती के अनुसार ऐतिहासिक घटना से जोड़ दिया है। अकबर बादशाह ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की तथा चित्तौड़गढ़ की विजय के लिए गुरु जी का आशीर्वाद मांगा। गुरु जी ने बताया कि जब बाउली में खुदाई का कड़ टूटेगा तभी चित्तौड़ पर विजय होगी। गुरु जी ने खुदाई वालों को सावधान किया कि कड़ तोड़ने का कार्य जान जोखिम का है। कड़ तोड़ने का कार्य माणिक चंद कर रहा था। उससे पत्थर नहीं टूटा। तब गुरु जी ने हथौड़े से कड़ तोड़ा। बाउली में जल भर गया। भाई माणिक चंद के नाम का उल्लेख भाई गुरदास जी ने अपनी वार में चौथे गुरु के सिक्खों के अंतर्गत किया है तथा वो गोइंदवाल के समीप ग्राम वैरोवाल का निवासी था। चित्तौड़गढ़ की विजय और कड़ टूटने का कार्य एक ही दिन

हुआ। चित्तौड़गढ़ की विजय २४ फरवरी, १५६८ को हुई, इस प्रकार बाउली निर्माण का कार्य भी फरवरी १५६८ में पूरा हुआ।

वर्तमान खोज के अनुसार बाउली-निर्माण का समय १५५९ माना जाता है। भाई माणिक चंद को गुरु जी की कृपा से अचेत अवस्था से जीवन-दान मिला। उसे एक 'मंजी' की सेवा सौंपी गई तथा वैष्णव माईदास को गुरमति में शिक्षा हेतु सौंपा गया।

श्री गुरु अमरदास जी गुरु-ज्योति के रूप में भाई संतोख सिंघ के आराध्य थे। आराध्य के प्रति पूर्ण प्रेम और समर्पण आवश्यक है। इस सम्बंध में वैष्णव सज्जन माईदास का प्रसंग उल्लेखनीय है। माईदास ने श्री गुरु अमरदास जी पर श्रद्धा न करके द्वारिका की ओर प्रस्थान किया तब उसे अदृश्य रूप में विष्णु ने समझाया कि वह श्री गुरु अमरदास जी की प्रभु की ज्योति के रूप में आराधना करे:

अद्रिश ह्वै करि स्री भगवान।
हित कल्लयान सु करयो बखान।
माईदास भगत तूं मेरा।
सहत प्रेम बैराग बडेरा ॥३८॥
इक अपराध आपनो सुनो।
जहां प्रेम तहिं नेम न गुनो।
जहां नेम तहिं प्रेम न पूरा।
यांते रहयो रिदे महिं ऊरा ॥३९॥ . . .
स्री गुर अमर मोहि महिं कोऊ।
भेद न जानहु इक लखि सोऊ . . . ॥४३॥
(अंसू ५२)

माईदास व्याकुल होकर वापस आया। श्री गुरु अमरदास जी का स्वरूप देखकर मग्न हो गया। हे प्रभु! तुमने सिक्ख-मर्यादा की नई रीति का विस्तार किया है, जिसके धारण करने से मनुष्य दुखों से पार हो जाता है :

नई रीति सिक्खी बिथारी उदारी।
लई धार जांही भए दुख्य पारी ॥२१॥
सदा जै, सदा जै, सदा जै गुसांई।
मया कीनि मो पै सु लीनो बचाई।
गोबिंदे, मुकंदे, अनंदे, अनूपे।
नमसतं नमसतं समसतं सरूपे ॥२२॥ (अंसू ५३)

श्री गुरु अमरदास जी के द्वारा कुरुक्षेत्र, ज्योतिसर (गीता-उपदेश का स्थान), थानेसर (नारायाण कथा से सम्बंधित) तीर्थों की यात्रा का उल्लेख किया गया है। कवि ने यमुना नदी की मिथिक कथाओं का वर्णन किया है। तीर्थ-यात्रा का वर्णन भाई संतोख सिंघ के मिथिक ज्ञान का परिचायक है। यात्राओं का सम्बंध तत्कालीन सम्राट अकबर की सर्वधर्म सम्मान की भावना से जोड़ा गया है। भाई संतोख सिंघ ने गुरु के चरण और उपदेश को तीर्थों से पवित्र बताया है। तीर्थों का कष्ट (पाप या मलिनता का प्रदूषण) गुरु जी के पावन चरणों से दूर हो गया:

पापनि से पीड़ति हम होए।
करि करि दोसु हमहुं महुं धोए ॥७॥
हे सतिगुर तुमरे पग पावन।
जबि हम बिखै करहुगे पावन।
ततछिन हम सभि होहिं सुखारे।
आवहु तूरन करुना धारे ॥८॥ (अंसू ४५)

बाउली के पवित्र जल की महिमा का उल्लेख किया गया है। एक तपस्वी को श्री गुरु अमरदास जी से मुक्ति मिलने का वरदान था। योगी को मुक्ति मिली और उसने 'अनंद' के नाम से गुरु जी के पौत्र के रूप में जन्म लिया। द्वितीय पुत्र बाबा मोहन के संतान नहीं थी। गुरु जी के वरदान से संसराम का जन्म हुआ। कुछ दिनों बाद बाबा मोहन की पत्नी की मृत्यु हो गई। गुरु जी ने पौत्र संसराम को बाणी का व्याख्याता होने का वरदान दिया :

प्रिथम गुरू की जेतिक अहै।

स्री अंगद गुर अमर जु कहै ॥५४॥
सभि बानी को लिखहि बनाइ।
समझहि अरथ महां सुख पाइ। (अंसू ५९)

सिक्ख गुरु साहिबान में श्री गुरु अमरदास जी की आयु सबसे अधिक है। वे प्रथम गुरु जी से १० वर्ष छोटे थे तथा द्वितीय गुरु श्री गुरु अंगद देव जी से २५ वर्ष बड़े थे। श्री गुरु अमरदास जी ७३ वर्ष की आयु में गुरगद्दी पर आसीन हुए। वृद्धावस्था में उनकी पुत्री बीबी भानी ने उनकी सेवा की। स्नान कराते समय जब चौकी का एक पाया टूट गया तो बीबी भानी जी ने अपने पांव का सहारा दिया। गुरु जी ने जब यह दृश्य देखा तो बीबी भानी जी की सेवा से प्रसन्न हुए। श्री गुरु अमरदास जी ने बीबी भानी जी को उनके घर पौत्र रूप में मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के जन्म होने का वरदान दिया:

सुनि तनुजा के बचन सुहाए।
पिख दुसकरम कीनि जिसु भाए ॥३८॥
हुइ प्रसंन बर दयो सुजाना।
संतति तेरी बधै महांना।
आगे बंस बिखै निपजैहैं।
महां बली से जग महिं है हैं ॥४०॥
शसत्र गहैं दुषटन को घावहिं।
अपनो अधिक प्रताप बधावहिं।
परम धरम पीरी अरु मीरी।
धरहिं आप दे अपर तगीरी ॥४१॥ (अंसू ६५)

'सूरज प्रकाश' ग्रंथ में लिखा हुआ है कि श्री गुरु अमरदास जी की निर्धारित आयु १०१ वर्ष थी। उन्होंने श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी सौंप दी। उनके परलोक-गमन के समय श्री गुरु रामदास जी, ईर्ष्या से रहित मोहरी जी, बाबा बुड्ढा जी तथा खेड़ा निवासी सिक्ख भाई बल्लू ने पार्थिव शरीर को उठाया।

इस प्रकार प्रथम राशि के ६८ अध्यायों में श्री गुरु अंगद देव जी (१-२८) तथा श्री गुरु अमरदास जी की कथा निर्विघ्न समाप्त हुई। (६८/६१) विनम्रता के स्वरूप श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्ख धर्म के विकास और समाज के उत्थान में योगदान दिया :

गुर सथान नीवो ब्रिधावै। (अंसू ३८:४४)



मैकालिफ कृत श्री गुरु अमरदास जी का जीवन-वृत्तांत *(पृष्ठ २८ का शेष)*

भले ही उपरोक्त दंत-कथा गुरमति सिद्धांतों की कसौटी के अनुसार पूर्णत: खरी साबित नहीं होती है मगर इस दंत-कथा और अनेक कई आई साखियों से इतना अवश्य प्रतीत होता है कि मैकालिफ को सिक्ख-परंपरा में प्रचलित विभिन्न दंत-कथाओं का भी गहरा ज्ञान था।

गुरु जी का ज्योति-जोत समाना : तीसरे पातशाह ने भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) को सभी प्रकार से पूर्ण जानकर गुरगद्दी सौंपी। बाबा बुड्ढा जी ने परंपरा अनुसार श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी पर बैठाते समय सारी रस्में पूरी कीं। मैकालिफ के अनुसार भादों सुदी त्रैदश, संवत् १६३१ मुताबिक सन् १५७४ ई को भाई जेठा जी चौथे गुरु "श्री गुरु रामदास जी" के रूप में गुरगद्दी पर विराजमान हुए।

मैकालिफ लिखता है कि जिस प्रकार बादशाह अपने राज का प्रबंध करता है उसी प्रकार गुरु जी ने सिक्ख धर्म की बादशाही को २२ मंजियों में बांटा हुआ था। श्री गुरु अमरदास जी २२ बरस आत्मिक राज्य करने के बाद सन् १५७४ ई में ज्योति-जोत समाये।



"बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का" में
श्री गुरु अमरदास जी सम्बंधी विवरण पर एक नज़र

*-बीबी अमरजीत कौर**

"बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का" भाई केसर सिंघ छिब्बर द्वारा लिखित कृति है। इसमें लेखक ने श्री गुरु अमरदास जी के जीवन की साखी बहुत सुंदरता से निरूपित की है। "दस गुरु-एक ज्योति" के सिद्धांत को मानते हुए भाई केसर सिंघ ने श्री गुरु अमरदास जी को गुरु नानक साहिब का तीसरा जामे का रूप कहा है।

लेखक ने सर्वप्रथम गुरु साहिब की पारिवारिक पृष्ठभूमि बताते हुए उनके पूर्वजों के निवास और व्यवसाय की जानकारी दी है। भाई केसर सिंघ के अनुसार आपका जन्म १८ बैसाख, १५६६ वि: (अधिकतर स्रोतों में १५३६ वि:) को गांव बासरके में, पिता श्री तेजो के घर माता लखो जी की कोख से हुआ। 'बंसावलीनामा' में लिखे अनुसार गुरु साहिब के पड़दादा जी का नाम विशना भल्ला था जो कि दुकानदारी करते थे। श्री विशना भल्ला के घर पुत्र हरि जी का जन्म हुआ। फिर आगे चलकर श्री हरि जी के घर में भाई तेजो जी का जन्म हुआ।

'बंसावलीनामा' में लिखे अनुसार गुरु साहिब का परिवार धर्म-कर्म में गहरा विश्वास रखता था। भाई केसर सिंघ गुरु साहिब के जन्म के उपलक्ष्य में इस प्रकार बताते हैं :

बहुड़ संमत बीते पंद्रां सै खट-सठि।
दिन वैसाख गए दस-अठ।
माता लखो दे उदरों चानणे पक्ख।
जनमे स्री अमरदास पूरन प्रतक्ख।९।

आपका परिवार जल्द ही गोइंदवाल आकर बसने लग गया। संवत् १५८९ में आपका विवाह बीबी मनसा देवी के साथ हुआ तथा आप भी दुकानदारी करने लग गए :

संमत पंद्रां सै इक घटि नब्बे।
बिआह कीता अमरदास जी तबे।
माता मनसा देवी जी धाम आए।
अमरदास जी किरत हट्टी दी कमाए।११।

आपके घर बीबी भानी जी का जन्म १५९० वि: (१५२३ ई), ४ ज्येष्ठ रविवार को हुआ। आपका बड़ा पुत्र नंद जी, १५ चैत्र, १५९३ वि: (१५३६ ई) को और छोटा पुत्र बाबा मोहरी ५ आषाढ़, १५९६ वि: (१५३९ ई) को पैदा हुए।

बाबा अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने से पूर्व सालग्राम की पूजा किया करते थे और शास्त्रों के अनुरूप जीवन-यापन किया करते थे। 'बंसावलीनामा' से यह भी पता चलता है कि पिता जी के परलोक सिधारने के बाद आप अस्थियां जल-प्रवाह करने हेतु हरिद्वार गये थे। हरिद्वार से वापस आते हुए ही आपका मिलाप बाबा श्रीचंद जी के एक शिष्य श्री हरी राम के साथ हुआ। लिखा है:

मारग विच इक मिलिआ फकीर।
हरी राम नाम जिस दा श्रीचंद साहिब गुर पीर।
सो बाबे नानक जी दी पढ़े बाणी।
अमरदास जी दी सुण के बुधि विकाणी।१४।

श्री हरी राम से गुरु नानक साहिब की बाणी सुनकर बाबा अमरदास जी के मन में गुरु-दर्शन की अभिलाषा जाग उठी, परंतु गृहस्थ की जिम्मेदारियों के कारण आपकी यह इच्छा

**सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*

पूरी न हो सकी। संवत् १५९८ में गुरु अंगद साहिब की सपुत्री बीबी अमरो जी, जो कि आपके शरीके अथवा पारिवारिक दायरे में ही ब्याही हुई थी, से गुरबाणी सुनकर आपका हृदय द्रवित हो उठा। गुरु-चरणों के साथ लगने की चाहत एक बार पुन: प्रबल हो उठी।

संवत् १६०१ में आपको श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने का अवसर मिला। गुरु जी ने बाबा अमरदास जी को लंगर की सेवा बख्श दी। भाई केसर सिंघ के अनुसार आपने संवत् १६०२ (१५४५ ई) में अपनी सपुत्री बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी के साथ कर दिया। बाबा नंद जी का विवाह संवत् १६०३ (१५४६ ई) में हुआ।

'बंसावलीनामा' में भाई केसर सिंघ एक व्यथा भी सुनाते हैं जो गुरु-घर के नियमों पर खरी नहीं उतरती कि एक माता (वृद्ध स्त्री) थी। उसके पुत्र की मृत्यु हो गई थी और गुरु साहिब ने उसका विलाप देख-सुन कर द्रवित होकर सहज-स्वभाविक ही उसके पुत्र को जीवित कर दिया था।

'बंसावलीनामा' में एक तपे की साखी भी अंकित है। इसके अनुसार १६०५ वि: में सूखा पड़ा हुआ था। खडूर का एक तपा था जो कि किसानों (जट्ट) को अपने पीछे लगाये बैठा था कि तुम यदि श्री गुरु अंगद देव जी को निकाल दें तो यहां वर्षा हो जाएगी। यह बात सुनकर बिना किसी विवाद में पड़ते हुए गुरु साहिब वहां से चले गए, परंतु तपा वर्षा न करवा सका। बाबा अमरदास जी ने सहज-स्वाभाविक ही वचन किये कि इस तपे को जिस खेत में ले जाओगे वहां ही वर्षा होने लग जाएगी। लोगों ने अपने निज स्वार्थ की पूर्ति करते हुए तपे की ऐसी खींचा-खींची की कि उसकी मृत्यु हो गई।

भाई केसर सिंघ गुरु साहिब के कुरुक्षेत्र जाने का जिक्र भी करते हैं। यहां गुरु साहिब का उद्देश्य तीर्थ-यात्रा अथवा इसके फल को प्राप्त करने से नहीं था, बल्कि आप जी तो संगत को तीर्थ के वास्तविक महत्व के असल अर्थ समझाना चाहते थे। यात्रा से होकर आप अमृतसर आ गए। फिर आपने गोइंदवाल में आकर बाउली बनवाई।

'बंसावलीनामा' में एक ऐसे तपस्वी की साखी लिखी है जो कि श्री हरिमंदर साहिब वाली जगह पर त्रेता युग से तप कर रहा था। 'बंसावलीनामा' में यह साखी भी लिखी हुई है कि एक बार आपके सपुत्र श्री (गुरु) अरजन देव जी आपके पलंग के नीचे खेनू (देसी गेंद) निकालने के लिए चले गए और निकालते समय पलंग हिला दिया। तब गुरु साहिब ने यह वचन किया कि 'अरजन' (श्री गुरु अरजन देव जी) बहुत भारी पुरख है, जो सब लोकाई (जनसाधारण) की अगुआई करेगा :

बचन कीता : इह बडा पुरख है भारी।
इन मंजी हिलाई असाडी सारी। . . .।६४।

भाई केसर सिंघ बताते हैं कि गोइंदवाल साहिब रहते हुए गुरु साहिब का मरवाहे तपे के साथ भी विवाद हुआ। यह सूचना भी मिलती है कि बादशाह अकबर भी गुरु अमरदास साहिब के दरबार में आया। गुरु साहिब के रूहानी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर बादशाह अकबर ने कुछ जमीन भी गुरु-घर के नाम लगवाई। इसके अनुसार साढ़े बारह गांव पट्टी के तपे में से प्राप्त होते हैं :

तां ते जिमी कछु लई लिखाई।
पट्टी का तपा तिस विचों दिवाई।
गांउं साढे बारां आए विचि।
सो एनहां वक्खरे कढि लीते पटी विचों खिचि।६८।

ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु अमरदास जी ने बाबा मोहरी और बाबा मोहन एवं संगत

को बुला कर गुरिआई भाई जेठा जी को देने का निर्णय किया। तभी बीबी भानी जी ने पिता जी के पास विनती की कि पिता जी! यह गुरिआई आज से सोढियों के घर ही रहे। गुरु साहिब ने बीबी भानी जी की यह विनती स्वीकार की। ऐतिहासिक व गुरमति पक्ष से यह बात सत्यापित नहीं होती, क्योंकि गुरिआई की बख्शिश के लिए शर्तें पारिवारिक या सांसारिक सम्बंध नहीं बल्कि गुरु-घर के नियमों का धारक होना आवश्यक है। भाई केसर सिंघ इसके बारे में इस प्रकार लिखते हैं :

बचन मंनि मोहरी उठि पैरीं पिआ।
टिक्का गुरिआई दा रामदासै लिआ।
भानी उठि कीती अरदास।
खड़ी होइ पिता दे चरनां पास।८३।
हे जगत पिता! सुन बेनती मेरी।
एह सभ वडिआई है दित्ती तेरी।
जे दिती ही ता सुदित करि देहि।
सोढीआं दे घरों फेरि मोड़ि न लेह।८४।
बचन कीता : "घरि तेरे ही रही।"
समें चलाणे दे साहिब एह कही। . . .

संवत् १६३१ (१५७४ ई) को भादों की पूर्णिमा को ९५ वर्ष की आयु में श्री गुरु अमरदास जी ज्योति-जोत समा गए। भाई केसर सिंघ इसके बारे में इस प्रकार विवरण प्रस्तुत करते हैं :

संमत सोलां सै इकत्री चलाणा कीता।
भाद्रों सुदी पंद्रस मारग गुरपुरि दा लीता।८५।
पैंहठ साल जगत मो रहे।
बरस साडे इक्की गुरू सिंघासनि बहे।
खट मास समाधि करि रहे नदी किनारे।
अट्‌ठ-नउं बरस कीती टहिल गुरदुआरे।८६।

गुरु साहिब ने समस्त जीवन जनसाधारण को स्वार्थ से रहित होकर प्रभु-सिमरन में जुड़ने का संदेश दिया। 'बंसावलीनामा' के एक अध्याय में श्री गुरु अमरदास जी के व्यक्तित्व के दो पक्ष सामने आते हैं। एक तो उनके जीवन का वह पड़ाव है जो उन्होंने गुरु नानक पातशाह के घर से अलग रह कर व्यतीत किया अर्थात् जब अभी उनका मिलाप श्री गुरु अंगद देव जी के साथ नहीं हुआ था। दूसरा पड़ाव वह है जब गुरु साहिब स्वयं को पूर्णत: गुरु-घर को समर्पित कर चुके थे और बाद में आप जी को गुरुआई भी प्राप्त हुई।

अपने जीवन के प्रथम पड़ाव में श्री गुरु अमरदास जी को सालिग्राम की पूजा करने वाले और तीर्थों तथा अन्य हिंदू-रीतियों की पूर्ति करने वाले जिज्ञासु बताया गया है, परंतु एक जिज्ञासु होने के कारण आपकी जिज्ञासा इन कर्मकांडों से आगे जाकर अंतिम सत्य को प्राप्त करने की थी। आध्यात्मिक रुचि होने के साथ-साथ आप एक सुशील गृहस्थी भी थे। आपने अपने परिवार के प्रति अपने सभी कर्त्तव्य अच्छी प्रकार से निभाये।

अपने मन की विह्वलता के कारण आपने कई तीर्थों का रटन किया परंतु कहीं से भी संतुष्टि न मिलने के कारण आप सच्चे 'गुरु' की तलाश में लग गए। हरिद्वार से वापसी पर श्री हरी राम के साथ हुई भेंट और बाद में बीबी अमरो जी से गुरु नानक पातशाह की बाणी सुनकर आपका जीवन परिवर्तित हो गया। आप तन-मन से गुरु-घर की सेवा में लग गए। आप सच्चे सेवक और परमात्मा का नाम-सिमरन करने वाले थे। गुरु नानक पातशाह के घर में आपको अटूट विश्वास था। श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा में आप हर पल तत्पर रहते थे और उनका हरेक वचन मानते थे। आप जी अकाल पुरख की रजा में रहने वाले पक्के गुरसिक्ख थे। गुरु-रूप में परिपक्व हुआ आपका

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

"महिमा प्रकाश" में श्री गुरु अमरदास जी की उपमा

*-बीबा किरनदीप कौर**

"महिमा प्रकाश" कृत सरूप दास भल्ला अट्ठारहवीं सदी का बहुत महत्वपूर्ण स्रोत है। "महिमा प्रकाश" रचना के दो भाग हैं जो कि काव्य रूप में मिलते हैं। सिक्ख साहित्य के इतिहास में "महिमा प्रकाश" का विशेष स्थान है। इस रचना में गुरु साहिबान से संबंधित साखियां अंकित हैं। पहले भाग में गुरु नानक साहिब से संबंधित साखियां और दूसरे भाग में गुरु अंगद साहिब से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक साखियां अंकित हैं और एक साखी बाबा बंदा सिंघ बहादर के बारे में भी अंकित है।

"महिमा प्रकाश" के दूसरे भाग में श्री गुरु अमरदास जी के जीवन से संबंधित ३२ साखियां "साखीआं पातशाही तीजी" शीर्षक तले दर्ज हैं। इन साखियों में गुरु साहिब के जीवन, व्यक्तित्व तथा अन्य घटनाओं के बारे में पता चलता है, परंतु "साखीआं पातशाही दूजी" के अंतिम चरण की साखियों में श्री गुरु अमरदास जी के जीवन सम्बंधी विवरण मिलते हैं। श्री सरूप दास भल्ला के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी का जन्म बासरके गिल्लां, जिला अमृतसर में बाबा तेजभान भल्ला जी के घर में हुआ :

प्रगट गाउ बासरकी आह।
बाबे तेजो रहै तिह माह।
भल्ले बस बतै है सिध।
सुतहसिध धीरज सत बुध।२।
(साखी ९, पृष्ठ १०६)

श्री गुरु अमरदास जी बाबा तेजभान भल्ला जी के सबसे बड़े सपुत्र थे। श्री गुरु अमरदास जी की दो सपुत्रियां--बीबी दानी जी और बीबी भानी जी तथा दो सपुत्र--बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी हुए। बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) के साथ और बीबी दानी जी का विवाह सूरी खत्री भाई रामा जी के साथ हुआ था :

सूरी कुल रामा तिह नामु।
तिन सुता बडी बिआही सत काम।
हरिदास तने सोढी कुल चार।
जेठा नाम भगत अवतार। (पृष्ठ १०६)

व्यवहारिक जीवन तथा तीर्थ-यात्रा : बाबा अमरदास जी कृषि का व्यवसाय करते हुए साथ ही प्रत्येक वर्ष गंगा की यात्रा भी अवश्य करते थे :

गंगा का सेवन कीआ निहकाम भगत मन सार।
अत सुच पवित्र जात्रा करे निरालंभ सुख सार।
(पृष्ठ १०६)

बाबा अमरदास जी ने १९ बार गंगा की यात्रा की। बीसवीं बार जब वापस लौट रहे थे तब आपको रास्ते में मिहड़ा नामक गांव में दुरगो ब्राह्मण ने आपके चरणों में पदम चक्र का निशान देखा तो अपनी विद्या अनुसार आपको कोई चक्रवर्ती राजा या कोई अवतार रूप होने के बारे में बताया:

इह कोऊ अवतार अथवा होवै राजा चक्रव्रत।
है छत्री कुल सुभचार ता सो लेवो बचन अब।
(पृष्ठ १०७)

**सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*

इसके पश्चात आगे चलते हुए रास्ते में आपकी किसी ब्रह्मचारी के साथ भेंट हुई जो कि बाबा अमरदास जी को उनके 'गुरु' के बारे में पूछता है तो बाबा अमरदास जी ने कहा कि मैंने तो आज तक कोई 'गुरु' धारण नहीं किया। यह सुनकर ब्रह्मचारी ने उनके हाथों से कुछ भी ग्रहण करने के इंकार कर दिया क्योंकि वे 'निगुरे' जो हुए :

तुम किसु गुर-ग्रिह के सेवक अहो।
यत ब्रितंत दिआल मुहि कहो।
यह बचन दिआल ताह को कहा।
मै अब लग गुर खोजत रहा। (पृष्ठ १०७)

इस सारी घटना के बाद आपके मन में 'गुरु' ढूंढने की अभिलाषा जागृत हो गई। बाबा अमरदास जी फिर परमात्मा की आराधना में लीन हो गए।

गुरु-मिलाप तथा सेवा-भावना : बीबी अमरो जी, जो कि गुरु अंगद साहिब की सपुत्री और आप जी के भतीजे की सुपत्नी थीं, एक दिन उनके मुख से गुरु नानक साहिब की बाणी की अमृत-ध्वनि सुनी। उस मीठी बाणी से आप बहुत प्रभावित हुए। यह शबद इस प्रकार है :

करणी कागदु मनु मसवाणी
बुरा भला दुइ लेख पए ॥
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ
तउ गुण नाही अंतु हरे ॥ (पन्ना ९९०)

उपर्युक्त शबद सुनकर आप जी की समस्त चिंता मिट गई, जैसे तड़पते हुए चात्रिक को स्वांति बूंद प्राप्त हो गई हो। बीबी अमरो जी से बाबा जी को पता चला कि यह शबद उनके पिता अर्थात् गुरु अंगद साहिब के दरबार में भाई बलवंड रबाबी ने गायन किये थे। इन शबदों का आप पर बहुत प्रभाव पड़ा जैसे मूर्छित हुए लक्ष्मण पर संजीवनी बूटी का पड़ा था। बाबा अमरदास जी के हृदय में अब गुरु अंगद साहिब को मिलने की अभिलाषा जागृत हो गई। आप बीबी अमरो जी को साथ लेकर गुरु-दरबार में पहुंच गए। इस प्रकार गुरु अंगद साहिब के दर्शन-दीदार करके आप उनके पास ही सेवा करते हुए रहने लग गए। बाबा अमरदास जी ने बारह वर्ष गुरु जी की बिना किसी स्वार्थ से सेवा की। आपको सेवा करते हुए अपने आप की भी सोझी न रही :

इत बिध दुआदस बरख बिताए।
तन वही बसत्र जो पहरे आए।
देह बिवहार की सुध नही रही।
गुर मूरति हिरदे द्रिड़ भई। (पृष्ठ ११२)

बाबा अमरदास जी नित्य प्रतिदिन प्रात: काल गुरु साहिब के स्नान के लिए दरिया ब्यास से जल की गागर भर कर लाते रहे। प्रतिदिन की तरह एक दिन मौसम खराब होने के बावजूद भी जल लेने गये तथा रास्ते में जुलाही (बुनकर) स्त्री द्वारा गाड़ी खूंटी के साथ ठोकर खाकर चोट लग गई। जुलाही स्त्री ने आपको "अमरू निथावां" कह कर संबोधित किया। जब यह बात गुरु अंगद साहिब को पता चली तो उन्होंने बाबा अमरदास जी को "निथांविआं दा थां, निमाणिआं दा माण, निओटिआं दी ओट" होने के वरदान दिये :

तुम हो निथावे थाउ। देहो निमाने मान।
निह-ओट ओट तुमार। निधरिआ धिर सुख-सार। (पृष्ठ ११४)

गुरु अंगद साहिब आप जी द्वारा कमाई सेवा तथा सेवा-भावना से बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने आपको गुरिआई दी। संगत में कहा कि ये मेरा ही रूप हैं, हमारे बीच कोई अंतर नहीं। इस प्रकार जो शिक्षा गुरु नानक साहिब ने भाई लहिणा जी को दी गुरु अंगद साहिब ने

वही बाबा अमरदास जी को भी दी तथा समस्त संसार का कल्याण करने का उपदेश दिया :

जो गुरू बाबे जी हम सो कही।
सो हमरे चित मो द्रिड़ रही।
वही बचन तुम सो अब भाखो।
धर गुरमुख पंथ नीव सचु राखो। (पृष्ठ ११५)

गुरिआई के बाद का जीवन : गुरगद्दी की प्राप्ति के पश्चात आप गोइंदवाल जाकर रहने लगे। नित्य-प्रतिदिन वहां कीर्तन तथा गुरमति विचारों का प्रवाह चलता रहता, जरूरतमंदों की सहायता की जाती तथा सब संगत के मनोरथ पूरे किये जाते। लंगर भी सदैव चलता रहता। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाता था चाहे धनवान हो या निर्धन। भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी भजन-कीर्तन के द्वारा सब संगत को निहाल करते।

यहीं श्री गुरु अमरदास जी ने संगत के लिए एक बाउली का निर्माण कराया :

खोदै सिख बावली कूप।
पावन तीरथ परम अनूप।
कारन भगत प्रतिगआ धरी।
गुर अमर दिआल दइआ जग करी।
(पृष्ठ २०५)

श्री सरूप दास भल्ला के अनुसार गुरु अपने आप में तीर्थ है। गुरु जी ने विभिन्न स्थानों पर जाकर लोगों को बाणी के साथ जोड़ा। गुरु जी ने यमुना और गंगा तीर्थों पर लोगों पर लगने वाले टैक्स से उन्हें मुक्त कराया।

अकबर बादशाह गुरु साहिब को मिलने के लिए आया। उसने गुरु जी को अपनी विजय के लिए वर देने के लिए विनती की। जब उसको विजय प्राप्त हुई तो वह बहुत प्रसन्न हुआ :

फजल करै जब पाक खुदाइ।
करे दीदार ऊहा तब जाइ।
अकबर के मन में यह बसी।
सतिगुर प्रीत चित मो रसी। (पृष्ठ २०९)

अकबर ने गुरु साहिब को जमीन भेंट करनी चाही परंतु आपने अस्वीकार कर दी। गुरु जी के सिक्ख बलू ने यह जमीन ले ली, जिसका बयान "महिमा प्रकाश" में मिलता है :

बादसाह बिनती पुन कीनी।
तब सतिगुर तिसे तसल्ली दीनी।
कछ कु भूम बलू मंग लई।
लिख बादसाहि आइस कर दई। (पृष्ठ २५६)

"महिमा प्रकाश" में गुरु जी से संबंधित अन्य घटनाओं, जैसे श्री आनंद भगत, बीबी भानी जी को वर देना, भाई पारो, भाई जेठा जी तथा भाई रामा जी के थड़ा बनाने वाली साखी के अतिरिक्त सावन मल भल्ला, हरीपुर रियासत का राजा रामचंद, डल्ला निवासी पारो, सुलतानपुर से महेशा, भिक्खा भट्ट, बैसनो माई दास, गंगू शाह, प्रेमा खत्री, बेनी पंडित आदि सब गुरु जी की शरण में आये थे।

ज्योति-जोत समाना : श्री गुरु अमरदास जी ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व गुरतागद्दी श्री गुरु रामदास जी को बख्श दी, जिसका विस्तार सहित वर्णन "महिमा प्रकाश" की साखी नं: ३२ में दिया गया है। श्री सरूप दास भल्ला द्वारा लिखे अनुसार श्री गुरु अमरदास जी २२ वर्ष, ५ माह, ११ दिन गुरतागद्दी पर विराजमान रहे। संवत् १६३१ भाद्रपद सुदी पूर्णिमा, मंगलवार को गुरु जी गोइंदवाल ज्योति-जोत समाये थे।



"दस गुर कथा" कृत कवि कंकण में श्री गुरु अमरदास जी सम्बंधी-वर्णन

*-बीबी रविंदर कौर**

कवि कंकण द्वारा रचित "दस गुर कथा" पुस्तक में सामग्री अधिकांशत: उपमामयी है मगर फिर भी ऐतिहासिक पक्ष से यह काव्य-रचना गुरु-इतिहास एवं सिक्ख इतिहास के बारे में जानकारी प्रदान करती है। तृतीय पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के बारे में "दस गुर कथा' में आठ बंद हैं। इन आठ बंदों में श्री गुरु अमरदास जी की उपमा को रूपमान किया गया है। कवि ने चाहे अपनी रचना में श्री गुरु अमरदास जी के बारे में बहुत अधिक विस्तार से नहीं दिया फिर भी गुरु साहिब के जीवन एवं शख्सियत के प्रति वर्णन अवश्य किया है। इन आठ बंदों में श्री गुरु अमरदास जी के जीवन के बारे में निम्नलिखित पक्ष उभर कर सामने आते हैं :

१. श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा गुरगद्दी की बख्शिश : श्री गुरु नानक देव जी ने निर्मल धर्म सिक्ख धर्म की स्थाप्ति के लिए अपने बाद उत्तराधिकारी के रूप में जिस प्रकार श्री अंगद देव जी को गुरगद्दी पर विराजमान किया उसी प्रकार श्री गुरु अंगद देव जी ने बाबा अमरदास जी को गुरगद्दी पर स्थापित किया। "दस गुर कथा" के लेखक ने बाबा अमरदास जी की गुरगद्दी पर स्थापना का वर्णन इस प्रकार किया है :

दोहरा ॥ गुरगद्दी अमरदास को थापना गुर अंगद सभ कीन।
टहिल कमाई गुरू की उत्तम पदवी लीन ॥१३॥

२. गुरगद्दी-प्राप्ति के लिए सेवा की महानता: सिक्ख धर्म में सेवा को बहुत महत्व दिया गया है। "दस गुर कथा" के कर्त्ता के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु अंगद देव जी की दिन-रात सेवा की और संसार की सर्वोत्तम दात गुरगद्दी को प्राप्त किया। कवि ने टहल-सेवा के द्वारा गुरगद्दी की प्राप्ति बताते हुए उनके माता-पिता को भी महान बताया :

अमरदास गुर टहिल मै दिवस राति बीताइ।
तां ते गुरिआई लई धंन तात तिस माइ ॥१४॥

३. गुरु-ज्योति की अभेदता : "दस गुर कथा" में श्री गुरु अमरदास जी की गुरु नानक-ज्योति के साथ अभेदता को उभारा गया है। कवि के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु अमरदास जी में कोई भेद नहीं है। दो शरीर अलग-अलग बर्तनों की भांति चाहे अलग-अलग दिखाई देते हैं मगर प्रभु-वस्तु की सुगंध एक ही है। जो इनमें कोई भेद-भिन्नता की बात करता है वो व्यक्ति पाप का हकदार है :

गुर अंगद गुर अमर मैं भेद न दूसर कोइ।
बासन अवरु पछानीऐ वसतु एक ही होइ ॥१५॥
सवैया ॥ वसतु वही अरु बासन और है, याहि मैं भेद न दूसर कोई।
नानक रूप गिनो सभ ही तुम, भेद कहै नर पापी है सोई।

४. श्री गुरु अमरदास जी की कल्याणकारी शख्सियत : सिक्ख धर्म की स्थापना जगत के कल्याण हेतु हुई। श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश भी संसार को तारने के लिए हुआ था। 'दस गुर कथा' में भी 'गुरु' की आवश्यकता एवं महानता को बयान किया गया है :

**क्राउन इन्कलेव, छेहरटा, श्री अमृतसर।*

लाख उपाव करै जग मै कोऊ बाझ गुरू कलयान न होई ॥१६॥

श्री गुरु अमरदास जी के कल्याणकारी रूप को प्रकट करने के लिए "दस गुर कथा" के कर्त्ता ने भारतीय परंपरा के इतिहास व मिथिहास में से उदाहरण देकर स्पष्ट किया है कि जैसे गौतम की स्त्री अहिल्या, जो पति के श्राप से पत्थर-रूप हो गई थी, को श्री रामचंद्र जी ने मुक्त किया था। भक्त प्रहलाद के पौत्र बली राजा, जिसे विष्णु के बावन रूप ने छला था, का उद्धार हुआ। श्रीकृष्ण ने द्रोपदी की लाज रखी। हाथी को तेंदुए से छुड़ाया, गनिका का उद्धार अजामल द्वारा हुआ, बभीषण को लंका का राज्य वापिस दिलाना आदि कथाओं द्वारा पता चलता है कि इनका कल्याण भक्तों एवं महापुरुषों द्वारा हुआ। गुरु एवं परमात्मा में रंचक मात्र भी भेद नहीं होता। यदि किसी धर्म-द्रोही को दंड देते समय गुरु में क्रोध भी दिखाई देता है तो वो उसका नरसिंघ रूप होता है जो भक्त प्रहलाद की रक्षा हेतु धारण करता है। 'दस गुर कथा' में इस वार्ता को इस तरह बयान किया है :

तारि सिला औ उधार कीओ बलि फंधक को पग लाग तराया।
राखी है लाज दरोपदी की जिन हसती ग्राह ते अनि छुड़ाया।
तारी गणिका उधार अजामल लंक बभीखन राज दिवाया।
ते पग संगत तारन को अब होइ गुरू निज रूप दिखाया ॥१७॥
जो गुर लोभ करे मन मै तउ बावन रूप पछान रे भाई।
काम मै लीन दिखावत जे गुर मोहन मे कछु भेद न राई।
जौ गुर क्रोध करै मन मैं नरसिंघ ह्वैकै मन देत दिखाई।
राम ही जान बियोग मै देखकै सांच की कांत सुझै समझाई ॥१८॥

गुरु की महानता को और आगे विस्तार देते हुए कवि बताता है कि जो श्री गुरु अमरदास जी तथा दूसरे गुरु साहिबान को भेदता के साथ देखता है और उन्हें एक रूप में नहीं देखता अर्थात् सतिगुरु जी के बारे में श्रद्धाहीन सोच में पड़ता है, वो जन्म लेता तथा मरता रहता है, उसे कोई ठौर नहीं मिलती :

जो गिनती करि है गुर की तऊ आवत जावत ठौर न पावै।

कवि कंकण के अनुसार चाहे तीन लोक में खोज कर ली जाए, सतिगुरु जी जैसा कोई सज्जन नहीं होगा। गुरु ही जन्म-मरण के काल-जाल से छुड़ाता है :

नाहि कोऊ गुर के सम साजन तीन हूं लोग मैं ढूंडन जावै।
काल के जाल मैं आइ परै जब बाझ गुरू तब कौन छुडावै।

सतिगुरु का मार्ग बिना किसी भय वाला होता है। जो इस मार्ग पर चलता है उसे विछोड़ा नहीं सहना पड़ता और उसे सब तरह के सुख-फल प्राप्त होते हैं :

मारग है निरभै गुर का इस मारग जाइ तउ सुख पावै ॥१९॥

"दस गुर कथा" के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी सूर्य की तरह हैं जो ज्ञान द्वारा मनुष्य-मन के अंधेरे को दूर करते हैं। जो व्यक्ति गुरु का ज्ञान नहीं प्राप्त करता उसके जीवन में दुखों की बहुतात हो जाती है :

भान समान कहो गुर गयान जौ भान दुरे तब होत अंधेरा।
जो गुर गयान न पावत है नर याही ते होवत दूख घनेरा।

कवि कंकण श्री गुरु अमरदास जी की प्रतिभा को दर्शाता हुआ बताता है कि जब यह सत्य है कि संसार चार दिन का जीवन है, संसार-बसेरा वृक्ष पर पक्षी की एक रात बिताने की भांति है, फिर भी सतिगुरु जी में मेरा मन क्यों नहीं समा रहा :

है दिन चार यहां रहिना जस ब्रिछ पै पंछन रैन बसेरा।
नैन के देखत चलत है जग किउं न पतीजत रे मन मेरा ॥२०॥



"बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का" में

(पृष्ठ ३७ का शेष)

व्यक्तित्व बयान करना शब्दों की श्रृंखला से बाहर है। आप दयालु थे और गुरसिक्खों पर सदैव अपनी कृपा-दृष्टि बनाये रखते थे। आप जी सहनशीलता की मूर्ति थे। बाबा दातू की विरोधता के बावजूद आप शांत मनोस्थिति में रहे और कोई कठोर वचन मुख से न निकाला। इस प्रकार गुरु साहिब का व्यक्तित्व बहुत ही ऊंचा तथा निर्मल था।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भाई केसर सिंघ की यह कृति बहुत महत्वपूर्ण है। 'बंसावलीनामा' में से श्री गुरु अमरदास जी के जीवन के बारे में पर्याप्त विवरण मिलते हैं। इस चरण (अध्याय) में ८९ बंद हैं और इनमें दोहरा तथा चौपाई छंद का प्रयोग किया गया है। सिक्ख इतिहास की जानकारी लेने के लिए यह एक अच्छा स्रोत है। चाहे कि इसमें दिये सभी विवरणों को प्रासंगिक नहीं माना जा सकता फिर भी इसके ऐतिहासिक महत्व को दृष्टि से ओझल भी नहीं किया जा सकता।



कविता

खुशियों की बहार हो!

हृदय में सच्चाई हो, नाम की कमाई हो!
हमेशा पूरा तोल हो, मीठे सदा बोल हों!
एक पर विश्वास हो, पूरी शुभ आस हो!
सकारात्मक सोच हो, किसी से न रोष हो।
जीवों पर दया हो, दिल में प्रेम हो!
मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे, जाने का नेम हो!
अपना भी अमृत वेला हो, खुशियों का मेला हो!
गुरमति का ज्ञान हो, किंचित न अभिमान हो!
विवेकशील बुद्धि हो, अंत:करण में शुद्धि हो!
मन में जोश हो, पर जोश में भी होश हो!
आलस्य का त्याग हो, पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ हो!
सात्विक भोजन हो, नशों से परहेज हो।
सबका सादा जीवन हो, उच्च विचार हों!
कोई न भ्रांति हो, जीवन में क्रांति हो!
कैसी भी परिस्थिति हो, पर मातृभूमि से प्यार हो!
मातृ-भाषा का सत्कार हो, किसी का न तिरस्कार हो!
बुरी इच्छाओं का दमन हो, अकाल पुरख को नमन हो!
बुद्धि में प्रकाश हो, दुरमति का नाश हो!
एक ही की आस हो, एक पर विश्वास हो!
किसी की न निंदा हो, सब का सम्मान हो!
नेक कमाई हो, दसवंध का दान हो!
विश्व कुटुंबकम-भाव हो, मानवता से प्यार हो!
मन में आनंद हो, खुशियों की बहार हो!



-डॉ. मनजीत कौर, २/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३

भाई नंद लाल जी की नज़र में श्री गुरु अमरदास जी

*-जनाब हुसन-उल-चराग**

भाई नंद लाल जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में श्री अनंदपुर साहिब में उनके प्रमुख दरबारी कवियों मे से एक थे। भाई नंद लाल जी की पढ़ाई फारसी-अरबी में अफ़गानिस्तान के शहर गजनी के एक मदरस्सा में हुई। उन्होंने जो कुछ लिखा वह फारसी ज़ुबां में लिखा। गुरु-दरबार में रहते हुए उन्होंने गुरबाणी तथा गुरु-महिमा पर आठ किताबें लिखीं। सिवाय आठवीं पुस्तक जोति-बिगास के, जो उनके द्वारा लिखी हिंदी की एक मात्र पुस्तक मानी जाती है, शेष सब फारसी में लिखी गईं। यहां हम भाई नंद लाल जी द्वारा लिखित श्री गुरु अमरदास जी की महिमा का वर्णन कर रहे हैं, जो इस प्रकार है:

नानक सो अंगद गुर देवना
सो अमरदास हर सेवना।२७।

(जोति बिगास, पंजाबी)

सिक्ख इतिहास के मुताबिक दस गुरु साहिबान एक ही ज्योति-स्वरूप हैं जिसे भाई साहिब बड़ी खूबसूरती से अपनी कविता के जरीहे-बयान कर रहे हैं--जो गुरु नानक थे और हैं सो (सोई) गुरु अंगद हुए और वही (सोई) गुरु अमरदास जी को सेवा मिली।

एक धर्म-संसार में स्थापित होने के लिये कुछ एक पैमाने होते हैं, जैसे कि धर्म की स्थापना के लिये एक नबी जन्म ले जो बतौर सतिगुरु के सद्मार्ग के लिये अलाही हुक्म की घोषणा करे। मानवता को इष्ट तक पहुंचाने का रास्ता तथा उस पर चल कर अच्छे समाज और ईश्वर की प्राप्ति के लिये उसमें साधन मौजूद हों। उनके अपने रीति-रिवाज (रहित मर्यादा) हो, अपना तीर्थ-स्थान हो इत्यादि। श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब में सिक्खी का धुरा (मरकज) स्थापित किया, जिसे सिक्ख धर्म के पहले तीर्थ-स्थान का दर्जा मिला तथा सिक्ख विधियों, रहन-सहन (मर्यादा) और रीति-रिवाजों को स्थापित किया, रसोई (लंगर) की प्रथा पक्के तौर पर सिक्ख धर्म में चलाई। स्नान की जरूरत और निष्ठा के लिये वहां बाउली बनवाई जो अभी तक बाखूब अपनी चौरासी पौड़िओं (सीढ़ियां) के साथ मौजूद है, स्नान उपरांत सिमरन निर्धारित करना आदि।

भाई नंद लाल जी पातशाही तीसरी की गुरु-महिमा फारसी में अपनी पुस्तक 'गंज नामा' में करते हुए इस तरह लिखते हैं :

सलतनते सिवुमश सुलताने मुमालिके,
हक्क परवरी मुहीते आलमे करामत गुसतरी।
सल कुल मौते गालब मगलूबश व सुलताने,
मलकूत मुहासिब महसूबश।

बादशाह खुद कानून बनाते हैं, हुक्म देते हैं, खुद फैसले करते हैं और अपने देश पर राज करते हैं, हकूमत करते हैं। वे मीर होते हैं, पीर नहीं, मगर सुलतान मीर और पीर दोनों होता है। वह खुद कानून बनाने की बजाय अलाही संदेश से लोगों का जीवन-मार्ग उस अल्लाह, ईश्वर, वाहिगुरु, अकाल पुरख की ओर अपने लोगों को ले जाने के सिलसिले खड़े करता है।

**14-C, Race Course Road, Sri Amritsar. Mob : 98151-88810*

इसी तरह मीर और पीर सलतनते सिवुम श्री गुरु अमरदास जी किसी देश के बादशाह नहीं बल्कि लोगों के दिलों के पातशाह (सुलतान) हैं जिन्होंने सिक्खी मार्ग की सेवाओं की सीमाओं (मोहीते-आलमे) को बड़ा किया। उनकी रुहानियत की सीमाएं किसी देश की सरहदों की तरह सीमित नहीं थीं बल्कि उनकी रुहानियत का प्रभाव देशों-विदेशों की सीमाओं के पार, मानवता तक पहुंच कर संसार को अलाही घेरे में, 'मानव एक जाति एक' में स्थापित करना था और है।

मौत का फरिश्ता, जिससे संसार के सभी जीव भयभीत रहते हैं, वो फरिश्ता भी श्री गुरु अमरदास जी के समक्ष एक आजिज (मगलूब) के मानिद खड़ा हो जाता है और धर्मराज, जो पूरे संसार का लेखा-जोखा (हिसाब) रखता है, उस हिसाब में भी गुरु जी नहीं आते। वे उसके सांसारिक लेख-लेखे से आजाद हैं।

पैरायह फरोगे आं हरदो मशअले
हक्क व इबतिसामे हर गुंचाहए बसते वरक।

तीसरी पातशाही श्री गुरु अमरदास जी पहली और दूसरी पातशाहियों की हक्क-इंसाफ की मिशालों को रोशन करने वाले हैं, जिस अनजान, नावाकिफ और जो जिहनो-कर्म से नहीं जागे, जिनके मस्तिष्क अभी नहीं खुले, उन अधखिले नावाकिफ लोगों के जिहन (अकल) को जैसे बंद कलियां खिल उठती (गुंचाहए बसते वरक) हैं, उसी प्रकार श्री गुरु अमरदास जी का प्रभाव उनके दिलो-दिमाग को खोलता चला गया है।

नखुसतीं अलफे नामों कुदसीअश,
आराम बखशे हर अवाराह।

भाई नंद लाल जी गुरु जी के नाम में आए पहले अक्षर अलफ, जिसे हिंदी-पंजाबी में 'अ' बोला जाता है, की व्याख्या करते हैं कि 'अ' अलफ का यहां मतलब है 'आराम'। एक जगह पर स्थिर, टिका हुआ अर्थात् गुरु जी का अक्षर 'अ' हरेक वस्तु तथा मनुष्य, जिनका मन और शरीर अस्थिर है, टिका हुआ नहीं, भटकता है, बेआराम है, उन्हें सबको गुरु जी का नाम स्थिर करके मन को ठीक ठिकाने पर स्थापित करने में समर्थ है। गुरु आसरा है, हर बेसहारे का सहारा है।

वा मीमे फरुख तनजीमश
मुसतमआने हर बेचारा।

गुरु जी के नाम में आया लफ्ज 'मीम', जिसे हिंदी-पंजाबी में 'म' लिखा जाता है, से मतलब है मददगार, जो हरेक बेचारे, बेसहारा प्राणी की सहायता करने वाला है।

रायनत आरायश रिआजे जावीद
व दाले सआदत इशतमालिश।
दसतगीरे हर ना-उमीद अलफे सानीअश अमाने
हर मुजरिम वा सिआहकार।
वा सीने आखरीनश सायहए किरदगार।

फारसी लफ्ज 'रे' को हिंदी-पंजाबी में 'र' लिखा जाता है, जिसका भाव भाई नंद लाल जी यूं बताते हैं कि लफ्ज 'रे' रिआजे, बार-बार, सदा रहने वाली खूबसूरत, पसंद आने वाली, अच्छी लगने वाली सजावट है। गुरु जी के नाम में आई दाल 'द' दसतगीरे हर नाऊमीद, हर न-उम्मीद के वे सहारा हैं, उसके लिये आसरा हैं। जो 'दास' में मात्रा 'ा' और फारसी में दाल को अलफ लगाकर 'दास' लिखा जाता है उसका भाई साहिब ने यहां मतलब बताया है अमान और आखिरी लफ्ज सीन, जिसे हम 'स' लिखते हैं, उससे बनता है साया यानि कि गुरु जी सभी प्राणियों पर छत्रछाया का रूप हैं।

गुरू अमरदास आं गरामी नजाद
जि अफजालि हक्क हसतीअश रा मुआद।६४।

(शेष पृष्ठ ४९ पर)

प्रिं सतिबीर सिंघ की नजर में
परबतु मेराणु : श्री गुरु अमरदास जी

*-प्रिं अमरजीत कौर**

प्रिं सतिबीर सिंघ ने सबसे पहले गुरु अमरदास जी की अंश और उनके जन्म के बारे में विस्तार सहित वर्णन किया है। उन्होंने श्री गुरु अमरदास जी की स्तुति में भट्ट साहिबान द्वारा रचित तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित उनकी बाणी में से हवाले देकर श्री गुरु अमरदास जी के खानदान और उनकी बढ़ाई को बड़े खूबसूरत ढंग से बयान किया है।

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म गांव बासरके जिला अमृतसर में ५ मई, १४७९ को बाबा तेज भान के घर माता लक्खो जी की कोख से हुआ। श्री गुरु अमरदास जी के तीन और छोटे भाई थे। आप जी ने घर से ही विद्या हासिल की और बड़े होने के कारण जल्दी ही पिता जी के साथ दुकान पर बैठने लगे। आपकी रुचि दुकान के साथ भूखे-नंगों की सेवा करना और कर्म-धर्म के काम करने में भी खूब थी।

प्रिं: सतिबीर सिंघ ने श्री गुरु अमरदास जी की नुहार के बारे में भी लिखा है कि आपके दाएं पैर में पदम है। आपका कद छोटा और शरीर गंठीला था, छाती चौड़ी और कमर शेर जैसी थी। यह सारी नुहार दर्शाती है कि वे अवतारी पुरख थे, जो इक्कीस बार पैदल गंगा गए और फिर श्री गुरु अंगद देव जी की शरण आने के बाद लगातार बारह वर्ष कठिन कमाई करते रहे।

आप जी की शादी श्री देवी चंद की पुत्री बीबी मनसा देवी के साथ २७ नवंबर, १५०२ ई को हुई। आपके घर पहली संतान विवाह के लगभग बारह साल बाद हुई। आपकी संतान में दो सपुत्रियां--बीबी भानी और बीबी दानी थीं और दो पुत्र--बाबा मोहन और बाबा मोहरी थे।

इसी तरह जीवन-निर्वाह करते पचास साल तक उम्र व्यतीत हो गई और एक दिन मन में ख्याल उपजा कि जीवन व्यर्थ जा रहा है, मौत किसी भी वक्त आ सकती है; दुनियावी धंधों में पड़े रहना कहां की सियानप है? यह तो तीर्थें पर जाकर तप करने का समय है। फिर मन पक्का कर लिया कि साल में दो बार तीर्थ पर अवश्य जाना है। इस तरह साल के हर छठे महीने गंगा जाने का प्रण कर बाबा अमरदास जी ने यात्रा आरंभ कर दी और लगभग दस साल गंगा की यात्रा करते रहे।

एक बार जब बाबा अमरदास जी बीसवीं बार गंगा-स्नान कर वापस आ रहे थे तो एक ब्रह्मचारी संगी बन गया। वह बाबा अमरदास जी के शांतचित्त स्वभाव से इतना प्रभावित हुआ कि वो आप जी के साथ ही चल पड़ा और दोनों रास्ते में हरि-चर्चा करते रहते। बाबा अमरदास जी ने अपने स्वभाव से ब्रह्मचारी की खूब सेवा की। वो आप जी के गुणों से इतना प्रभावित हुआ कि पूछ बैठा, "आप जी का 'गुरु' कौन है? आप किसके चेले हो?" बाबा अमरदास जी ने कहा कि "सूर्य उदय होने से पहले कमल कैसे खिल सकता है?" ब्रह्मचारी यह सुनकर ऊंचे-ऊंचे चिल्लाने लगा कि "निगुरे का संग, जन्म गया तेरा, किसका संग किया रे मन मूर्ख?"

बोली की ऐसी चोट लगी कि इसी सोच

**न्यू अमृतसर मॉडल स्कूल, गोबिंद नगर, भुल्लर रोड, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५*

में कई रातें गुजर गईं। प्रभात के समय जब भाई माणक चंद के घर से बाणी की मीठी-मीठी आवाज आती तो उठ पड़ते और दीवार से कान लगाकर दिन चढ़ते तक सुनते रहते।

एक दिन बीबी अमरो गुरु नानक साहिब का उच्चारण किया हुआ शबद *"करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए"* अपनी मीठी आवाज में गा रही थीं, तो बाबा अमरदास जी उसके पास आए और पूछने लगे कि "जो बाणी तुम गा रही थी वो किसकी है और वे कहां रहते हैं?" बीबी अमरो ने कहा कि "यह श्री गुरु नानक देव जी की बाणी है और वे इस समय सचखंड पयाना कर गए हैं, लेकिन उनकी गद्‌दी पर इस समय मेरे पिता श्री गुरु अंगद देव जी विराजमान हैं।" बाबा अमरदास जी ने खुद को उनके पास ले जाने के लिए कहा। कुछ दिनों के बाद बाबा अमरदास जी बीबी अमरो के साथ श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने को खडूर साहिब पहुंचे। उस समय श्री गुरु अंगद देव जी दरबार लगाकर बैठे थे। बाबा अमरदास जी उनके पास 'रिश्तेदार' नहीं 'सेवक' बनकर गए थे। गुरु जी ने बाबा अमरदास जी को आलिंगन में लिया और बाबा अमरदास जी ने अपना सिर उनके चरणों में रख दिया। गुरु जी ने उनका शीश उठाकर, निकट बिठाकर कुशल-मंगल पूछा, फिर अपने साथ दोपहर के समय लंगर में ले गए।

अंतरयामी सतिगुरु अंगद देव जी ने बाबा अमरदास जी के मन में उपजी सभी आशंकाओं का निवारण किया। प्रिं: सतिबीर सिंघ ने इस मिलनी (मिलाप) को कई ग्रंथों में से उदाहरण देकर बड़े विस्तार से 'ऐतिहासिक मिलनी' साबित किया है। बाबा अमरदास जी वहीं टिक गए और बीबी अमरो जी आज्ञा पाकर वापस बासरके आ गईं।

बाबा अमरदास जी ने पूरे १२ वर्ष कठिन सेवा की, प्रत्येक मुश्किल को पार किया, अहंकार को मारा, श्री गुरु अंगद देव जी के मन के संकल्प को पूरा कर दिखाया, तब जाकर सेवा प्रवान हुई। बाबा अमरदास जी अपनी रोजाना की कार में अमृत वेले उठकर गागर लेकर ब्यास दरिया से जल भरकर लाते, गुरु जी को स्नान कराते, उनके वस्त्र साफ करते, संगत में जुड़ कीर्तन श्रवण करते, फिर लंगर के लिए जंगल में से लकड़ियां काटकर लाते तथा सिक्खों को पंखा करते हुए हर समय सिमरन करते रहते। इस तरह लगातार बारह वर्ष निरंतर सेवा की।

प्रिं: सतिबीर सिंघ ने इन बारह वर्षों में बाबा अमरदास जी के साथ घटित प्रत्येक घटना को बड़े विस्तार के साथ बयान किया है।

बाबा अमरदास जी इन १२ वर्षों की प्रत्येक प्ररीक्षा में सफल हुए और श्री गुरु अंगद देव जी ने उनको १२ बख्शिशें दीं। इस तरह बाबा अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी की प्रत्येक खुशी के पात्र बनते गए। कुछ लोग बाबा अमरदास जी की गुरु जी से निकटता को न सहारने वाले भी बन बैठे। गुरु जी के अपने पुत्र भी इसमें शामिल थे। श्री गुरु अंगद देव जी सब जान गए थे। उन्होंने गोइंदा नामक सिक्ख की विनती मानकर बाबा अमरदास जी को दरिया ब्यास के किनारे उसकी जमीन पर एक नगर बसाने और उनके वहीं रहने की आज्ञा की। बाबा अमरदास जी परिवार समेत वहां चले गए और नगर का नाम 'गोइंदवाल' रखा।

श्री गुरु अंगद देव जी बाबा अमरदास जी की आखिरी परीक्षा लेने खुद गोइंदवाल पहुंचे। बाबा अमरदास जी आखिरी परीक्षा में भी पूरे उतरे और श्री गुरु अंगद देव जी ने उन्हें उपदेश दिया कि नम्रता का दामन कभी नहीं

छोड़ना, खुद को नहीं जताना, सतसंगति पर ही जोर देना, करने-कराने वाला एक ही दाता है, कीर्तन का आसरा रखना।

फिर चेत्र सुदी ४, संवत् १६०६ (२९ मार्च, १५५२) को बाबा अमरदास जी को गुरगद्दी पर बिठाया गया। श्री गुरु अंगद देव जी ने खुद उनको माथा टेका और फिर संगत को वंदना करने को कहा। सब संगत ने भी माथा टेका। फिर कुछ वचन किये और ज्योति-जोत समा गए।

प्रिं: सतिबीर सिंघ ने "महिमा प्रकाश" से हवाला देते हुए श्री गुरु अमरदास जी के व्यक्तित्व को विस्तार सहित बयान किया कि "अब ऐसा गुरु तख्त पर बैठा है जो प्रभु के सिवाए किसी को ध्यान में नहीं लाता। सभी ज्ञानों के वे मालिक हैं। प्रभु की छाया का छत्र उन पर हर वक्त झुल रहा है। माथा चौड़ा, दर्शन पाने वाले का मन टिक जाता है। गुरु जी सच के व्यापारी हैं। दायें हाथ में पदम है, पांव में पदम है, चरण छूने से ही मुर्दे जी उठते हैं। गुरु जी अपने हाथों से किसी को आशीष दें तो उसके अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है, जिसकी तरफ देख लें उसके अंदर भक्ति की लहर उठा देते हैं। जब वचन करते हैं, सुनते ही निशा (संतुष्टि) हो जाती है।

श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल के इलाके की संगत की पीने के पानी की मुश्किल को दूर करने के लिए बाउली का निर्माण शुरू करवाया। इसके बाद कार सेवा आरंभ हो गई। दूर-दूर से संगत कई प्रकार की सेवा का योगदान देती। गुरु जी ने इस बाउली में ८४ सीढ़ियों का निर्माण करवाया ताकि प्रत्येक के हृदय में यह ख्याल परिपक्व हो जाए कि मुक्ति-दाता, जन्म-मरण काटने वाला, चौरासी काटने वाला 'गुर-शबद' है। लेखक ने एक ऐसी चर्चित घटना का भी खंडन किया है जो बाउली का कड़ टूटने और अकबर बादशाह द्वारा चित्तौड़ के किले को जीतने से है, जिसमें उसने तिथियों सहित बाउली-निर्माण और चित्तौड़ की जीत को बयान किया है। लेखक ने बयान किया है कि कई इतिहासकारों ने इस प्रसंग को रौचक बनाने के लिए इस तरह की मिलावट की है।

श्री गुरु अमरदास जी रोज दरबार लगाते और आई संगत की आशंकाओं का निवारण करते और उनको सिक्ख बनाते। प्रिं: सतिबीर सिंघ ने भाई गुरदास जी की वारों के हवाले देकर बताया है कि श्री गुरु अमरदास जी ने दरबार में आई अलग-अलग स्थान से संगत की आशंकाओं का निवारण किया, उन्हें सिक्ख बनाया और सिक्खी-प्रचार के लिए दूसरे स्थानों पर भेजा।

श्री गुरु अमरदास जी ने सामाजिक बुराइयों का खंडन करते हुए उन्हें नकारा और लोगों को सही रास्ता दिखाया। गुरु जी ने सती-प्रथा व विधवा-विवाह का खंडन किया, पर्दे की गुलामी से छुटकारा दिलाया और वर्ण-भेद, जात-पात के विरुद्ध सख्त हिदायत की। गुरु जी ने फरमान जारी किया कि अगर कोई उनके दर्शन करना चाहता है तो वो पहले पंगत में बैठकर लंगर छके।

लेखक ने श्री गुरु अमरदास जी द्वारा उच्चारण की गई बाणी का भी जिक्र किया है जो १७ रागों में है। गुरु जी की बाणी में से "अनंदु साहिब" का पाठ संगत रोजाना करती है।

श्री गुरु अमरदास जी बेसहारों के सहारा थे। गुरु साहिब ने 'अनंद विवाह' का आगमन किया। गुरु जी ने २२ मंजियों (प्रचार-केंद्र) की स्थापना की जो अकबर बादशाह की तरह २२ राज्यों पर आधारित थे। गुरु साहिब ने अमृतसर शहर की स्थापना करने के लिए जगह निश्चित

करवाई और खुद जाकर वह जगह बताई जहां श्री गुरु नानक देव जी ने खुद चरण पाए थे।

ज्योति-जोत समाने का समय निकट जान श्री गुरु अमरदास जी ३ सितंबर, १५७४ को नितनेम कर बाउली साहिब की ओर चल पड़े। श्री (गुरु) रामदास जी, जो गुरु जी के दामाद (बीबी भानी जी के पति) थे, उस समय कार (कार्य) करने की सेवा में जुटे हुए थे, सिर पर टोकरी उठाई हुई थी। श्री गुरु अमरदास जी ने बाबा बुड्ढा जी से कहा कि "इनकी टोकरी नीचे उतार कर इन्हें गुरगद्दी की जिम्मेदारी बख्शो।" *"जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ"* का पूरा प्रमाण वहीं पर देखने को मिला। सेवा को उसी तरह फल लगा जैसे श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु अमरदास जी की सेवा को लगा था। श्री गुरु अमरदास जी श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी की जिम्मेदारी बख्श कर ज्योति-जोत समा गए।



भाई नंद लाल जी की नज़र में श्री गुरु अमरदास जी *(पृष्ठ ४५ का शेष)*

गुरु जी परंपरा के खानदानी बुजुर्गों के घराने से हैं और उनकी शख्सियत खुदा-वाहिगुरु जी की मिहर द्वारा बनाई गई है।

जि वसफो सनाइ हमा बरतरीं
बा-सदरि हकीकत मुरब्बअ नशीं।६५।

सिफत-सलाह में गुरु जी सबसे बड़े हैं और हकीकी तख्त पर वे आसन लगाए विराजमान हैं।

जहां रौशन अज नूरि अरशादि ऊ
जमीनो जमां गुलशन अज दादि ऊ।६६।

गुरु जी की बाणी से दुनिया (जहां) रौशना गई है और उसकी बदौलत जमीन तथा आसमान हक्को-हकूमत के बगीचे (गुलशन) की तरह फलने-फूलने लगे हैं।

दो आलम गुलामश चिह हजदहि हजार
फजालो करामश फजूं अज शुमार।६७।

इस संसार के अट्ठारह हजार प्राणी तो क्या दोनों जहां (लोक-परलोक) भी गुरु जी के मुरीद (गुलामश चिह) हैं यानि कि गुरु जी की ताबिया में हैं। गुरु जी का बड़ापन और सिफत-सलाह बेहिसाब है, क्योंकि वे अलाही ज्योति-स्वरूप हैं और ज्योति-स्वरूप के गुण गिने नहीं जा सकते, केवल उनका अहसास किया जा सकता है।



कविताएं

परिश्रम

वो श्रम-बिंदु है परिश्रम, गिरता है जहां।
हैं खिल उठते सुंदर-सुंदर फूल वहां।
देते हैं जो मधुर सुगंध ऐसे फूल तो
परिश्रम की मिट्टी पर ही खिलते हैं।
श्रमजीवी के तन में से बहे पसीना जो,
संसार का पोषण करता है।
परिश्रम जीवन जीने की,
परिस्थितियां पैदा करता है।

जिंदगी

जिंदगी टूट-टूटकर जुड़ने का नाम है।
कहीं से सिमटने तो कहीं से
फैलने का नाम है।
जिंदगी कहीं फूलों की चादर,
और कहीं आग का दरिया भी है।



-बीबी जसप्रीत कौर जस्सी, मकान नं: ११, सेक्टर १-ए, गुरू ज्ञान विहार, डुगरी, लुधियाना (पंजाब)

प्रि. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ द्वारा लिखित "सिक्ख इतिहास" में श्री गुरु अमरदास जी का जीवन

-बीबी रजवंत कौर*

श्री गुरु अमरदास जी सिक्खों के तीसरे गुरु हैं। आपका जन्म गांव बासरके जिला अमृतसर में ५ मई, १४७९ को हुआ था। आप कृषि का कार्य करते थे। २४ वर्ष की आयु में आपका विवाह हुआ। आपके गृह में दो पुत्र तथा दो पुत्रियों ने जन्म लिया। बड़े पुत्र का नाम बाबा मोहन एवं छोटे का नाम बाबा मोहरी था। दो पुत्रियां--बीबी दानी एवं बीबी भानी थीं। आप वैष्णो थे तथा प्रत्येक वर्ष गंगा के स्नान हेतु जाते थे। जब आप २०वीं बार गंगा-यात्रा के लिए गए तो आपकी भेंट एक साधु से हुई जिसने आपको कहा कि आत्मिक सुख के लिए 'गुरु' धारण करना आवश्यक है। साधु की बात का आपके मन पर इतना गहरा प्रभाव हुआ कि आपके मन में "गुरु-प्राप्ति" की जिज्ञासा प्रबल हो उठी।

एक दिन प्रात: काल आप जी ने बीबी अमरो जी से गुरबाणी की मीठी ध्वनि सुनी। बीबी अमरो जी गुरु अंगद साहिब की पुत्री थीं एवं गुरु अमरदास साहिब के भतीजे की पत्नी थीं। आप उस गुरु के दर्शन करने के लिए उतावले हो उठे जिनकी बाणी आप ने बीबी अमरो जी के मुख से श्रवण की थी। आप बीबी अमरो जी के साथ गुरु अंगद साहिब के दर्शन करने के लिए खडूर साहिब गए। गुरु जी के दर्शन करने के बाद आपके मन को शांति मिली एवं आप उनके श्रद्धालु बन गए। गुरु अंगद साहिब ने उनके वैष्णव स्वभाव एवं तप-साधना के भ्रमों को दूर किया। गुरु जी ने बताया कि असली तप मानवता की सेवा है। आप गुरु-आज्ञा के अनुसार लंगर में बर्तन साफ करने, ईंधन लाने एवं पानी लाने की सेवा करने लगे। आप गुरु अंगद साहिब के स्नान करने के लिए प्रतिदिन जल की गागर, ब्यास नदी से भर कर प्रात: काल लाते। खडूर साहिब से ब्यास नदी ३ किलोमीटर की दूरी पर है। आप गुरु-स्नान की सेवा पूरे तन-मन एवं श्रद्धा सहित करते थे। इस लगन एवं सेवा सदका ही आप गुरगद्दी के वारिस बन गए। गुरगद्दी मिलने पर गुरु अंगद साहिब के पुत्रों ने आपका बहुत विरोध किया जिस कारण आपको बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा। आपने बहुत सब्र एवं धैर्य से काम लिया। एक दिन गुरु अमरदास जी गुरगद्दी पर बैठे थे कि श्री गुरु अंगद देव जी के बड़े पुत्र दातू ने गुरु जी को लात मारी। गुरु जी गिर पड़े। गुरु जी ने बड़ी सहनशीलता से कहा कि "क्षमा करना, आपके चरण कोमल हैं एवं मेरी हडिड्यां ज्यादा आयु के कारण सख्त हैं, आपके चरणों को चोट पहुंची होगी!" श्री गुरु अमरदास जी दातू का क्रोध शांत करने के लिए अपने पैतृक गांव बासरके आ गए, परंतु बाबा बुड्ढा जी एवं अन्य सिक्ख कुछ दिनों बाद आपको दोबारा गोइंदवाल ले आए। गुरु जी के इस गुण से यह शिक्षा मिलती है कि सिक्ख को कठोर समय या दुख के समय अपना संतुलन बनाकर रखना चाहिए एवं सब्र, धैर्य तथा

*452, Block-B, Sandhu Colony, Chheharta, Sri Amritsar. Mob. : 98559-44546

सहनशीलता रखनी चाहिए।

श्री गुरु अमरदास जी ने अपने सिक्खों को गृहस्थ में रहकर धर्म की पालना करने की शिक्षा दी एवं इस बात का विश्वास पैदा किया कि घर त्याग कर ईश्वर की प्राप्ति असंभव है, क्योंकि श्री गुरु नानक देव जी के बड़े पुत्र श्रीचंद उदासी थे, कुछ लोग उनके श्रद्धालु बनते जा रहे थे, इसलिए श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी के बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस प्रकार श्री गुरु अमरदास जी ने तपे वाले मामले को सुलझाया। तपे ने श्री गुरु अंगद देव जी का विरोध किया था एवं लोगों को बहला-फुसला कर श्री गुरु अंगद देव जी को गांव से बाहर निकाला था। इस तपे की तरह ही गोइंदवाल में कुछ मुसलमान लोग सिक्खों को तंग करते थे। जब सिक्ख कुओं से पानी लेने के लिए जाते थे तो ये सिक्खों को पत्थर मारते और उनके मटके तोड़ देते थे। गुरु जी ने सिक्खों को धैर्य रखने के लिए कहा। गुरु जी ने सिक्खों को कहा कि "ईश्वर को धैर्य भाता है। वह धैर्य का फल देता है। जब कोई किसी को ज्यादा तंग करता है तो ईश्वर खुद ही उनके लिए लड़ता है।"

श्री गुरु अमरदास जी ने लोगों में से जात-पात एवं छुआ-छूत के भेदभाव को दूर करने के लिए लंगर-मर्यादा को और दृढ़ किया। हरेक हिंदू एवं मुसलमान यात्री को कहा कि गुरु जी के दर्शन करने से पहले लंगर से भोजन ग्रहण करें। इस तरह ऊंच-नीच का भेदभाव खत्म होने लगा। अकबर बादशाह एवं हरीपुर के राजा को भी दर्शन करने से पहले पंगत में बैठकर लंगर छकना पड़ा। इस तरह संगत एवं पंगत से सभी वर्णों को बराबर का दर्जा दिया। आपने अपने सिक्खों को गृहस्थ जीवन में दृढ़ रहने का आदेश दिया कि परमात्मा गृहस्थ में रहकर ही प्राप्त हो सकता है। आपने इस संसार में ही 'हरि' का निवास बताते हुए कहा कि:

एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है
हरि रूपु नदरी आइआ ॥ *(पन्ना ९२२)*

गुरु जी ने अपने सिक्खों को यह शिक्षा दी कि शरीर ईश्वर की अमानत है। इसको स्वस्थ, शुद्ध एवं ताजा रखने के लिए संयम में रहना आवश्यक है तथा नशे से बचने के लिए प्रेरणा की। आप अपनी बाणी में बताते हैं कि वह वस्तु नहीं रखनी चाहिए जिससे शरीर में विकार उत्पन्न हो :

माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥
जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥
(पन्ना ५५४)

गुरु जी ने स्त्रियों की सती तथा पर्दा नामक प्रथाओं को दूर करने के लिए लोगों को जागृत किया। गुरु जी ने कहा कि सती वह है जो अपने पति की मृत्यु के बाद अपने आचरण को शुद्ध रखती है। आप कहते हैं :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ *(पन्ना ७८७)*

गुरु जी ने सिक्खों के प्रचार के लिए भिन्न-भिन्न स्थानों पर अपने सिक्खों को भेजा। उन्होंने सभी स्थानों को 'मंजियों' (प्रचार-केंद्र) में क्रमानुसार संगठित किया एवं प्रत्येक मंजी एक सिक्ख की देखरेख में रखी गई जिसका यह कार्य था कि वह धर्म का प्रचार करे तथा संगत को

(शेष पृष्ठ ५६ पर)

प्रो. करतार सिंघ द्वारा रचित "सिक्ख इतिहास" में श्री गुरु अमरदास जी

*-स. ऊधम सिंघ**

सिक्ख इतिहास-स्रोत पुस्तकों में सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन को बहुत ही अच्छे और बढ़िया ढंग से बयान किया गया है। इसी शृंखला में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'सिक्ख इतिहास' के लेखक प्रो. करतार सिंघ एम. ए. ने सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन को बहुत ही संक्षेप में बयान कर "गागर में सागर" भर दिया है। यह स्रोत-पुस्तक सिक्ख इतिहास की बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है।

प्रो. करतार सिंघ ने श्री गुरु अमरदास जी के जीवन को 'सिक्ख इतिहास' नामक पुस्तक के भाग एक में पांच कांडों में वर्णित किया है। प्रो. करतार सिंघ के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी का जन्म वैसाख सुदी १४ (८ ज्येष्ठ) संवत् १५३६ (५ मई, १४७९) को गांव बासरके जिला अमृतसर में हुआ। आपके पिता श्री तेजभान थे। आपकी माता का नाम माता सुलक्खणी (लखमी) जी था। आपके माता-पिता वैष्णव धर्म को मानने वाले बड़े सच्चे और ऊंचे जीवन वाले थे जिसका असर श्री गुरु अमरदास जी पर पड़ा और उनका शुरू से ही धार्मिक कार्यों में रुझान बढ़ गया। आपके पिता जी खेती और दुकानदारी करते थे। वे स्वभाव के विनम्र और मीठे थे। इस कारण बरादरी और गांव में आपका बहुत सम्मान था। जब श्री गुरु अमरदास जी जवान हुए तो आपने अपने पिता जी का काम संभाल लिया। तब आपके पिता अपना समय धर्म और पूजा-पाठ के कार्यों में बिताने लगे।

प्रो. करतार सिंघ ने श्री गुरु अमरदास जी का विवाह ११ माघ, संवत् १५५९ को श्री देवीचंद की सपुत्री राम कौर के साथ हुआ लिखा है। उस समय गुरु जी की उम्र लगभग २३ वर्ष नौ महीने थी। गुरु जी के दो सपुत्र--बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी हुए तथा दो सपुत्रियां--बीबी दानी जी और बीबी भानी जी हुईं।

प्रो. करतार सिंघ ने पहले कांड में एक ऐसी घटना का भी जिक्र किया है जिससे श्री गुरु अमरदास जी का जीवन बदल गया। श्री गुरु अमरदास जी अपने पिता जी की तरह बचपन से ही धार्मिक ख्यालों, किरत, दान-पुन्य, जप-तप, सेवा करने वाले थे, परंतु कठिन तप करने के बाद भी गुरु अमरदास जी का मन भटकता रहता था। वे मन को वश में करने के लिए हर साल गंगा-स्नान के लिए जाते थे।

संवत् १५९७ में जब आप यात्रा से वापस आ रहे थे तो आपको एक साधु मिला। दोनों में परस्पर प्रेम पड़ गया और दोनों इकट्ठे सफर करने लगे। एक महीने के बाद दोनों गांव बासरके पहुंचे। साधु कुछ दिन आपके पास टिक गया। पहले वो खुद खाना बनाकर खाता था, बाद में श्री (गुरु) अमरदास जी के हाथ का बना खाना खाने लगा। एक दिन साधु ने श्री (गुरु) अमरदास जी से पूछा कि तुम्हारा 'गुरु' कौन है? श्री (गुरु) अमरदास जी ने उत्तर दिया, मैंने अभी तक कोई 'गुरु' धारण नहीं किया। यह सुनते ही साधु को गुस्सा आ गया और कहने लगा कि "अरे! 'निगुरे' का तो

*VPO : चविंडा देवी, जिला श्री अमृतसर। मो. : ९८५५५-९६९२२

दर्शन भी बुरा होता है। मैंने तो एक महीने से 'निगुरे' का संग किया, 'निगुरे' के हाथ का पका हुआ खाना खाया। बुरे भाग्य! मेरे तो सभी व्रत, स्नान, तप, धर्म-कर्म नष्ट हो गए। मेरा तो जन्म ही गया। चल मन! पश्चाताप कर और धो इस पाप को।" साधु ऐसे शब्द बोलता हुआ चला गया और बाबा अमरदास जी का मन उदास हो गया। उनके मन में 'गुरु' धारण करने की इच्छा पैदा हुई परंतु 'गुरु' कहां से मिले? कुछ समय इसी बेचैनी में निकल गया। एक दिन अमृत वेले बाबा अमरदास जी को नजदीकी घर से एक मधुर आवाज सुनाई दी। कान लगा कर सुना तो : *"करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥ जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥"* बाणी सुनाई दी जिसका उनके मन पर गहरा असर हुआ। मन में चाह उठी कि जिनकी यह बाणी है उनके दर्शन किए जाएं। वे बीबी अमरो जी के पास गए और पूछा, "पुत्री! जिस बाणी का पाठ तुम सुबह कर रही थीं वो किसकी है और वे कहां रहते हैं?" बीबी अमरो जी ने उत्तर दिया, "पिता जी! यह बाणी श्री गुरु नानक देव जी की है। वे खुद तो प्रभु की गोद में हैं, मगर खडूर में उनकी गुरगद्दी पर अब मेरे पिता श्री गुरु अंगद देव जी विराजमान हैं।"

यह सुनकर श्री (गुरु) अमरदास जी ने मन में श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने और उनको 'गुरु' धारण करने का फैसला कर लिया। वे बीबी अमरो जी को साथ लेकर खडूर साहिब पहुंच गए। प्रो करतार सिंघ ने यह बात संवत् १५९७ की घटित हुई लिखी है। उस समय श्री (गुरु) अमरदास जी की उम्र ६१ वर्ष और श्री गुरु अंगद देव जी आयु ३६ वर्ष की थी।

कांड २ में प्रो करतार सिंघ ने श्री (गुरु) अमरदास जी द्वारा खडूर साहिब पहुंचकर गुरु-मिलाप करने, गुरु-द्वारे में सेवा करने और गुरगद्दी के बारे में जिक्र किया है। लेखक ने वर्णन किया है कि जब श्री (गुरु) अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी की हजूरी में पहुंचे तो वे उनके चरणों में गिर पड़े। उनके मन को शांति प्राप्त हुई। गुरु जी ने श्री (गुरु) अमरदास जी के सिर पर अपना बख्शिशों भरा हाथ रखा और उठाकर अपने पास बैठने को कहा। श्री (गुरु) अमरदास जी नजदीक पड़ी पीढ़ी पर बैठ गए और कहने लगे, "मैं 'समधी' बनकर नहीं, मैं तो एक 'भिखारी' बनकर शरणागत हूं, बेआसरा, बेठिकाना हूं। मैं इन चरणों का आसरा लेने आया हूं। मुझे ठिकाना दीजिए और इस निथांवे को थांव (जगह) दीजिए।"

श्री (गुरु) अमरदास जी ने गुरु अंगद साहिब के बारे में मन में जो धरा था वो सब कुछ अंतरयामी श्री गुरु अंगद देव जी जानते थे और गुरु जी ने वही किया जो श्री (गुरु) अमरदास जी के मन की इच्छा थी। प्रो करतार सिंघ ने इस संबंधी 'सिक्ख इतिहास' पुस्तक में काफी विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

सिक्खी की दात प्राप्त कर श्री (गुरु) अमरदास जी खडूर साहिब में ही टिक गए और श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में तन-मन से सेवा करने लगे। आप अमृत वेले उठकर हर रोज ढाई-तीन कोस दूर ब्यास दरिया से पानी की गागर भर कर लाते और गुरु जी को स्नान कराते। फिर कुएं से पानी भरते, लंगर में पानी पहुंचाते, प्यासों को पिलाते और खुद सबके बाद में लंगर छकते। वे सेवा करते समय मुख से बाणी का जाप करते। लेखक के अनुसार जैसे श्री गुरु अंगद देव जी ने सिक्खी का पहला नेम

और सिक्खी रहित का पहला अंग "हुक्म मानना" कमा कर दिखाया उसी प्रकार श्री (गुरु) अमरदास जी ने सिक्खी के दूसरे नेम "सेवा" को कमा कर दिखाया।

प्रो. करतार सिंघ ने ब्यास दरिया से पानी भर कर लाते समय वर्षा और तेज आंधी के दौरान जुलाही की खड्डी के साथ श्री (गुरु) अमरदास जी के टकराने और जुलाही के साथ हुई वार्तालाप को बड़े विस्तार के साथ वर्णन किया है कि एक सच्चे सेवक के मुख से निकले शब्द, गुरु किस तरह पूरा करता है।

श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा श्री (गुरु) अमरदास जी पर मेहर की बारिश कर "निमाणिआं दा माण, निथांविआं दा थांव, निओटिआं दी ओट, निआसरिओं दा आसरा" होने का वर दिया और गोंदे (गोइंदे) नामक जिमींदार की जमीन पर दरिआ ब्यास के किनारे एक नगर बसाने की आज्ञा की, जिसका नाम 'गोइंदवाल' रखा। श्री (गुरु) अमरदास जी अपना सारा परिवार लेकर वहां आ बसे। श्री (गुरु) अमरदास जी रोजाना अमृत वेले वहां से दरिया ब्यास से पानी भर कर खडूर लाते, गुरु जी को स्नान कराते, उनके वस्त्र धोते, लंगर में सेवा करते और शाम को वापस गोइंदवाल चले जाते। कुछ समय ऐसा करने के बाद गुरु अंगद साहिब ने कहा कि "आप वहीं टिके रहो, हम खुद वहां आया करेंगे।"

गुरु जी पहली नजर में ही जान गए थे कि गुरगद्दी की अगली सेवा श्री (गुरु) अमरदास जी ने ही निभानी है और वे हर जिम्मेदारी तथा परीक्षा में भी सफल हुए हैं। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी सचखंड-वापसी निकट जानकर चेत्र सुदी ४ (३ वैसाख), संवत् १६०९ (२९ मार्च, १५५२) को सारी संगत के सामने श्री (गुरु) अमरदास जी को गुरगद्दी पर बैठाया तथा उनके आगे माथा टेका। सारी संगत ने गुरु जी के सम्मुख माथा टेका।

प्रो. करतार सिंघ ने तीसरे कांड में श्री गुरु अंगद देव जी के सपुत्र दासू जी एवं दातू जी के बारे में वर्णन किया है और श्री गुरु अमरदास जी के बासरके चले जाने का जिक्र है।

श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा अपने सेवक श्री (गुरु) अमरदास जी की सिक्खी-सेवकी और सेवा-भावना देख उन्हें जब श्री गुरु नानक देव जी की गुरगद्दी पर बैठाया तो गुरु जी के सपुत्र दासू और दातू को बुरा लगा। वे गुरगद्दी पर अपना हक समझते थे। श्री गुरु अमरदास जी गोइंदवाल में सिक्खी का प्रचार और गुरु नानक साहिब के मिशन को आगे बढ़ाते गए। बाबा दासू जल्दी ही समझ गए कि गुरगद्दी के असली हकदार श्री गुरु अमरदास जी ही हैं, अत: वे गोइंदवाल जाकर श्री गुरु अमरदास जी के चरणों में लगे। छोटे सपुत्र दातू स्वयं को गुरगद्दी का हकदार समझने लगे और खडूर साहिब की संगत में गलत प्रचार करने लगे। कुछ लोगों के बहकाने पर वे गोइंदवाल पहुंचे और सतसंग लगाए बैठे श्री गुरु अमरदास जी को लात मार कर उन्हें गुरगद्दी से नीचे गिरा दिया। गुरु अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी के सपुत्र को इज्जत-भावना से बिठाकर कहने लगे- "मेरे वृद्ध सरीर और सख्त हडिड्यों के कारण आपको चोट लगी होगी! आप मेरे गुरदेव के सपुत्र हो। हुक्म करें कि आप क्या चाहते हैं?"

दातू ने समझा कि गुरु जी डर गए हैं और वो गुरगद्दी पर बैठ गया। गुरु जी वहां से चले गए। दातू के दीवान से सारी संगत उठकर चली गई और अगले दिनों में कोई भी उनके दीवान में नहीं आया। कुछ दिन बाद

दातू वहां से सारा रसद-पानी खच्चरों पर लाद कर खडूर साहिब की ओर चल पड़ा, परंतु रात को रास्ते में लुटेरों ने सारा माल लूट लिया और उनको बहुत दुख हुआ। उधर श्री गुरु अमरदास जी गोइंदवाल से अकेले अपने गांव बासरके के बाहर एक कमरे में बैठ गए और बाहर लिख दिया कि "कोई भी इस दरवाजे को न खोले, जो खोलेगा वो मेरा सिक्ख नहीं होगा।"

गुरु जी के आलोप होने पर संगत में घबराहट फैल गई। संगत ने आस-पास ढूंढा मगर असफल रही। संगत बाबा बुड्ढा जी के पास गई और गुरु जी को ढूंढने को कहा। बाबा जी ने गुरु जी की घोड़ी को काठी पहनाकर खुला छोड़ दिया और उसके पीछे-पीछे चल पड़े। घोड़ी बासरके गांव के बाहर एक मकान के बाहर जाकर रुक गई। बाबा बुड्ढा जी और संगत ने मकान के बाहर लिखे शब्द पड़े तो बाबा जी के कमरे के पीछे पूर्व वाली दीवार में सेंध लगाकर कमरे के अंदर चले गए और संगत भी उनके पीछे आ गई। बाबा जी ने गुरु जी को माथा टेका और विनती की कि "संगत को दर्शन दीजिए, वो व्याकुल हो रही है।" और कहा कि "अगर कोई भूल हो गई हो तो बख्श देना। हमने आपकी आज्ञा को भी नहीं नकारा। देख लें, दरवाजा उसी तरह बंद है?"

गुरु जी हंस पड़े। उन्होंने बाबा बुड्ढा जी के परम सिदक और समझ की दाद दी। फिर गुरु जी बाहर आए और संगत के साथ गोइंदवाल चले गए।

इस पुस्तक का कांड चार बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसमें लेखक ने श्री गुरु अमरदास जी द्वारा श्री गुरु नानक देव जी के मिशन को शिखर तक पहुंचाने का जिक्र किया है और उन्होंने जात-पात, ऊंच-नीच, छुआ-छूत तथा सती-प्रथा जैसी बुराइयों को खत्म कर उसकी जगह एक अच्छी मर्यादा को चालू किया।

जात-पात का खंडन : श्री गुरु अमरदास जी ने जात-पात का पूरी तरह से खंडन किया। गुरु जी ने ऊंची जाति के अहंकार को लोगों के मन से दूर करने के लिए उनको समझाया कि "मनुष्य की कोई जाति नहीं, कर्मों द्वारा ही मनुष्य छोटा-बड़ा होता है। परमात्मा के दर पर जाकर सिर्फ अच्छे और नेक कर्मों का ही फैसला होना है। इस पर गुरु जी ने ब्राह्मण को समझाने के लिए शबद उचारा:

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥ (पन्ना ११२७)

छुआ-छूत : छुआ-छूत को खत्म करने के लिए श्री गुरु अमरदास जी ने कड़े कदम उठाए। गुरु जी ने उनके दर्शन के लिए आने वाली संगत में इस हुक्म को सख्ती से लागू करवाया कि सभी को संगत में बिना भेदभाव के पहले 'पंगत' में बैठकर परशादा छकना चाहिए। अगर कोई ऐसा नहीं करेगा तो उसका सतंसग के लिए आना व्यर्थ जाएगा।

गुरु जी के इस आदेश का सख्ती से पालन हुआ। यहां तक कि उस समय के दिल्ली के बादशाह अकबर को भी गुरु जी के दर्शन को जाने से पहले पंगत में बैठकर परशादा छकना पड़ा।

गुरु जी ने जात-पात के बंधन से बाहर आकर विवाह करने पर बल दिया। गुरु जी ने इस सामाजिक बंधन को तोड़ा और अंतर्जातीय शादियां करानी शुरू कीं। गुरु जी ने इस बुराई को खत्म करने के लिए खुद अपनी बेटी बीबी भानी का विवाह एक घुंघनिआं बेचने वाले भाई जेठा जी से बिना जात-पात पूछे करके एक अच्छी मिसाल पैदा की।

सती-प्रथा का अंत : श्री गुरु अमरदास जी ने

समाज में लम्बे समय से चली आ रही स्त्री की रस्म को बंद करवाया। गुरु जी ने स्त्री जाति को समझाने के लिए गुरबाणी का शबद उचारा और कहा कि सती वो है जो पति के मरने के बाद अपना जीवन ऊंचा रखकर परमात्मा का नाम जपे। फरमान है :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ . . .
सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥
(पन्ना ७८७)

लेखक ने श्री गुरु अमरदास जी के जीवन-इतिहास के कांड ५ में उनके उपदेश, उपकार, प्रचार और सचखंड वापसी का जिक्र किया है। श्री गुरु अमरदास जी शांति और सहनशीलता के पुंज थे। आपने अपने सिक्खों में दूसरे की भूल को माफ करने और बदले की भावना को छोड़ने का प्रचार किया।

श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल नगर में यात्रियों की सुविधा के लिए बाउली का निर्माण संवत् १६१६ में शुरू करवाया। यहां से बिना भेदभाद, जात-पात और छुआ-छूत के हरेक वर्ग के लोग पानी पी सकते थे। बाउली का निर्माण संवत् १६२१ को संपूर्ण हुआ। इस कांड में लेखक ने गुरु जी के बढ़ते सिक्खी के प्रचार से उत्पन्न हुए ईर्ष्यालु व विरोधियों का भी जिक्र किया है जिन्होंने बादशाह अकबर से जा शिकायत की।

श्री गुरु अमरदास जी ने बाउली के निर्माण के बाद प्रेमी सिक्खों के कहने पर गोइंदवाल में वैसाखी का जोड़-मेला मनाने का फैसला किया और पहली वैसाखी का मेला संवत् १६२४ में मनाया गया।

श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी के सिक्खी के प्रचार को आगे बढ़ाते हुए २२ गुरसिक्खों को देश के अलग-अलग इलाकों में प्रचार के लिए भेजा। गुरु जी ने इनको "२२ मंजियों" का नाम दिया। प्रो. करतार सिंघ ने लिखा है कि गुरु जी ने गुरसिक्खी के प्रचार के लिए स्त्रियों को भी "५२ पीहड़े" बख्शे।

ज्योति-जोत समाना : श्री गुरु अमरदास जी द्वारा ली गई प्रत्येक परीक्षा में योग्य साबित होने पर भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) को गुरगद्दी की जिम्मेदारी संभाल गुरु जी संवत् १६३१ (१ सितंबर, १५७४) को ज्योति-जोत समा गए।



प्रि. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ द्वारा लिखित "सिक्ख इतिहास" में (पृष्ठ ५१ का शेष)

गुरु साहिब से जोड़े रखे। गुरु साहिब ने पहले व दूसरे पातशाह की बाणी को संभाला तथा कुछ भक्तों की बाणी एकत्र की जो श्री गुरु अरजन देव जी के पास संपादना के समय मौजूद थी। गुरु जी ने सामाजिक सुधार भी किए। आपने 'अनंदु साहिब' बाणी की रचना की। आपने विवाह एवं मृत्यु की रस्मों में सुधार किया। आपने सिक्खों को खुशी एवं गमी के समय 'अनंदु साहिब' बाणी पढ़ने का आदेश किया तथा सभी रस्मों को गुरबाणी की सहायता से अदा करने की मर्यादा चलाई। आपने गुरगद्दी के उत्तराधिकारी के लिए दोनों दामाद-- भाई रामा जी एवं भाई जेठा जी की परीक्षाएं लीं, जिसमें से भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) गुरगद्दी के योग्य ठहरे। आप लंबी आयु के बाद सितंबर १५७४ को ज्योति-जोत समा गए।



भाई सत्ता-भाई बलवंड कृत "रामकली की वार" का ऐतिहासिक महत्व

*-डॉ. हरबंस सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल २२ वारें हैं। इनमें से तीन वारें श्री गुरु नानक देव जी की, चार वारें श्री गुरु अमरदास जी की, आठ वारें श्री गुरु रामदास जी की और छ: वारें श्री गुरु अरजन देव जी की हैं। बाईसवीं वार गुरु-घर के निकटवर्ती और हजूरी कीर्तनिये भाई सत्ते-बलवंड द्वारा रचित है, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ९६६-९६८ पर अंकित है। इन बाईस वारों में से कुछ वारें ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। ये वारें है--माझ की वार महला १, मलार की वार महला १, आसा की वार महला १, मारू की वार महला ३, रामकली की वार महला ३, गउड़ी की वार महला ४ और सत्ते-बलवंड की वार, जिसको रामकली वार और टिक्के की वार भी कहा जाता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जहां सिक्ख धर्म का आध्यात्मिक ग्रंथ है, वहां इस ग्रंथ में मिलते संकेतों और विवरणों से मध्यकालीन भारतीय समाज, संस्कृति/लोक जीवन, आर्थिक दशा, राजनैतिक दशा, प्रचलित उपभाषाओं और धर्मों के बारे में जो जानकारी मिलती है, वह अन्य कहीं से नहीं मिलती। गत कुछ वर्षों से सिक्ख इतिहास के विद्वानों ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी की ऐतिहासिक महानता को बहुत गंभीरता सहित विचार और प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत के रूप में उपयोग में लाना आरंभ किया है। सच तो यह है कि प्रारंभिक सिक्ख इतिहास की कई प्रमुख घटनाओं और गुरु साहिबान के व्यक्तित्वों के बारे में हमारे पास श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी और भाई गुरदास जी की वारों के अतिरिक्त अन्य कोई समकालीन स्रोत ही नहीं जिस पर विश्वास किया जा सके।

गुरु-काल में देश में शासन मुगलों का था। उस समय जो ऐतिहासिक रचनायें रची गईं, उनमें बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब के शासन-काल के विवरण तो बहुत विस्तृत रूप में मिल जाते हैं परंतु इन स्रोतों में गुरु साहिबान के जीवन के साथ संबंधित घटनाओं के बारे में एकाध प्रसंग को छोड़कर अन्य कुछ नहीं मिलता। इस समय की हिंदू-कृतियां भी ऐतिहासिक पक्ष से मौन हैं। अत: प्रारंभिक सिक्ख इतिहास की जो जानकारी हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की कुछ विशेष पावन बाणियों या भाई गुरदास जी की वारों से मिलती है वह अन्य किसी भी रचना में उपलब्ध नहीं। बाबर के अत्याचारी शासन के विरुद्ध गुरु नानक साहिब द्वारा रचित बाणी के शबद, गउड़ी की वार महला ४, बाबा सुंदर जी की बाणी-रामकली सदु, भट्टों के सवैये और भाई सत्ते-बलवंड की वार ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महान बाणियां हैं।

भाई सत्ता-भाई बलवंड डूम मिरासी थे। ख्याल किया जाता है कि ये दोनों सगे भाई थे। *(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ)*। नि:संदेह बाबा किरपाल सिंघ (भल्ला) *(महिमा प्रकाश संवत् १८५७)* में भाई सत्ता जी को भाई बलवंड जी का बेटा

**३-ई/३८, सेकंड फ्लोर, न्यू रोहतक रोड, नजदीक नव हिंद गर्ल्स सीनियर सेकंडरी स्कूल, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५, फोन : ०११-६५५८६३९५*

लिखता है, परंतु इनके विचार की पुष्टि अन्य कहीं से नहीं होती। भाई वीर सिंघ ने "अशट गुरू चमतकार" में (भाग १-२, पृष्ठ १६ पर) भाई सत्ता जी को "भाई बलवंड जी की बूआ का पुत्र" करके लिखा है। भाई सत्ता जी के पिता उनके बचपन में ही गुजर गए थे और भाई बलवंड जी, भाई सत्ता जी की निगरानी हेतु आया करते थे। यही लेखक आगे चलकर लिखता है कि जब भाई मरदाना जी परलोक गमन कर गए तो श्री गुरु नानक देव जी ने कीर्तन करने की सेवा इन दोनों भाइयों के सपुर्द कर दी। ये दोनों भाई श्री गुरु अरजन देव जी के समय तक कीर्तन की सेवा निभाते रहे। इनका देहांत श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय लाहौर में हुआ। इनकी अंतिम रस्मों के समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी स्वयं उपस्थित थे।

सिक्ख इतिहास संबंधी कृतियों में जिक्र आता है कि भाई सत्ता-भाई बलवंड किसी बात से श्री गुरु अंगद देव जी के साथ नाराज हो गए। "शबदार्थ भाग तृतीय" (पंजाबी भाषा, गुरमुखी अक्षर) के पृष्ठ ९६६ पर दी गई पाद-टिप्पणी में लिखा है कि भाई बलवंड और भाई सत्ता श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में कीर्तन करते थे। इन्होंने लड़की की शादी पर गुरु जी से माया (धन) की मांग की। वैसाखी के दिन का सारा चढ़ावा बहुत थोड़ा होने के कारण ये नाराज हो गए और इन्होंने कीर्तन करना रोक दिया। गुरु जी ने उनके पास सेवक भेजे लेकिन वे फिर भी न आये। फिर गुरु जी स्वयं चलकर उनको मनाने हेतु उनके घर गये। उन्होंने आगे से अहंकार में आकर गुरु जी का अनादर किया और गुरु जी की शान के विपरीत वचन भी कहे, जिससे गुरु जी के मुख में से सहज-स्वभाव निकला, "तुम फिट्ट गए हो।" यह वचन निकलते ही उनको फेटा पड़ गया। एक बार बाबा बुड्ढा जी के द्वारा विनती करने पर भी उन्होंने कीर्तन सुनाने से मना कर दिया था। अंत में पंचम पातशाह के समय भाई लद्धा जी के विनती करने पर आप दोनों बख्शे गए। तब उन्होंने पहले पांच गुरु साहिबान की स्तुति में यह वार उच्चारण की जिसको श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित करके इन कीर्तनियों को सदैव काल के लिए अमर कर दिया। प्रोफेसर साहिब सिंघ विवाह वाली यह घटना श्री गुरु अरजन देव जी के समय हुई बताते हैं जबकि इस वार की भीतरी गवाही से, विवाह और चढ़ावे की यह घटना श्री गुरु अंगद देव जी के समय हुई प्रतीत होती है।

इस वार की कुल ८ पउड़ियां हैं, जिनमें पहली पांच पउड़ियां भाई बलवंड जी की उच्चारण की हुई हैं तथा शेष तीन भाई सत्ता जी की। पहली पांच पउड़ियों में श्री गुरु अंगद देव जी की उपमा अथवा उनके गुणों का गायन किया गया है जबकि आगे वाली तीन पउड़ियों में श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा गुरु-पदवी ग्रहण करने के संक्षिप्त विवरण अंकित हैं।

सर्वप्रथम बात जो इस वार से स्पष्ट रूप में हमारे सामने आती है वो यह है कि श्री गुरु नानक देव जी ने सच रूपी किला बनाकर, मजबूत नींवों पर धर्म का राज्य चलाया और अपने जीते-जी अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करके इन नवजन्मे धर्म की बागडोर एक बुद्धिमान और सुयोग्य पुरुष के हाथ देकर इसका भविष्य सुरक्षित कर दिया :

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥
लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥ (पन्ना ९६६)

अर्थात् गुरु नानक पातशाह ने भाई लहिणा जी के सिर पर गुरिआई का छत्र झुला

कर उनको 'लहिणे' से 'श्री गुरु अंगद देव जी' बना दिया। धर्मों के इतिहास में यह प्रथम बार हुआ कि किसी गुरु ने अपने शिष्य के आगे मस्तक झुकाकर उसको अपने जैसा ही बना दिया हो :

गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ *(पन्ना ९६६)*

उत्तराधिकारी की नियुक्ति के संबंध में मिस्टर आर्चर लिखता है :

"(Guru) Nanak is by the way, the most conspicious if not only Indian reformer who made definite arrangement for successor whose responsibility was preservation and spread of his own message."

सिक्ख धर्म इस बात में विश्वास रखता है कि नि:संदेह इस धर्म के मानने वालों का पथ-प्रदर्शन करने वाले दस गुरु साहिबान हुए हैं लेकिन उनमें ज्योति वही थी जो बाबा नानक जी ने प्रज्वलित की थी। गुरु साहिबान मात्र शरीर बदलते रहे हैं परंतु उनके हृदय में प्रकाश की जलती ज्वाला वही थी जिसका प्रकाश श्री गुरु नानक देव जी बांटते रहे थे :

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ *(पन्ना ९६६)*

यहां मैं श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय के एक मुस्लिम इतिहासकार जनाब मोहसन फानी का प्रसंग देना चाहता हूं। उन्होंने अपनी रचना **"दबिस्ताने-मजाहिब"** में लिखा है :

The Sikhs say that when (Guru) Nanak left his body, he absorbed himself in Guru Angad. . . and after that at the time of. . . (physical end), Guru Angad entered into the body of (Bhai) Amardas in the above mentioned manner. He in the same manner occupied a place in the body of (Bhai) Ramdas and Guru Ramdas in the same way got united with (Sri) Arjan Mal. (Eng. tr. Dr. Ganda Singh)

इसी तथ्य को भट्ट बाणीकार इस प्रकार बयान करते हैं :

गुरु नानकु निकटि बसै बनवारी ॥
तिनि लहणा थापि जोति जगि धारी ॥
लहणै पंथु धरम का कीआ ॥
अमरदास भले कउ दीआ ॥
तिनि स्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ ॥
हरि का नामु अखै निधि अप्यउ ॥
(पन्ना १४०१)

गुरु-घर में *"काइआ पलटि सरूप बणाइआ"* के सिद्धांत के बारे में भाई गुरदास जी बहुत स्पष्ट हैं। वे लिखते हैं :

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।
जोती जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ। *(वार १:४५)*

भाई साहिब आगे लिखते हैं :

लहणे पाई नानको देणी अमरदासि घरि आई।
गुरु बैठा अमरु सरूप होइ गुरमुखि पाई दादि इलाही। *(वार १:४६)*

गुरु-घर में आ रहे इस नये परिवर्तन को अपने कथन द्वारा इतिहास का अंग बनाने वाले पहले बाणीकार भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी थे जिन्होंने *"जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ"* के सिद्धांत को अपनी बाणी द्वारा उजागर किया।

भाई लहिणा जी का चयन किसी साधारण प्रक्रिया का परिणाम नहीं था, यह धरती का बोझ उठाने के समान था, इसी लिए भाई लहिणा जी ने गुरु नानक साहिब के दरबार में रहकर बहुत बड़ी कमाई की थी :

पए कबूलु खसंम नालि जां घाल मरदी घाली ॥
(पन्ना ९६७)

यह जिम्मेदारी सौंपने से पूर्व गुरु नानक साहिब ने अपने पुत्रों और सिक्ख सेवकों की बहुत समीक्षा की थी। जब आप जी को पूर्ण संतुष्टि हो गई कि उनके इस कार्य/उद्देश्य को भाई लहिणा जी ही आगे ले जा सकते हैं तब आप जी ने अपनी ज्योति "मर्दी" वाली कमाई करने वाले भाई लहिणा जी के हृदय में टिका दी अथवा स्थित कर दी :

जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥
सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥
जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु ॥ (पन्ना ९६७)

पुत्रों को गुरगद्दी न देकर अपने स्थान पर अपने एक सेवक को गुरु स्थापित करना एक क्रांतिकारी कदम था। सदियों से परिपाटी चली आ रही थी कि पिता के परलोक गमन के बाद उसका बड़ा पुत्र ही जमीन-जायदाद का मालिक या घर का मुखिया बनता था। राज घरानों में भी यही धारणा चली आ रही थी, परंतु बाबा नानक जी ने पुत्रों को गुरगद्दी न देकर उल्टी गंगा बहा दी। उनके इस कदम को देखकर लोग हैरान थे कि बाबा नानक ने यह क्या किया है:

होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥
(पन्ना ९६७)

बाबे नानक का यह निर्णय पुत्रों तथा सगे-संबंधियों के गले से नीचे नहीं उतर रहा था। वे इस निर्णय को मानने के लिए तैयार न थे। वे गुरु की ओर पीठ कर उनके निर्णय को वापस करते रहे :

पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कन्ह मुरटीऐ ॥
दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ ॥ (पन्ना ९६७)

आगे चलकर गुरु साहिबान के द्वारा योग्यता के आधार पर उत्तराधिकारी का चयन करने वाला निर्णय अन्य दावेदारों की तरफ से विरोधता का गंभीर रूप धारण कर गया। बाबा दातू तथा बाबा दासू की विरोधता, बाबा मोहन तथा बाबा मोहरी, प्रिथीचंद, रामराय और धीरमल आदि इसी कड़ी के अंग थे जिन्होंने अपनी विरोधता द्वारा सिक्ख धर्म को क्षति पहुंचाने के अनेक विफल प्रयास किये, परंतु सिक्ख संगत उस महापुरुष को ही "गुरु" स्वीकार करती रही जिसको गुरु पातशाह ज्योति-जोत समाने से पूर्व उत्तराधिकारी नियुक्त कर जाते रहे।

सिक्ख धर्म का प्रथम प्रचार-केंद्र श्री गुरु नानक देव जी ने करतारपुर में स्थापित किया था। श्री गुरु अंगद देव जी ने करतारपुर से आकर खडूर को बसाया और इसको सिक्खी के प्रचार का दूसरा महान केंद्र बना दिया :

फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥
(पन्ना ९६७)

भाई गुरदास जी ने भी इस बात की ओर संकेत किया है :

दिता छोड़ि करतारपुरु बैठि खडूरे जोति जगाई।
(वार १:४६)

करतारपुर रहते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने जिस निर्मल पंथ को स्थापित किया उसी निर्मल पंथ को गुरु नानक साहिब की बख्शिश तथा बरकत का सदका श्री गुरु अंगद देव जी और अधिक आगे ले गए। श्री गुरु नानक देव जी ने जहां "नाम जपो, किरत करो, वंड छको" के सिद्धांत का प्रचार किया वहां आप जी ने सिक्ख धर्म की प्रमुख संस्थाओं की भी नींव रखी, जो कि आज भी कायम है। ये संस्थाएं हैं--संगत, पंगत और कीर्तन की परंपरा। सिक्ख धर्म का समस्त अस्तित्व इन सिद्धांतों और

संस्थाओं की नींवों पर खड़ा है। खडूर में दर्शन करने आती संगत को जहां गुरु के लंगर से बढ़िया भोजन (पकवान) छकने को मिलता था वहां गुरु के दरबार में गुरु के शबद और नाम का लंगर अटूट बरतता था जिसमें कदापि अभाव नहीं होता था :

लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥
खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥
(पन्ना ९६७)

श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री जाति के उत्थान के लिए बहुत शक्तिशाली आवाज बुलंद की थी। वक्त बुरे थे। स्त्री को घर की चारदीवारी और पर्दे में ही रहना पड़ता था। उसकी तुलना ढोर, गंवार, शूद्र और पशुओं के साथ की जाती थी। गुरु जी के क्रांतिकारी बोलों का प्रभाव यह हुआ कि माता खीवी जी पर्दे की रस्मों को तोड़कर स्वतंत्रता सहित खडूर साहिब आने वाली संगत की सेवा में लग गए। आप जी संगत के ठहरने और उनके लंगर-पानी का अच्छा प्रबंध करते। माता खीवी जी बहुत ही प्यार भरे एवं मीठे स्वभाव के थे। आप जी ऐसे घने वृक्ष की छाया जैसे थे जिसके नीचे बैठ कर थके-हारे राहगीरों तथा मुसाफिरों को सुख, शांति एवं सकून मिलता है। भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी ने उनके लंगर में घी वाली खीर बरताये जाने का उल्लेख किया है। वे लिखते हैं कि माता जी द्वारा की जा रही सेवा और लंगर को देखकर गुरसिक्खों को तो खुशी है परंतु मनमुखों के चेहरे पीले पड़ गए हैं। माता खीवी जी की उपमा में भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी लिखते हैं :

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥
गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥
(पन्ना ९६७)

माता खीवी जी ही एक मात्र ऐसी सौभाग्यशाली नारी हैं जिनका नाम श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्नों में अंकित है।

प्रथम पांच पउड़ियों में श्री गुरु अंगद देव जी के गुरिआई-काल को चित्रित करने के पश्चात भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी लिखते हैं कि जैसे गुरु नानक साहिब ने योग्य पुरुष की खोज करके अपनी ज्योति को टिकाया था उसी तरह श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी ज्योति को श्री गुरु अमरदास जी में टिका दिया। वार के रचयिता गुरु नानक साहिब को दादा, गुरु अंगद साहिब को पिता और गुरु अमरदास साहिब को पौत्र के रूप में बयान करते हुए लिखते हैं :

सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥
पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥ (पन्ना ९६८)

पौत्र-गुरु (गुरु अमरदास जी) भी विख्याति-प्राप्त है, क्योंकि वह भी गुरु नानक साहिब और गुरु अंगद साहिब जैसा ही है। श्री गुरु अमरदास जी ने सहज अवस्था का घोड़ा बनाया, विकारों की ओर से इंद्रियों को रोक कर रखने को काठी बनाया, सच्चे आचरण का कमान कसा और परमात्मा की सिफत-सलाह का तीर पकड़ा है। वारकार कहते हैं कि हे पर्वत समान अडोल रहने वाले श्री गुरु अमरदास जी! जिसको तूने अपनी कृपा द्वारा 'शबद' की राहदारी बख्श दी है, उसका जन्म-मरण कट गया है।

श्री गुरु अमरदास जी बहुत नर्मदिल, उदार और लोगों की पीड़ा जानने वाले हैं। उनमें पर्वत जैसी दृढ़ता तथा अडोल रहने की शक्ति है :

झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥
जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥
(पन्ना ९६८)

आप जी ने अपने सच्चे व निर्मल जीवन के साथ उन सिद्धांतों तथा परंपराओं को और अधिक मजबूत किया जो आप जी को गुरु

नानक साहिब और गुरु अंगद साहिब से विरासत में मिली थीं।

इस वार से पता चलता है कि लंगर की जिस मर्यादा को गुरु नानक साहिब के बाद गुरु अंगद साहिब ने जारी रखा श्री गुरु अमरदास जी ने उसको और अधिक मजबूत किया। माता खीवी जी द्वारा चलाये लंगर की भांति श्री गुरु अमरदास जी के लंगर में भी बढ़िया तथा स्वादिष्ट वस्तुएं तैयार की जातीं और संगत को छकाई जाती थीं :

नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥

(पन्ना ९६८)

सिक्ख इतिहास की एक प्रचलित परंपरा से ज्ञात होता है कि जब हरीपुर का राजा और मुगल बादशाह अकबर गोइंदवाल आये तो उन्होंने गुरु के लंगर में जाकर परशादा छका और प्रसन्न होकर लंगर के नाम कुछ जागीर लगानी चाही परंतु गुरु जी ने यह कहकर इंकार कर दिया कि इसको तो सिक्ख संगत अपने दसवंध से ही चलाती रहेगी। संगत द्वारा चलाया जाता लंगर आज भी जारी है।

सातवीं पउड़ी में वारकारों ने श्री गुरु रामदास जी के बारे में लिखा है :

नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥
गुरु डिठा तां मनु साधारिआ ॥ (पन्ना ९६८)

यही बाणीकार इससे पहले की पंक्तियों में लिखते हैं :

धंनु धंनु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥
पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ ॥ . .
धंनु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥

नि:संदेह उपर्युक्त अंतिम पंक्ति में चक्क रामदास या रामदासपुर का नाम नहीं आया, परंतु सांकेतिक रूप में वे उसी धरती को नमन कर रहे हैं जहां हे सच्चे गुरु! तेरा निवास है।

श्री गुरु रामदास जी की उपमा में और लिखा है कि हे गुरु! तू सदैव स्थिर रहने वाला है, तू अडोल है, तू ऐसा विशाल सागर है जिसके इस किनारे और उस पार के किनारे का अंत नहीं पाया जा सकता, जिन्होंने आपको स्मरण किया है तथा आपके हुक्म को माना है, आपने उनको भवसागर से पार कर दिया है:

अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु न पारावारिआ ॥
जिन्ही तूं सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ (पन्ना ९६८)

सन् १५८१ में ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु रामदास पातशाह ने अपनी ज्योति (गुरु) अरजन देव जी के हृदय में टिका दी :

तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥
उगवणहु ते आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥

(पन्ना ९६८)

जिस गुरु-परंपरा को पहले चार गुरु साहिबान रौशन करते आए हैं अब उनकी जगह पर पांचवां गुरु विराजमान है। गुरु अरजन साहिब का तेज-प्रताप हरेक दिशा में फैल गया है। सूर्य उगने से डूबने तक और सूर्य डूबने से फिर उगने तक इस गुरु ने चारों चकों (दिशाएं) में उजाला कर दिया है। अपने मन के पीछे चलने वाले जिन मनुष्यों ने गुरु के हुक्म को नहीं माना वे आत्मिक मृत्यु मर जाते हैं।

वारकारों के अनुसार सिक्खी के महल का निर्माण करने वाले श्री गुरु नानक देव जी हैं। उनकी दैवी ज्योति गुरु अंगद साहिब, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी में प्रकाशमान हुई है। यह गुरु नानक पातशाह के ही बढ़प्पन का सदका है कि शेष चार गुरु साहिबान की सिफ्त-सालाह की कीर्ति चारों ओर फैल गई है।

भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी की वार

जहां मानव-मन को आध्यात्मिक तौर पर शांति प्रदान करती है वहां ऐतिहासिक दृष्टि से यह एक ऐसी अमूल्य निधि है जिसके अस्तित्व के बिना प्रमाणिक सिक्ख इतिहास की कई महत्वपूर्ण घटनाओं को चित्रित नहीं किया जा सकता। वार में सांकेतिक रूप में आये ऐतिहासिक प्रसंगों के द्वारा हमको कई ऐसी घटनाओं के बारे में पता चलता है जिनके बारे में हमें अन्य कहीं से कोई जानकारी नहीं मिलती।

पंजाबी काव्य के विकास में और विशेषत: वारों तथा ऐतिहासिक काव्य-रचना के क्षेत्र में इन डूमों तथा भट्टों का बहुत योगदान है। ये लोग पंजाब के प्रारंभिक इतिहासकार थे जिन्होंने गुरु साहिबान के जीवन एवं उनके व्यक्तित्व के बारे में सांकेतिक रूप में कई महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख करके सिक्ख इतिहास के सृजन के लिए परिपक्व आधार तैयार किया। गुरु-काल के इतिहास के लिए भाई सत्ते-भाई बलवंड की वार एक अमूल्य ऐतिहासिक सनद है।

इस वार के कर्त्ता दोनों बाणीकार अच्छे विद्वान तथा उच्च कोटि के कवि सिद्ध होते हैं। इनको गुरु-चेतना तथा गुरु-सिद्धांतों की अद्वितीय समझ थी। वार की कुछ पंक्तियों से ज्ञात होता है कि ये बाणीकार 'रहस्य' की ऊंची मंजिल तक पहुंचे हुए थे। इस वार में नि:संदेह ऐतिहासिक विवरणों का बयान अति संक्षिप्त तथा संकुचित है परंतु इस वार के ऐतिहासिक महत्व से इंकार नहीं किया जा सकता। 

कविता

जीवन बनाम मृत्यु

सूरज के सूरजमुखी फूल का खिलना
और धरती के तमाम फूलों का महकना
झरनों का झर-झर झरना
नदियों का कल-कल बहना, पक्षियों का चहचहाना
यही तो जीवन है, जीवन-उपवन है।
चांद का मुस्कराना
चांदनी का दूर-दूर तक फैल जाना
दूब के नर्म-मुलायम गलीचे का बिछ जाना
और उस पर नंगे पांव चलना
पवन के तराने सुनना
कोई लोकगीत गुनगुनाना, कर्ता को याद करना
यही तो जीवन है, जीवन-उपवन है।
किसी के दुख-दर्द को सुनना
किसी को दुख-दर्द सुनाना
गले मिलना, गले लगाना
गैरों-बेगानों को अपना बनाना
राहों पर से कांटे चुनना
और राहों पर फूल बिछाना
यही तो जीवन है, जीवन-उपवन है।
फिर सूरज का ढलना और छिप जाना
अंधेरे में आकृतियों का खो जाना
सन्नाटे में घिर जाना, सन्नाटा हो जाना
यही है जीवन का विदा हो जाना
मत्यु की आगोश में सो जाना
सच की पवित्रता को शक्ति बनाना
सच के लिए सूली पर चढ़ जाना
बुलंद हौंसले से चरित्र की बुलंदी पाना
हंसते-हंसते बंद-बंद कटवाना
शीश कटा देना पर नहीं शीश झुकाना
जुल्म से टकराना, जालिम को ललकारना
ईमान की रक्षा के लिए कुर्बान हो जाना
यह पवित्र संघर्ष है, जीवन का उत्कर्ष है
जीवन जीने का यही मार्ग दिखाना
जीवन और मृत्यु का अंतर मिटाना। 

-डॉ. कशमीर सिंघ नूर, बी-एक्स ९२५, संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर, मो: ९८७२२-५४९९०

"रामकली की वार" में श्री गुरु अमरदास जी का चरित्र-चित्रण

*-स. सतविंदर सिंघ फूलपुर**

श्री गुरु अमरदास जी के जीवन से परिचित कराने वाले निकटवर्ती स्रोतों में से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भाई सत्ता-भाई राय बलवंड जी की वार एक अहम स्रोत है। इस वार में वर्णित श्री गुरु अमरदास जी के जीवन-चरित्र को जानने से पहले हम भाई सत्ता-भाई राय बलवंड जी के बारे में संक्षिप्त बात करेंगे।

भाई सत्ता जी-भाई राय बलवंड जी तथाकथित मोखड़ जाति के मिरासी थे जो श्री गुरु अरजन देव जी के दरबार में कीर्तन करते थे। भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी ने गुरु-स्तुति में "रामकली की वार" बाणी का उच्चारण श्री गुरु अरजन देव जी के दरबार में किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ९६६ से ९६८ पर दर्ज इस वार की आठ पउड़ियां हैं। पहली तीन पउड़ियां भाई राय बलवंड जी की तथा आखिरी पांच भाई सत्ता जी की हैं।

इनकी बाणी गुरु-दरबार में प्रवान होने तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज किए जाने के कारण भाई सत्ता जी-भाई राय बलवंड जी भी भक्त साहिबान और भट्ट साहिबान की तरह आध्यात्मिक तथा प्रतिभावान बाणीकार के रूप में उज्जवल हो गए।

भाई सत्ता जी-भाई राय बलवंड जी अपनी इस आध्यात्मिक वार में गुरु साहिबान को प्रत्यक्ष 'हरि' का रूप स्वीकार करते हुए उनके व्यक्तित्व को एक नायक के रूप में पेश करते हैं। वे दस गुरु साहिबान में प्रभु-ज्योति को परिवर्तित होते देखते हैं। इस बाणी में संयोगात्मक शैली के साथ मिथिहासिक अलंकारमय शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

ऐतिहासिक दृष्टि से उनकी बाणी में गुरु साहिब के जीवन सम्बंधी कुछ महत्वपूर्ण संकेत मिलते हैं, जैसे गुरगद्दी सौंपते समय अपने सिक्खों और पुत्रों की पड़ताल करके योग्यता के आधार पर उत्तराधिकारी का चयन करना, लंगर की व्यवस्था के बारे में, श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा खडूर नामक नगर बसाने के बारे में आदि।

श्री गुरु अमरदास जी का चरित्र-चित्रण : इस वार की छठी पउड़ी में भाई सत्ता जी ने श्री गुरु अमरदास जी की स्तुति इस प्रकार की है:

नानक ज्योति के धारक : भाई सत्ता जी गुरु नानक साहिब के बाद के गुरु साहिबान में एक निरंकारी नानक ज्योति को परिवर्तित होते स्वीकार करते हैं। वे श्री गुरु अमरदास जी में गुरु नानक साहिब की ज्योति को देखकर उन्हें श्री गुरु नानक देव जी का पोता कहकर संबोधित करते हैं। यह 'पोता' शब्द पारिवारिक सम्बंधों के लिए नहीं बल्कि गुरिआई की परंपरा का प्रतीक है। भाई सत्ता जी के इस कथन से यह भी प्रतीत होता है कि गुरु-परंपरा में गुरु-चेले का सम्बंध पिता-पुत्र के सम्बंध से अधिक महत्वपूर्ण है। गुरु साहिबान ने खून के रिश्ते से अधिक आज्ञाकारी शिष्य और गुरु-परंपरा वाले पुत्र-पोते को उत्तराधिकारी के रूप में

**सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर। मो: ९९१४४१९४८४*

स्वीकार किया है। इसी संदर्भ में भाई सत्ता जी ने श्री गुरु अमरदास जी को, पिता श्री गुरु अंगद देव जी और दादा श्री गुरु नानक देव जी के धर्म के रिश्ते से पोता स्वीकार करके संग्रामी रूप उजागर किया है। श्री गुरु अमरदास जी के मस्तक पर भी वही नूर है, वही तख्त है, वही दरबार है जो श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु नानक देव जी का था। इस प्रकार भाई सत्ता जी ज्योति और जुगत की एकरूपता को रूपमान करते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी श्री गुरु नानक देव जी के राज को प्रफुल्लित करने के लिये सर्व-समरथ हैं:

सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥
पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ (पन्ना ९६८)

संग्रामी योद्धा के रूप में : युद्ध के मैदान में दुश्मन के साथ लड़ते समय घोड़े की सवारी की जाती है। शस्त्र के रूप में धनुष और तीर का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार भाई सत्ता जी युद्ध के मैदान का अलंकार खींच कर गुरु जी का संग्रामी रूप उजागर करते हुए कहते हैं कि गुरु जी ने अपनी सहज अवस्था को घोड़ा बनाया है, अपनी इंद्रियों को विकारों से रोकने वाली ताकत को उस घोड़े के ऊपर काठी बनाया है, सच्चे आचरण का कमान कसकर हाथ में परमात्मा की सिफत-सलाह का तीर पकड़ा है। इस प्रकार गुरु जी ने आत्म-संग्राम में कामादिक वैरियों को पछाड़ दिया है :

घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥
धणखु चड़ाइओ सत दा जस हंदा बाणु ॥ (वही)

कलयुग में ज्ञान का सूरज : जैसे सूर्य उदय होने पर रात का घोर अंधेरा खत्म हो जाता है वैसे ही संसार में पसरे हुए विकारों के अंधेरे में पसर रहे धार्मिक पाखंडों और सामाजिक रस्मों की गिरावटों को मिटाने के लिये श्री गुरु अमरदास जी इस संकट से भरे संसार (कलयुग) में सूर्य की भांति प्रकट हुए हैं। उन्होंने मानवता की हृदय रूपी जमीन में पैदा होने वाली नाम रूपी खेती, जो विकारों के कारण उजड़ चुकी थी, को पवित्र आचरण के बल से हरिआवल किया और उसकी रक्षा की :

कलि विचि धू अंधारु सा चड़िआ रै भाणु ॥
सतहु खेतु जमाइओ सतहु छावाणु ॥ (वही)

मुक्ति के दाता : जिन मनुष्यों ने गुरु जी के दर्शाए मार्ग पर चल कर गुरु जी की कृपा द्वारा अपने मन को विषय-विकारों से रोक कर गुरु के शबद में टिका लिया है उनको चहुं कुंट भाव सारी कायनात में बस रहे परमात्मा का अनुभव हो गया है। श्री गुरु अमरदास जी ने जिसको अपनी मेहर से शबद रूपी राहदारी बख्शिश की है उसका जन्म-मरण का चक्कर खत्म कर दिया है और वह मुक्त अवस्था को प्राप्त हो गया है :

चारे कुंडां सुझीओसु मन महि सबदु परवाणु ॥
आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥
(वही)

अडोल अवस्था के मालिक : भाई साहिब गुरु जी की प्रतिभा को विरोधी कीमतों की आंधी में भी सुमेर पर्वत की तरह अडोल खड़े रहने वाली बताते हैं :

झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ (वही)

अंतरयामी : गुरु जी अंतरयामी पुरख हैं। वे जीवों के हृदय की पीड़ा को समझने वाले हैं :

जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ (वही)

परमेश्वर का रूप : भाई सत्ता जी-भाई राय बलवंड जी गुरु साहिबान को प्रत्यक्ष हरि का रूप समझकर श्रद्धा और प्यार से उनकी रूहानी शख्सियत का गुणगान करते हैं। यह गुरु-स्तुति

(शेष पृष्ठ ९९ पर)

"भट्ट-बाणी" में श्री गुरु अमरदास जी की महिमा

-डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ*

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक एक ही ज्योति ने अपने प्रकाश से इस संसार को प्रकाशित किया और समूची मानवीय दुविधाओं का समाधान करते हुए, जीवन की सही सोच से भटके हुए जनों को उपकृत किया। प्रकाश एक था किन्तु उसकी छटा भिन्न-भिन्न थी। हर छटा का निरालापन अवर्णनीय है और अतुलनीय है जो चित्त को सुख, शांति एवं आनंद प्रदान करने वाला है। इस प्रकाश की उत्पत्ति ही महान और पवित्र है:

धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु ॥
सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु गइआ गुमानु ॥
दरि सेवनि संत जन खड़े पाइनि गुणी निधानु ॥
(पन्ना ३२)

उपरोक्त वचन श्री गुरु अमरदास जी के हैं और इस वचन में स्वयं उनकी ही महिमा का संकेत मिलता है। वे माता-पिता धन्य थे जिन्होंने उन्हें जन्म दिया और इस कारण वे परमात्मा में लीन होकर, अंतर की समस्त दुविधाओं, विकारों पर विजय पाते हुए परमात्मा को पा सके। वे परमात्मा की कृपा से गुणों के अथाह भंडार के स्वामी बने और समस्त पवित्र पुरुषों ने उनकी इस महानता की वंदना की। उम्र के जिस पड़ाव पर सामान्य मनुष्य जीवन के उत्साह से वंचित होकर उदासीन और निष्क्रिय होने लगता है और बीते वर्षों के अनुभवों के आधार पर स्वयं को परिपक्व समझने लगता है उस पड़ाव पर श्री गुरु अमरदास जी का एक नितांत विनम्र और दीन बनकर श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में जाना और समधी होते हुए भी उन्हें न केवल "गुरु" धारण करना वरन् एक तुच्छ सेवक की तरह स्वेच्छा से उनकी सेवा में लग जाना अपने आप में एक ऐसी मिसाल है जिसे दोहराया जाना शायद तब तक संभव नहीं है जब तक यह सृष्टि अस्तित्व में है। उन्होंने कुल के मान का त्याग किया, जीवन की सुख-सुविधाओं का त्याग किया, झूठी लोकलाज को दरकिनार किया और याद रखा तो बस सतिगुरु की सेवा और सतिगुरु की इच्छा को। उनके अंदर का "स्व" समाप्त हो गया और बस गया परम पिता का प्रेम। जिस समय श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु अंगद देव जी को अपना "गुरु" धारण किया उस समय श्री गुरु अमरदास जी की आयु ६१ वर्ष की थी और श्री गुरु अंगद देव जी की आयु मात्र ३६ वर्ष की ही थी। उन्होंने सेवा भी ऐसी ली जो सबसे कठिन थी। ६१ वर्ष की आयु में वे मुंह-अंधेरे उठ कर प्रतिदिन तीन कोस दूर ब्यास नदी से पानी लेने जाते थे और जिस गागर में वे पानी भर कर लाते थे उससे श्री गुरु अंगद देव जी स्नान करते थे। इसके पश्चात वे कुएं पर खड़े होकर अन्य सिक्खों को स्नान कराते, लंगर में पानी की सेवा करते और स्वयं सबके बाद लंगर छकते थे। ऐसा कठिन परिश्रम और उत्साह किसी २५ वर्ष के युवक में भी दुर्लभ था। सेवा-कार्य से अधिक

*ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: ९४१५९६०५३३

महान थी सेवा की वह भावना जिसने उन्हें "अमरू निथावां" से "निमाणिआं दा माण, निथाविआं दा थांव, निओटिओं दी ओट, निआसरिआं दा आसरा धंन-धंन श्री गुरु अमरदास जी" बनाया। परिश्रम तो बहुत-से लोग करते हैं किन्तु किसी लालसा में। निज स्वार्थ अथवा बाध्यता में लोग आज्ञा-पालन को भी विवश होते हैं। हर उस जगह लोग सिर झुकाने को तैयार हो जाते हैं जहां कामनाओं की पूर्ति की संभावना है। श्री गुरु अमरदास जी चित्त की उस स्थिरता की खोज में श्री गुरु अंगद देव जी की शरण गये जो उन्हें जीवन के मर्म तक पहुंचा सके। उनके इस उद्देश्य की पवित्रता और महानता ने ही उन्हें गुरगद्दी पर आसीन कराया और अपार गुणों का स्वामी बनाया। भट्ट कवियों ने उनकी महिमा का अत्यंत सटीक और सुंदर वर्णन किया है। भट्ट भल जी कहते हैं कि उनके गुणों का वर्णन किया ही नहीं जा सकता:

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि
कुसम बसंत गनंत न आवै ॥
रवि ससि किरणि उदरु सागर को
गंग तरंग अंतु को पावै ॥
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के
कबि जन भल्य उनह जो गावै ॥
भले अमरदास गुण तेरे
तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ (पन्ना १३९६)

बड़े-बड़े तीर्थों में जाकर स्नान करने का मोह उन्हें नहीं रहा, उन्होंने परमात्मा के ध्यान में ही पवित्रता प्राप्त कर ली। सांसारिक भोग-विलास व्यर्थ हैं। यह ज्ञान उन्हें प्राप्त हो गया और परमेश्वर में लीन होकर उन्होंने परम आनंद पा लिया और इससे उनमें सच्ची उमंग तथा उत्साह पैदा हो गया था। उनके मुख से ईश्वर-प्रेरित शुभ वचन बाहर आते तो जीवन में मिठास भर देते और विकारों की कड़वाहट दूर हो जाती। उन्होंने परमात्मा की उच्च अवस्था को सेवा द्वारा पा लिया था। श्री गुरु अमरदास जी ने इस उच्च अवस्था का वर्णन अपनी बाणी में कई जगह किया है। एक स्थान पर वे इसे पति के प्यार में डूबी हुई नारी जैसी दशा बताते हैं :

आपणे पिर कै रंगि रती मुईए सोभावंती नारे ॥
सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे ॥
सचै भाइ पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइआ ॥
आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि समाइआ ॥
सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥
नानक सा धन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥ (पन्ना ५६७)

शोभा उस नारी की है जो अपने प्रियतम के प्यार में सराबोर होकर उस पर मर-मिटी है और निष्ठापूर्वक अपने प्रेम-भाव से अपने प्रियतम को रिझा सकती है। जब नारी अपने प्रियतम पर सच्चे प्रेम को प्रकट करती है तो प्रियतम भी उसे अपनी प्रीति से सम्पन्न करता है। जब नारी अपना सब कुछ प्रियतम पर न्यौछावर करके अपने हृदय में बसे प्रियतम के लिये ही स्थान रखती है तो वह प्रियतम का मन जीत लेती है। अपने प्रियतम पर न्योछावर हुई उस पर पूर्ण निष्ठा रखने वाली और अंतर में प्रियतम के प्रेम तथा उसके मोहपाश में बंधी हुई नारी की सबसे बड़ी शोभा उसका यह प्रेम ही बन जाता है और इस दशा में प्रियतम स्वयं आगे बढ़ कर उसके प्रेम को सम्मान देते हुए

उसका वरण कर लेता है। श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी अनथक और निश्छल सेवा-समर्पण-प्रेम द्वारा पहले स्वयं इस अवस्था को प्राप्त किया, उसके बाद अपने उपरोक्त वचनों द्वारा लोगों को इस ओर प्रेरित किया। इस तरह उन्होंने विचार में ही नहीं व्यवहार में भी आदर्श स्थापित किया। वास्तव में यह सम्पूर्ण सिक्ख धर्म-दर्शन की विलक्षणता है कि सिक्ख गुरु साहिबान ने ऐसे सिद्धांत प्रतिपादित किये जो व्यवहारिक थे। इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता उन्होंने अपने व्यवहार से सिद्ध की। धर्म को विशद और गंभीर ग्रंथों से बाहर निकाल कर व्यवहार के धरातल पर खड़ा किया गया और उसके सर्वकल्याणकारी और सुगम-सरल-सहज स्वरूप को मुखर किया गया। धर्म के हर घर और हर मन में स्थापित हो सकने वाले स्वरूप को देखकर समाज आहलादित हो उठा और बड़ी संख्या में लोग सिक्ख बनने लगे। सिक्ख गुरु साहिबान ने वस्तुत: सदियों से चले आ रहे धर्म के परंपरागत अर्थ ही बदल दिये और लोगों को विकारों से मुक्त सही सोच प्रदान की। उन्होंने धर्म के साथ संबंधित शब्दों को भी नये अर्थ दिये इसी के प्रभाव में भाई कल सहार जी ने जब श्री गुरु अमरदास जी के गुणों का वर्णन किया तो प्रचलित शबदों पर नव प्रयोग किया :

सति सूरउ सीलि बलवंतु सत भाइ
संगति सघन गरूअ मति निरवैरि लीणा ॥
जिसु धीरजु धुरि धवलु धुजा सेति बैकुंठ बीणा ॥
परसहि संत पिआरु जिह करतारह संजोगु ॥
सतिगुरू सेवि सुखु पाइओ अमरि गुरि कीतउ जोगु ॥ *(पन्ना १३९३)*

भाई कल सहार जी ने उपरोक्त सवैये में श्री गुरु अमरदास जी को 'सत के सूरमा' की संज्ञा दी है। सूरमा या योद्धा, सामान्यत: रणक्षेत्र में कौशल दिखाने वाले सैनिक को कहा जाता है। श्री गुरु अमरदास जी को 'सत का सूरमा' कह कर भाई कल सहार जी ने तत्कालीन समाज के उस मानसिक-वैचारिक उल्लास को प्रकट किया जो श्री गुरु अमरदास जी के व्यवहार और विचार में उपजा था। अपने विकारों को वश में करके परमात्मा के प्रेम को जीत लेने से अधिक वीरतापूर्ण कार्य कोई और नहीं हो सकता था। श्री गुरु अमरदास जी ने ऐसा करके दिखाया। समाज सदैव विजयी शूरवीर का सम्मान करता है। गुरु साहिब के इस पराक्रम का कोई सानी नहीं था, इसलिये उन्हें सूरमा के साथ ही भाई कल सहार जी ने शील और संयम में बलवान भी कहा। युद्ध में विजय प्राप्त करना सरल है किंतु सच को प्राप्त करना, शील और संयम को धारण करना कठिन ही नहीं अति कठिन है। वास्तविक सूरमा और शक्तिवान वही है जो सच, शील और संयम को धारण करता है। भाई कल सहार जी ने आगे कहा कि उनकी संगत परम श्रेष्ठ थी और वे सम्पूर्णत: परिपक्व बुद्धि के स्वामी थे। इसी कारण वे किसी भी वैर-विरोध से परे थे। सच ही है, जिसके हृदय में परमात्मा का प्रेम कूट-कूट कर भरा हो वह विद्वेष पाल ही नहीं सकता। उनका धीरज उस धवल-ध्वज की तरह था जो दूर से ही अपने अस्तित्व की उद्घोषणा करता है। श्री गुरु अमरदास जी का इस तरह से विकसित हुआ व्यक्तित्व एक तरह से स्वर्ग जाने का सेतु बन गया था अर्थात् उनके निकट आने वाला स्वयं ही परमात्मा को प्राप्त कर लेता था। श्री गुरु अमरदास जी ने सिद्ध किया कि सबसे बड़ा पराक्रमी वो है जिसने सत को धारण किया है। सबसे बड़ा बलवान वो है जिसमें शील है। ऐसे

बलशाली की ही बुद्धि सर्वश्रेष्ठ होती है और उसके सद्गुणों की कीर्ति दूर-दूर तक फैलती है। ऐसे महान पुरुष की कृपा से मोक्ष प्राप्त होता है। इस विस्मयकारक अवधारणा ने धर्म का ऐसा निर्मल स्वरूप सामने रखा जिससे लोग पूरी तरह अनभिज्ञ थे। श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि बल और पराक्रम पाने का एक ही मार्ग है कि मन हरि के अतिरिक्त और किसी को न देखे :

मन मेरे हरि कै नामि वडाई ॥
हरि बिनु अवरु न जाणा कोई
हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥
सबदि भउ भंजनु जमकाल निखंजनु
हरि सेती लिव लाई ॥ *(पन्ना १२३३)*

उपरोक्त वचन में श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि सारी श्रेष्ठता परमात्मा प्रदान करता है और श्रेष्ठता उसे देता है जो परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य शक्ति अथवा युक्ति में विश्वास नहीं रखता। परमात्मा का नाम सभी आपदाएं दूर करने वाला और मनुष्य को निर्भय बनाने वाला है। गुरु साहिब इस ओर भी इंगित करते हैं कि मनुष्य का स्वयं का कोई गुण नहीं है। मनुष्य में यदि कोई गुण है तो वो परमात्मा की कृपा से परमात्मा द्वारा दिया हुआ है। इसलिये अपने ऊपर कोई गुमान किया ही नहीं जा सकता। उनकी यह अतिशय विनम्रता ही उनकी बौद्धिक परिपक्वता को पराकाष्ठा तक ले जाती है। उन्होंने कहा कि मनुष्य मूलत: नीच और डूबते हुए पत्थर की तरह है, उसके अंदर विष भरा हुआ है और उसके जीवन का कोई फलदायी परिणाम नहीं है :

हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई ॥
पाथरु डुबदा काढि लीआ साची वडिआई ॥
बिखु से अंम्रित भए गुरमति बुधि पाई ॥
अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई ॥
(पन्ना ५६५)

परमेश्वर उत्तमता प्रदान करने वाला, भटकना से बचाने वाला, मन में सद्विचार भरने वाला, सतकर्म करने की प्रेरणा देने वाला और अंतर को सद्गुणों से सुशोभित कर देने वाला है। श्री गुरु अमरदास जी के जिस पराक्रम और बल का वर्णन भट्ट कल सहार जी ने किया है उसकी सशक्त अभिव्यक्ति उस समय हुई जब श्री गुरु अंगद देव जी के पुत्र बाबा दातू जी ने श्री गुरु अमरदास जी का भारी संगत के बीच अपमान करते हुए लात मार कर उन्हें आसन से नीचे गिरा दिया। दातू स्वयं गुरगद्दी पर बैठना चाहता था और अपने पिता द्वारा श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी सौंप दिये जाने से बेहद आक्रोशित था। सायं काल का समय था, दीवान लगा हुआ था और संगत शबद-गायन में रमी हुई थी। इस घटना से सभी स्तब्ध रह गये। गुरु साहिब को नीचे गिरा कर दातू स्वयं आसन पर बैठ गया। शील के बल से सम्पन्न और धैर्य-संयम के ध्वजवाहक श्री गुरु अमरदास जी तनिक भी विचलित नहीं हुए और उठकर दातू के पैर दबाने लगे। गुरु साहिब ने कहा कि "मेरे वृद्ध शरीर की हड्डियां कठोर हो गयी हैं जिससे आपके कोमल पैरों को चोट लग गयी होगी। आप मेरे गुरदेव के सुपुत्र हैं, हुक्म करें कि आप क्या चाहते हैं?" दातू ने समझा कि गुरु साहिब डर गये हैं। उन्होंने कठोरता से कहा कि इस गुरगद्दी का असली मालिक मैं हूं इसलिये आप यह स्थान छोड़ कर चले जाओ। श्री गुरु अमरदास जी सहर्ष दातू की बात को शिरोधार्य करते हुए उस स्थान को छोड़कर अपने जन्म-स्थान बासरके चले आये। ऐसा धैर्य और संयम अतुलनीय है इसी लिये

उपमा दी जाती है कि श्री गुरु अमरदास जी जैसे बस श्री गुरु अमरदास जी ही हो सकते हैं दूसरा कोई अन्य नहीं। अपने महान गुणों के कारण श्री गुरु अमरदास जी की महिमा चारों ओर इस तरह फैली कि उनके सारे विरोधी और ईर्ष्यालु दरकिनार हो गये तथा बड़ी संख्या में लोग उनके पास आने और सिक्ख बनने लगे। गुरु साहिब ने अपनी दूरदृष्टि से यह जान लिया कि जिस मिशन को गुरु नानक साहिब ने आरंभ किया था और श्री गुरु अंगद देव जी ने प्रौढ़ता प्रदान की उसे अब संस्थागत रूप देने का समय आ गया है। उन्होंने एक बड़ा कार्य किया अमृतसर शहर की स्थापना करके। गुरु-शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिये उन्होंने विधिवत २२ केंद्रों की स्थापना की जिन्हें "२२ मंजियां" कहा गया। हर केंद्र की जिम्मेदारी एक प्रमुख सिक्ख को सौंपी गयी। इसके अतिरिक्त ५२ पीढ़ों की स्थापना करके उन्हें प्रचारक स्त्रियों को सौंपा गया जो एक तरह से उप-केंद्र थे, जिनके माध्यम से स्त्रियों की भूमिका रेखांकित की गयी। गुरु साहिब ने गुरु-शिक्षाओं को व्यवहारिक रूप प्रदान करने की ओर भी ध्यान दिया और छुआछूत मिटाने के लिये कई कदम उठाये जिनमें गैर-जातियों में विवाह आदि शामिल थे। गुरु साहिब ने अनिवार्य कर दिया कि जो भी उनके दर्शन के लिये जायेगा पहले बिना कसी भेदभाव के सबके साथ लंगर छकेगा। बादशाह अकबर को भी गुरु साहिब से मिलने से पूर्व इस नियम का पालन करना पड़ा था। इन सारे महान कार्यों में ही श्री गुरु अमरदास जी के विराट, पितृवत, संरक्षक व्यक्तित्व की झलक दिखी होगी तभी भाई जालप जी को उनमें पिता ही नहीं जगत-पिता के दर्शन हुए जो अपनी संतान के वर्तमान ही नहीं भविष्य के प्रति भी चिंतित है और अपनी संतान के हितों को दृढ़ता से सुरक्षित करना चाहता है। एक ऐसा पिता जो अपनी संतान को सही शिक्षा ही नहीं दे रहा बल्कि स्वयं भी उसे व्यवहार में लाकर एक सजीव आदर्श सामने रखना चाहता है। ऐसा पिता पूजनीय हो जाता है और संतान ऐसे पिता को पाकर धन्य हो जाती है। इस क्रम में भाई जालप जी के निम्न सवैये वस्तुस्थिति को प्रकट करने वाले हैं:

चरण त पर सकयथ चरण गुर अमर पवलि रय ॥
हथ त पर सकयथ हथ लगहि गुर अमर पय ॥
जीह त पर सकयथ जीह गुर अमरु भणिजै ॥
नैण त पर सकयथ नयणि गुरु अमरु पिखिजै ॥
स्रवण त पर सकयथ स्रवणि गुरु अमरु सुणिजै ॥
सकयथु सु हीउ जितु हीअ बसै गुर अमरदासु निज जगत पित ॥
सकयथु सु सिरु जालपु भणै जु सिरु निवै गुर अमर नित ॥ (पन्ना १३९४)

श्री गुरु अमरदास जी जगत-पिता हैं और उनका निवास सबसे पवित्र स्थान हृदय में है। भाई जलाप जी कहते हैं कि चरणों की उपादेयता इसी में है कि वे श्री गुरु अमरदास जी की राह पर चलें। हाथ वही सफल हैं जो गुरु साहिब के चरण स्पर्श कर रहे हैं। जिह्वा वही सिद्ध है जो गुरु साहिब की महिमा का उच्चारण कर रही है। नेत्र वही परिपूर्ण हैं जो श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन करते हैं। कानों का रस इसी में है कि वे गुरु साहिब की उपमा सुनें। सिर का निस्तारण श्री गुरु अरमदास जी के चरणों में झुक जाने में ही है। योग्य संतान का कर्त्तव्य है कि वह अपने पिता के प्रति समर्पित हो। श्री गुरु अमरदास जी तो जगत-पिता हैं जिनकी कोई उपमा दी ही नहीं जा सकती। उनके प्रति तो

पूर्ण समर्पण में ही मनुष्य की गति है। इतना ही नहीं परमात्मा तो स्वयं श्री गुरु अमरदास जी के रूप में अवतरित हुआ है:

आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥
निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥
जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥
जिह सिखर संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥
(पन्ना १३९५)

उपरोक्त सवैया भट्ट कीरत जी का है जिसमें वे कहते हैं कि निरंकार ने श्री गुरु अमरदास जी के रूप में आकार लेकर इस धरती को प्रकाशित किया है। जिस किसी ने भी इस सर्वोच्च सच को जानकर श्री गुरु अमरदास जी की शिक्षा को अंगीकार कर लिया है वह सहज ही परमात्मा से जुड़ जाता है। जगत-पिता के समक्ष सम्पूर्ण समर्पण की जो बात भाई जालप जी ने कही है वह वास्तव में शिखर सच अर्थात् गुरु साहिब की शिक्षाओं को मन, वचन और कर्म में उतार लेना ही है। श्री गुरु अमरदास जी ने बार-बार इस पर बल दिया है :

जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निज घरि वासु ॥
गुरमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ॥
सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ॥
हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥
(पन्ना २७)

उपरोक्त वचन में श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि जन्म उसी का सफल है जो सद्विचार को वैचारिक धरातल पर स्वीकार करने के साथ ही उस पर अमल भी कर रहा है। सच पर आस्था को टिकाने से ही सद्बुद्धि प्राप्त होती है और मन निर्मल हो जाता है, सारे विकार मिट जाते हैं। ऐसे निर्मल मन वाले मनुष्यों को ही परमात्मा जीवन की सही राह दिखाता है। गुरु साहिब ने कहा कि मनुष्य अपने अवगुणों को पहचान कर उनका त्याग करे तभी वह परमात्मा की राह पर चल सकता है :

सो जनु निरमलु जिनि आपु पछाता ॥
आपे आइ मिलिआ सुखदाता ॥ (पन्ना १०४६)

निर्मलता तभी आ सकती है जब विचार भी शुद्ध हों और आचरण भी। इनमें यदि परस्पर द्वंद है तो मन निर्मल नहीं हो सकता। मन निर्मल हो और सदैव निर्मल बना रहे, सद्-आचरण हो और प्रत्येक स्थिति में सद्आचरण बना रहे, विकार त्याग दिये तो सदैव के लिये, परमात्मा में मन रम गया है तो सांस-सांस रमा रहे। जीवन को हिस्सों और खंडों में नहीं जिया जा सकता। मन में दो भाव नहीं चल सकते। दूसरा भाव आते ही पूर्व के समस्त सत्कर्मों का नाश कर देता है। दूसरा भाव उत्पन्न ही नहीं होता। यह एक सूरमा और बलशाली के वश की ही बात है, जो श्री गुरु अमरदास जी में थी। उन्होंने एक बार गुरु की राह पकड़ी तो उस पर बढ़ते ही चले गये। गुरु साहिब ने सचेत किया कि मनुष्य पल भर के लिये भी सच के मार्ग से विचलित न हो :

हरि जीउ तुधु नो सदा सालाही पिआरे
जिचरु घट अंतरि है सासा ॥
इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी
जाणउ बरस पचासा ॥
हम मूड़ मुगध सदा से भाई
गुर कै सबदि प्रगासा ॥ (पन्ना ६०१)

श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि मनुष्य मूलतः मूर्ख और मोह-माया में लिप्त है। गुरु का शबद उसे सच की ओर ले जाता है। ऐसे में मनुष्य को सावधानी रखनी चाहिये कि वह पल भर के लिये भी परमात्मा को, उसकी कृपा को न भूले। यह एक पल भी पच्चास वर्षों के बराबर और घातक हो सकता है जिस पर

परमात्मा को वह भुला दे। जब तक सांस है तब तक दृढ़ता से सच के मार्ग पर चलते रहना चाहिये। श्री गुरु अमरदास जी ने ऐसा स्वयं भी सिद्ध किया जिसका वर्णन बड़े ही सुरुचिपूर्ण ढंग से भट्ट सल जी ने अपने सवैये में किया है:

पहिरि समाधि सनाहु गिआनि है आसणि चड़िअउ ॥
ध्रंम धरखु कर गहिओ भगत सीलह सदि लड़िअउ ॥
भै निरभउ हरि अटलु मनि सबदि गुर नेजा गडिओ ॥
काम क्रोध लोभ मोह अपतु पंच दूत बिखंडिओ ॥
भलउ भूहालु तेजो तना त्रिपति नाथु नानक बरि ॥
गुर अमरदास सचु सल्य भणि तै दलु जितउ इव जुधु करि ॥ (पन्ना १३९६)

भाई सल जी अपने उपरोक्त सवैये में कहते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी ने अपने जीवन के युद्ध को बड़ी वीरता, परिश्रम और कौशल से जीता। उन्होंने परमात्मा का ध्यान रूपी जिरह बख्तर पहन कर ज्ञान रूपी घोड़े पर आसन जमाया हुआ है। उनके हाथों में धर्म रूपी धनुष है और पास में साधक के शील रूपी तीर हैं। उनके मन में, क्योंकि केवल परमात्मा का भय है, इसलिये उनका मन घोर सबल हो गया है। मन को अभय गुरु का शबद बना रहा है, जैसे मन में बसे गुरु-शबद ने खड़ग का रूप ले लिया हो। इस मन में गड़े हुए खड़ग ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे वैरियों का नाश कर दिया है। इस तरह युद्ध करके श्री गुरु अमरदास जी ने विजय प्राप्त कर ली है और उनकी शोभा न्यारी हो गयी है। जीवन को इस तरह जीतने वाला ही ऐसा लिख सकता है जैसे श्री गुरु अमरदास जी ने निम्न वचन में कहा :

मै कामणि मेरा कंतु करतारु ॥
जेहा कराए तेहा करी सीगारु ॥
जां तिसु भावै तां करे भोगु ॥
तनु मनु साचे साहिब जोगु ॥ (पन्ना ११२८)

परमात्मा से जुड़कर ही तन और मन पवित्र होता है तथा जीवन की सच्ची राह दिखती है। ऐसा तब होता है जब मनुष्य के मन में एक प्रेयसी जैसा समर्पण का भाव आता है, जिससे वह वैसा ही साज-शृंगार करती है जो उसके प्रियतम को भाता हो एवं वह उसी में आनंदित होती है जैसा आनंद प्रियतम उसे देता है। यही है "स्व" का लुप्त हो जाना। गुरु साहिब ने कहा कि प्रियतम की आज्ञा न मानने वाली तो कुलक्षणी और कपटी है :

पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥
मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥
(पन्ना ६३९)

तन-मन जब परमात्मा से जुड़कर पवित्र हो जाता है तो सारा आचार-व्यवहार ही विलक्षण हो जाता है। श्री गुरु अमरदास जी ने अपने अनुभव और प्रतीति से इसका विलक्षण चित्र खींचा जो भट्ट सल जी द्वारा की गयी उनकी महिमा से मेल खाता है :

सरमै दीआ मुंद्रा कंनी पाइ जोगी खिंथा करि तू दइआ ॥
आवणु जाणु बिभूति लाइ जोगी ता तीनि भवण जिणि लइआ ॥
ऐसी किंगुरी वजाइ जोगी ॥
जितु किंगुरी अनहदु वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ ॥१॥रहाउ॥
सतु संतोखु पतु करि झोली जोगी अंम्रित नामु भुगति पाई ॥
धिआन का करि डंडा जोगी सिंङी सुरति वजाई ॥२॥
मनु द्रिड़ करि आसणि बैसु जोगी ता तेरी

कलपणा जाई ॥
काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई ॥३॥ (पन्ना ९०८)

श्री गुरु अमरदास जी ने नगर-नगर भटकने वाले योगियों को उनका वास्तविक कर्त्तव्य बताया। उन्होंने कहा कि योगी नगर में मांगने के बजाय अपने अंतर में परमात्मा को वास देकर उससे सच्चा नाम-धन मांगें। मन को दृढ़ करें तो कामनाएं दूर होंगी, घर को त्यागने से नहीं। वाद्य-यंत्र बजाने के स्थान पर ध्यान धारण करके अपनी एकाग्रता को बढ़ायें। अपनी झोली को सत् और संतोष से भरें। जीवन को कर्मशीलता से जीना सीखें। अपनी दृष्टि को दयालु बनायें। मोक्ष सद्गुणों से प्राप्त होता है बाहरी वेश धारण करने से नहीं। श्री गुरु अमरदास जी उपरोक्त वचन इसलिये सक्षम ढंग से कह सके क्योंकि वे स्वयं उस अवस्था को पहले ही श्री गुरु अंगद देव जी के चरणों में जाकर प्राप्त कर चुके थे और परमात्मा की ज्योति उनमें प्रकाशमान हो रही थी। उनकी इस अवस्था का वर्णन भट्ट भिखा जी ने इस प्रकार किया :

गुरु गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥
सचि सचु जाणीऐ इक चितहि लिव लावै ॥
काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥
निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥
(पन्ना १३९५)

भट्ट भिखा जी ने कहा कि वे तो परमात्मा की नगरी के निवासी हैं इसलिये परमात्मा की बात उन्हें पता है। वे परमात्मा से एक रूप हो गये हैं और उनका मन स्थिर होकर टिक गया है। यह परमात्मा की कृपा और मन के टिकने की एक आश्चर्यजनक घटना थी जिसने जीवन के ६१ वर्ष तक भटकाव में जीने वाले को 'सत् का सूरमा' और शील-संयम का बलवान, समर्थ, महान पुरुष बना दिया और गुरु का इतना प्रिय बना दिया कि गुरु ने उसमें अपना उत्तराधिकारी खोज लिया। जो स्वयं कभी सेवक था अब उसकी सेवा मात्र से दुख-दारिद्र दूर होने लगा:

नानक कुलि निंमलु अवतर्यिउ गुण करतारै उचरै ॥
गुरु अमरदासु जिन्ह सेविअउ तिन्ह दुखु दरिद्रु परहरि परै ॥ (पन्ना १३९५)

श्री गुरु अमरदास जी को सम्मान श्री गुरु अंगद देव जी ने दिया। उस सम्मान को उन्होंने आगे दुगना करके बढ़ाया। उन्होंने न केवल अपने सेवक भाई जेठा जी को गुरगद्दी पर आसीन करके श्री गुरु रामदास जी के रूप में महिमा प्रदान की वरन् अपनी पुत्री का विवाह भी उनसे कर दिया। विवाह के समय भाई जेठा जी उबले चने (घुंघनियां) बेचा करते थे और गुरु-घर की सेवा करते थे। उन्होंने गुरु नानक साहिब की परंपरा को सक्षमतापूर्वक समृद्ध किया:

नानक कुलि निंमलु अवतर्यिउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥
गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥ (पन्ना १३९५)

श्री गुरु अमरदास जी की कदाचित इसी परम महानता से अभिभूत होकर भट्ट कीरत जी ने कहा कि श्री गुरु नानक देव जी के निर्मल उत्तराधिकारी और श्री गुरु अंगद देव जी की कृपा-प्राप्त श्री गुरु अमरदास जी जग के ऐसे तारनहार हैं जिनकी शरण हर जन्म में प्राप्त हो तो जन्म धन्य हो जाये। यह कामना सभी के मन में हो कि गुरु साहिब के वचनों को अंगीकार करके ऐसी किंगरी बजाई जाए जिससे अनहद प्रस्फुटित होकर सारी धरती को परमात्मा के प्रेम में सराबोर कर दे।

कुछ अन्य प्राचीन सिक्ख ऐतिहासिक स्रोतों में श्री गुरु अमरदास जी के स्वरूप पर एक नजर

*-बीबी मनजीत कौर**

जिस समय श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश इस संसार में हुआ उस समय हिंदोस्तान के लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। हरेक ओर छल, धोखा, चालाकी, मक्कारी एवं परस्पर फूट का जोर था। लोग धार्मिक कुरीतियों, रस्म-ओ-रिवाजों और वहमों-भ्रमों का शिकार हो चुके थे। जागीरदार, अमीर एवं राजा लोग अपने निज-सुखों तथा ऐशप्रस्ती में ग्रस्त होकर निर्धन जनता का रक्त चूस रहे थे। गुरु नानक पातशाह ने उस समय की परिस्थितियां गुरबाणी अथवा मलार की वार में वर्णन की हैं :

राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना १२८८)

श्री गुरु नानक देव जी ने इन अमीरों एवं राजाओं के साथ भेंट-वार्ताएं करके सत्य से अवगत करा कर इनको सच्चे मार्ग पर चलाया। आपने अपने मिशन के प्रचार के लिए गुरु-परंपरा को चलाया। इसी अधीन आपने भाई लहिणा जी को गुरगद्दी सौंपी तथा उनको श्री गुरु अंगद देव जी के नाम से विभूषित करके गुरगद्दी पर विराजमान किया। श्री गुरु अंगद देव जी ने भी गुरमति विचारधारा का प्रचार जारी रखते हुए अंत में गुरगद्दी बाबा अमरदास जी को सौंप दी। इस प्रकार आप जी तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी कहलाये।

श्री गुरु अमरदास जी के जीवन, उनकी रची बाणी तथा उनके द्वारा किये कार्यों पर समय-समय पर कई रचनायें लिखी गईं। यदि इन रचनाओं का वर्ग-विभाजन करें तो पहले क्रम में श्री गुरु अमरदास जी की बाणी, श्री गुरु रामदास जी की बाणी, बाबा सुंदर जी की 'रामकली सदु', भाई सत्ता जी-भाई राय बलवंड जी की रची रामकली की वार एवं भट्ट साहिबान के सवैये आते हैं। ये श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं।

भट्ट साहिबान ने श्री गुरु अमरदास जी की स्तुति में सवैयों की रचना की। इन भट्ट साहिबान में--भट्ट भिक्खा जी, भट्ट जालप जी, भट्ट कीरत जी, भट्ट नल जी, भट्ट गयंद जी, भट्ट सल जी, भट्ट भल जी तथा भट्ट कल सहार जी हैं।

श्री गुरु रामदास जी ने अपनी बाणी में श्री गुरु अमरदास जी के जीवन के साथ संबंधित ऐतिहासिक तथ्य प्रकट किये हैं :

कोई जाइ मिलै हुणि ओना नो तिसु मारे जमु जंदारे ॥
गुरि बाबै फिटके से फिटे गुरि अंगदि कीते कूड़िआरे ॥
गुरि तीजी पीड़ी वीचारिआ किआ हथि एना वेचारे ॥
गुरु चउथी पीड़ी टिकिआ तिनि निंदक दुसट सभि तारे ॥ (पन्ना ३०७)

श्री गुरु अमरदास जी के समय तपे द्वारा किया विरोध भी श्री गुरु रामदास जी की बाणी में अंकित है :

तपा न होवै अंद्रहु लोभी नित माइआ नो फिरै

*प्रोफेसर, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, रणजीतपुरा, पोस्ट खालसा कालेज, श्री अमृतसर। मो : ९४६४९-८६४४७

जजमालिआ ॥
अगो दे सदिआ सतै दी भिखिआ लए नाही पिछो दे पछुताइ कै आणि तपै पुतु विचि बहालिआ ॥ पंच लोग सभि हसण लगे तपा लोभि लहरि है गालिआ ॥ (पन्ना ३१५-१६)

दूसरे क्रम में वारें भाई गुरदास जी तथा मिहरबान के पुत्र हरि जी द्वारा रचित "गोसटि गुरू अमरदास जी" हैं। तीसरे क्रम में १८वीं सदी में लिखी गई कृतियां हैं जिनमें "बंसावलीनामा" कृत भाई केसर सिंघ (छिब्बर), श्री सरूप दास भल्ला का "महिमा प्रकाश" तथा संत सेवादास की "परचीआं पातशाहीआं दसां कीआं" हैं।

चौथे क्रम में १९वीं सदी में लिखी गई रचनायें हैं जिनमें "महिमा प्रकाश"--वारतक (गद्य) कृत बाबा क्रिपाल दास, "महिमा प्रकाश गुरू अमरदास" कर्ता बिशन सिंघ (भल्ला), "गुर बिलास पातशाही छेवीं" रचित कवि सोहन हैं। इसी समय ज्ञानी दित्त सिंघ की लिखी "जनम साखी गुरू अमरदास जी" है जो कि गुरु साहिब के जीवन संबंधी विस्तृत रूप में जानकारी उपलब्ध करती है।

इन कृतियों के अतिरिक्त कवि भाई संतोख सिंघ द्वारा रचित "गुर प्रताप सूरज ग्रंथ", संत करम सिंघ की "स्री गुरू बंस चंद्रोदय", ज्ञानी प्रताप सिंघ की "गुर प्रकाश बंसावली", मैकालिफ की "The Sikh Religion (1909 ई)", बाबा सुमेर सिंघ की "गुर कवितावली", ज्ञानी गिआन सिंघ की "श्री गुरू पंथ प्रकाश" एवं "तवारीख गुरू खालसा" में भी श्री गुरु अमरदास जी के जीवन के संबंध में जानकारी मिलती है।

इस विचाराधीन आलेख में सभी स्रोतों को बयान करने की जगह केवल हरि जी रचित "गोसटि गुरू अमरदास जी", "परचीआं पातशाहीआं दसां कीआं"--सेवादास, "महिमा प्रकाश"--सेवादास, महिमा प्रकाश श्री गुरू अमरदास जी" स. बिशन सिंघ भल्ला, "गुर बिलास पा: छेवीं" और ज्ञानी दित्त सिंघ की कृति "साखी गुरू अमरदास जी" कृतियों में से कुछ एक अंश दिये जा रहे हैं।

"गोसटि गुरू अमरदास जी" का लेखक सोढी हरि जी है। "हरि जी" प्रिथीचंद का पौत्र तथा मिहरबान का पुत्र था। इन्होंने अपने पिता की भांति तथाकथित 'बाणी' और 'गोसटों' की रचना की। अपनी रचना में "महला ८, नानक, जन नानक, नानक दास, दास नानक" की छाप प्रयोग की गई। इनकी मुख्य कृतियां "परमारथ सुखमनी सहंसरनामा", "पोथी हरि जी", "गोसटि गुरू अमरदास जी" और "गोसटि मिहरबान जी" हैं।

"गोसटि गुरू अमरदास जी" में संगत गुरु जी के दरबार में आती है और गुरु जी से प्रश्न पूछती है। गुरु जी उत्तर में शबद उच्चारण करते हैं एवं उनका परमार्थ बताते हैं। इन गोसटों से ज्ञात होता है कि गुरु साहिब के पास गोष्ठि के लिए योगी, मुसलमान तथा अन्य धर्मों के पुरुष भी आते थे और वे गुरु साहिब को अपने रिवाज के अनुसार जैसे 'राम राम', 'राम क्रिशन' शब्दों के साथ संबोधित करते थे, जैसे कि:

"एक दिन गुरू अमरदासु नगरि वडाली बैठा था अरु एक गोबिंद लोक आइ गए। तिनहु आइ कहिआ जि राम राम गुरू अमरदास जी राम राम। तब गुरू अमरदास जी कहिआ जि सति राजा राम आईऐ जी।"

ये धर्मी पुरुष गुरु अमरदास जी से अपने भ्रम, अपनी आशंकाएं दूर करने के लिए प्रश्न पूछते थे और श्री गुरु अमरदास जी गुरबाणी के रूप में इन प्रश्नों का उत्तर देते थे। गोसटि है:

"तब घड़ी एक ससताइ करि उनहु गोबिंद लोकहु कहिआ जि गुरू अमरदास जी एक बेनती है जी, जे आगिआ होइ ता कहहि। तब गुरू अमरदास कहिआ जि भला होइ कहीऐ जी जो

किछु तुमरे जी है सु कहीऐ जी। तब उनहु गोबिंद लोकहु कहिआ जि गुरु जी एही बेनती है जी जि पणमेसरु तउ दाता सभस किसे का है पणु जी पणमेसर ते उरे भी कोई दाता है। गुरू जी जिउ है तिउ बताइऐ जी। तब गुरु अमरदास जी बाणी बोली।"

गुरमुखि कोई विरला बूझै जिस नो नदरि करेइ ॥
गुर बिनु दाता कोई नाही बखसे नदरि करेइ ॥
(पन्ना १२५८)

आगे इस शबद का परमार्थ बताया गया है:

"तब गुरू अमरदास कहिआ जि सुनिहो भाई राम जना जी गुरू बिना होर दाता पणमेसर ते कोई नाही। पणमेसर ते उरे गुरु जी दाता है जी। जी गुरू बिना होरु दाता कोई नाही। जिस नूं दइआ करि करि बखसे तिउ कउ गुरू नजरि करि करि नाम ही द्रिड़ावै।"

इसी प्रकार 'अनंदु' बाणी की रचना के बारे में भी गोसटि है। बाबा मोहरी जी के घर बेटे का जन्म हुआ। गुरु साहिब ने 'रबाब' मंगा कर रामकली राग में 'अनंदु' गाया। यह बाणी भी उसी प्रकार प्रश्न-उत्तर एवं परमार्थों के रूप में संपूर्ण रूप में अंकित है। इससे आगे 'रामकली की वार' की भी गोसटि लिखी हुई है। यह रचना परमात्मा के हुक्म से प्रभु-स्तुति में उच्चारण की गई है:

सचै तखतु रचाइआ बैसण कउ जांई ॥
सभु किछु आपे आपि है गुर सबदि सुणाई ॥
आपे कुदरति साजीअनु करि महल सराई ॥
चंदु सूरजु दुइ चानणे पूरी बणत बणाई ॥
आपे वेखै सुणे आपि गुर सबदि धिआई ॥
वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई ॥
(पन्ना ९४७)

इस वार के परमार्थ भी उसी क्रम में लिखे गए हैं।

सिक्ख इतिहास में तीन "महिमा प्रकाश" ग्रंथों के बारे में जानकारी मिलती है। एक श्री सरूप दास भल्ला, दूसरा "बाबा क्रिपाल दास" एवं तीसरा "भाई बिशन सिंघ भल्ला" एवं "भाई साहिब सिंघ पहौड़ी वाला" की रचना है। इन तीनों ग्रंथों में गुरु साहिबान का जीवन अंकित किया गया है। भाई बिशन सिंघ भल्ला की रचना "महिमा प्रकाश" के भीतर की साखियां श्री सरूप दास भल्ला की रचना "महिमा प्रकाश" के साथ संबंधित हैं। केवल १३ साखियां नयी अंकित की गई हैं, जैसे कि बीबी भानी जी का भाई जेठा जी के साथ विवाह, मंजी संस्था की स्थापना, २२ मंजीदारों के नामों की सूची, तईए ताप की साखी, बादशाह अकबर की चित्तौड़ की विजय, बादशाह अकबर का गोइंदवाल दरबार में आने तथा गुरु-घर के नाम जागीर लगाने की साखी इस ग्रंथ में अंकित है :

अकबर साहु करी अरदासु।
औरु लेहु पूरन करहु आस।
पंज सै घुमाउ आइआ लिख दीआ।
गोबिंदवाल रयत कर दीआ।
बारां हजार की जगीर लिख दीनी।
जेठे जी की भेट सो कीनी।
चौदां गावु ताहि मो बसे।
गुरू रामदास कौ दै गुर हसै।
अकबर साहु बिदा तब भए।
सतिगुर प्रेम मन मो थिर थए।

श्री गुरु अरजन देव जी को बालक रूप में गुरिआई देने की साखी भी इस रचना में शामिल है कि एक दिन खेलते हुए बाल (गुरु) अरजन देव जी का हाथ श्री गुरु अमरदास जी को लग गया। गुरु साहिब समाधि में थे। आंखें खुल गईं। बालक को उठा कर गोदी में लिया तथा प्रसन्न होकर अपनी पुत्री बीबी भानी जी को कहने लगे :

हसि कै गुर इमु बचनु कहिओ हे पुत्री परमु

सुजान।
इहु दोहता बाणी बोहथा नहि महिमा सको बखान।
गुरूअनि को गुर अरजन जानो सरब गुणन की निध की खानो।

श्री गुरु रामदास जी को अपनी आयु के कुछ वर्ष बखशने की साखी तथा श्री गुरु रामदास जी को गुरिआई की साखी भी इसमें अंकित है :

मै जगतु गुरू तुम को अब थापो।
सरब जगतु की पातशाही भाखो।

श्री गुरु अमरदास जी के हुक्म के साथ "गुरू का चक्क" की नींव रखी :

ले आगिआ गुरू अमर की रामदास पिआना कीन।
सुलतानविंड के निकट ही रामदास नींव धरि दीन।
गुरू चकु राखा तिसु नामु।
ता मै कीना गुर बिस्राम।

सहंस राम पर बख्शिश, माया (धन) की गुरु-दरबार में आने की साखी, साखी दरगो ब्राह्मण की, साखी फकीर सईयद बुखारी शाह की, साखी बाई मंजीआं बखशने की, साखी पिंगले का अमृत-सरोवर से स्नान करके निरोग होना, साखी तरनतारन प्रकट करने की, भाई सत्ते-भाई बलवंड जी की कीर्तन सेवा की साखी आदि साखियां दी गईं हैं तथा अंत में गुरबाणी का महत्व दर्शाया गया है तथा ऐतिहासिक रचना को पढ़ने का महातम दिया गया है :

गुर जोत समावनु की कथा जो पड़हि सिख मनि लाइ।
गुण निध सागर खोजते मुकतु रतनु मो पाइ।

"परचीआं पातशाहीआं दसां कीआं" का कर्त्ता सेवादास उदासी है। इस रचना में ५० साखियां हैं जिनमें से आठ पहले गुरु साहिब, चार नौंवे गुरु साहिब और ३८ साखियां दसवें गुरु साहिब के साथ संबंधित हैं। इस रचना में मात्र एक ही साखी श्री गुरु अमरदास जी के साथ संबंधित है। इस साखी के अनुसार तुर्कों के लड़के गोइंदवाल में लंगर के लिए जल भरने जाते सिक्खों को गुलेल से मार कर परेशान करते थे। सिक्खों ने गुरु जी के पास शिकायत की तो गुरु जी ने उनको पीतल की गागरें ले दीं परंतु तुर्कों को कुछ न कहा। पीतल की गागरें भी उन्होंने पक्की ईंटें मार कर टेढ़ी-मेढ़ी कर दीं। उसी समय गोइंदवाल में सन्यासियों की टोली आ उतरी। एक सन्यासी को भी उन्होंने गुलेल से मारा, जिससे उसकी आंख निकल गई। गुस्से में सन्यासियों ने शस्त्रों का प्रयोग किया और तुर्कों को मार कर खत्म कर दिया। जो तुर्क बच गए वे दिल्ली भाग गए। इस साखी से गुरु-संस्था के विरोध का ऐतिहासिक प्रसंग मिलता है। गुरु जी के व्यक्तित्व का ज्यादतियां को विशाल हृदय रख कर सहन् करने तथा रजा में राजी रहने वाला शांतमयी पक्ष सामने आता है।

"गुर बिलास पातशाही छेवीं" का कर्त्ता सोहन कवि है। यह रचना मुख्यत: श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जीवन को बयान करती है परंतु इसके साथ-साथ इसमें शेष नौ गुरु साहिबान के जीवन के कुछ अंश भी अंकित हैं। इसमें श्री गुरु अमरदास जी के जीवन से संबंधित पांच साखियां हैं। यह रचना भाई मनी सिंघ और उनके साथी सिक्खों--भाई धरम सिंघ एवं भाई भगत सिंघ के बीच वार्तालाप का संग्रह मानी गई है।

ज्ञानी दित्त सिंघ की कृति "जनम साखी गुरु अमरदेव जी" सिंघ सभा लहर के समय की है। इसकी शैली तथा लिखने का ढंग व रंग अपनी प्रकार का है। जब खालसा कॉलेज अमृतसर कायम हुआ तो वहां पढ़ रहे विद्यार्थियों के लिए सिक्ख धर्म के बारे में पुस्तकों की पढ़ाई अनिवार्य ठहरा दी गई। इन पुस्तकों में गुरु

साहिबान की जन्म-साखियां थीं। ज्ञानी दित्त सिंघ ने दस गुरु साहिबान के जीवन लिखे। श्री गुरु अमरदास जी की साखी संक्षिप्त रूप में है। इसमें दुर्गा भट्ट के मिलाप के समय रचे गए सवैये दिये हैं। यह पुरातन और विलक्षण चीज है। पुस्तक के मंगल में ही बताया है कि पुस्तक लिखने के प्रेरक भाई जवाहर सिंघ जी, खालसा कॉलेज के सेक्रेटरी थे। उन्होंने ही ये पुस्तकें लिखवाईं :

दोहिरा ॥

दिपत दिन मणी जिउ उदयो सिंघ पंथ दो भाग।
नाम धरिओ है खालसा कालज सुधा तड़ाग।
अंम्रितसर मैं खालसा कालज है प्रगटयो भान।
नशट अविदया तम भयो सुमत प्रकाश प्रदान। . . .
हरी जवाहर ताहिं के मंत्री परम प्रबीन।
तिह निदेस ते कथा यह भी प्राचीन नवीन।
स्री गुरू कलगीधर करी क्रिपा प्रेर मन पंथ।
भाग उदै खालसा के प्रगटे अस सुभ ग्रंथ।
साखी स्री गुरू अमर की बरनन है इस माहिं।
पढ़े सुने जो प्रेम सो सिक्खी प्रापत ताहिं।

इस जनम साखी को ३१ कांडों में विभाजित किया गया है। पहले कांड में बाबा अमरदास जी का 'गुरु' बनने से पहले का जीवन बहुत संक्षिप्त है। बीबी अमरो जी द्वारा गुरु अंगद साहिब के साथ मिलाप हुआ। गुरिआई का तिलक बाबा बुड्ढा जी ने लगाया। बारह वर्षों के सिरोपाउ जो समय-समय श्री गुरु अंगद देव जी बख्शते रहे थे, वे बाबा अमरदास जी ने कदापि नहीं उतारे थे। अब सिर से उतार कर उनको तौला तो भार छः बट्टियां (लगभग तीस किलो) हुआ। श्री गुरु अंगद देव जी के ज्योति-जोत समाने के बाद श्री गुरु अमरदास जी एकांत में चौबारे में बैठे रहते। तब भाई बल्लू जी ने विनती की कि हे सतिगुरु जीओ! संगत को दर्शन बख्शो क्योंकि गुरु जी ने आपका दामन पकड़ाया है। गुरु जी संगत में आये। भाई सत्ता जी तथा भाई बलवंड जी ने "रामकली की वार" की छठी पउड़ी गायन की :

सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥
पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ (पन्ना ९६८)

हिंदोस्तान की चारों दिशाओं से काबुल, कंधार, गजनी, बलख, बुखारा आदि देशों से संगत दर्शनों के लिए आती थी। लंगर, कथा, कीर्तन, आसा की वार, रहरासि, आरती का प्रवाह चल रहा था। श्री गुरु अमरदास जी की उदारता, संतोष, भक्ति, नम्रता की कीर्ति सभी ओर होने लगी। समाचार पाकर दुर्गा भट्ट गोइंदवाल आया। गुरु जी का दर्शन पाकर निहाल हुआ तथा गुरु-स्तुति में दुर्गा भट्ट ने सवैये कहे, जैसे कि :

तव सम सिंध न गंग सरोवर नह सुरधेन मणी समभान।
मम सम रंक अनाथन को जन जारत जिह त्रिशन अभिमान।
मम सम रंक न तुम सम साहिब मम सम दीन न तुम सम देव।
भाट अनाथ दान इह जाचत त्रिशना त्रिखा न जारै भेव।

इन सवैयों की गिनती पांच दी गई है। श्री गुरु अमरदास जी ने भुगत-मुक्त की आशीष दी तथा नाम जपने की युक्ति भी सिखाई। गोइंदवाल नगर के लिए लकड़ी लाने के लिए गुरु जी ने अपने भतीजे भाई सावन मल को हरीपुर भेजा तथा कहा कि वहां से चील और बिआर की गांठें बांध कर ब्यास नदी में फेंक कर यहां पहुंचाओ। आगे "राजा हरीपुर दा मरिआ पुत्तर जीऊण दी साखी" है। राजा अपनी कुल प्रजा सहित सिक्ख बना। भाई सावन मल ने अपने किये की गुरु जी से क्षमा मांगी:

सरन परे बेनती सुनो गरीब निवाज।

जो हम पूत कपूत है बहुर पिता को लाज।

हरीपुर के राजा की रानी का गुरु-वचनों के अनुसार झल्ली (नीम पगली) होने की साखी भी अंकित है। भाई सच्चन सच्च की तथा बाबा दातू की गुरु जी को लात मारने की साखी भी अंकित है। गुरु जी ने गोइंदवाल छोड़कर गांव बासरके जाकर एक किसान से कोठा (कमरा) लेकर, उसमें विराजमान होकर द्वार पर लिख दिया कि जो यह द्वार खोले वह हमारा सिक्ख नहीं, हम उसके गुरु नहीं।

दावै दाझन होत है निरदावै रहै निसंक।
जो जन निरदावै रहै सो गने इंद्र सो रंक।

संगत गुरु-दर्शन को तरसने लगी। संगत ने बाबा बुड्ढा जी से विनती की कि आप गुरु जी को ढूंढो। यह सारी साखी विस्तृत रूप में अंकित है। गुरु जी के बासरके निवास के समय बाबा दातू का गद्दी लगाने का जिक्र भी यहां किया गया है।

एक दिन सिक्खों ने पूछा कि "गुरु जी! जब हम पहले कोई काम करते थे तो पंडित आदि से पूछते थे, अब किससे पूछा करें?" गुरु जी ने वचन किया, "सिक्खों का बड़ा 'मुहूर्त' अरदास है। सब कामों के आरंभ के समय मन नीवां करके अरदास करने से सब काम पूर्ण होते हैं।"

डल्ला नामक नगर के निवासी भाई लालो जी को "परोपकारी भगत" की बख्शिश दी। अल्ला यार गुरु का सिक्ख बना। गुरु जी ने उसको "गुरु का लाल" का खिताब दिया।

भाई पारो जी, दक्षिण निवासी भाई गिरधारी जी, डल्ला निवासी प्रिथीमल तथा तुलसी की साखियां भी अंकित हैं। बीबी भानी जी भजन-बंदगी करने वाले थे। एक दिन सावन के महीने में कुछ सहेलियों ने झूला झूलने के लिए कहा तो बीबी भानी जी कहने लगे :

घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥
(पन्ना १२)

बीबी भानी जी के विवाह संबंधी विस्तृत रूप में जानकारी दी गई है। श्री गुरु अमरदास जी ने भाई जेठा जी के संत-स्वभाव तथा उनके गुणों से खुश होकर नाम की कीर्ति बख्शी तथा वचन किया कि तुम्हारे दरबार में आठों पहर अखंड नाम की ध्वनि होगी तथा नाम का प्रवाह चलेगा।

बादशाह अकबर का गुरु-दरबार में आना, बाउली का निर्माण, बाउली की महानता, भाई माणक चंद, तपे की साखी, गोइंदे खत्तरी की साखी भी इस रचना में लिखी हुई है। क्षेत्र के ब्राह्मण एकत्रित होकर गुरु जी के विरुद्ध शिकायत करते हैं तो गुरु साहिब भाई जेठा जी को शिकायत की पैरवाई करने के लिए लाहौर भेजते हैं। इस साखी से ब्राह्मणों की गुरु-घर से ईर्ष्या स्पष्ट रूप में उजागर होती है। अकबर के दरबारी बीरबल की गुरु-घर के साथ ईर्ष्या करने की साखी विस्तृत रूप में लिखी हुई है। बीरबल कशमीर में अपनी सेना सहित बर्फ के नीचे दबकर मर जाता है। संसार-कल्याण के लिए श्री गुरु अमरदास जी द्वारा की उदासियां (प्रचार-यात्राएं) भी बताई गई हैं।

आप जी ने अपना सचखंड गमन करने का समय समीप आता देख कर, हरेक परीक्षा में सफल रहे भाई जेठा जी के श्री गुरु रामदास जी के रूप में गुरगद्दी सौंप दी। इस प्रकार दया के सागर, क्षमा के रत्नागर, निमाणों के मान, सच की मूर्ति सतिगुरु अमरदास जी संवत् १६३१ भाद्रपद सुदी पूर्णमाशी (३० अगस्त, १५७४ ई) को गोइंदवाल में ज्योति-जोत समा गए।



श्री गुरु अमरदास जी की प्रमुख बाणियों पर एक नजर

-डॉ. परमवीर सिंघ

श्री गुरु अमरदास जी ने १७ रागों में बाणी उच्चारण की। गुरु जी की बाणी सिक्ख जीवन-जाच में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में कच्ची तथा सच्ची बाणी का स्पष्ट विभाजन किया मिलता है। सैद्धांतिक रूप से गुरु जी द्वारा उच्चरित बाणी गुरु नानक साहिब की विचारधारा को आगे ले जाने एवं दृढ़ कराने का कार्य करती है। श्री गुरु अमरदास जी द्वारा उच्चरित बाणियों में प्रमुखत: पटी, अलाहणीआं, अनंदु, वार सत, मारू सोलहे तथा अन्य चार वारों का जिक्र किया मिलता है। इन प्रमुख बाणियों के अलावा गुरु जी द्वारा उच्चरित श्लोक एवं शबद भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मौजूद हैं, मगर यहां केवल कुछ प्रमुख बाणियों के बारे में संक्षिप्त रूप में जानने की कोशिश करते हैं :

पटी : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस शीर्षक अधीन श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अमरदास जी की बाणी है। श्री गुरु अमरदास जी द्वारा उच्चरित 'पटी' बाणी में न तो पैंतीस अक्षर हैं और न ही आधुनिक अक्षर-क्रम देखने को मिलता है। इस बाणी में 'रहाउ' की दो पंक्तियों के अलावा दो-दो पंक्तियों के अठारह पद हैं जो मनुष्य को परमार्थ के साथ जुड़ने की प्रेरणा करते हैं। इस बाणी में धर्म-पुस्तकें पढ़ने वालों को भी उपदेश किया गया है कि केवल धर्म-पुस्तकें पढ़ने से, विचारने से, दूसरों को समझाने से न तो आत्मिक शांति प्राप्त होती है और न ही प्रभु-प्रीति उजागर हो सकती है, जब तक इनमें विद्यमान तत्व को व्यवहारिक जीवन का हिस्सा नहीं बनाया जाता :

पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ ॥ *(पन्ना ४३५)*

आखिर में गुरबाणी-सिद्धांत दृढ़ कराया गया है कि सतिगुरु के बिना परम-पद की प्राप्ति नहीं होती और जिन्होंने सतिगुरु को धारण कर लिया वे जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो गए।

अलाहणीआ : यह पंजाबी का एक काव्य-रूप है जिसका इस्तेमाल शोक या मातम के समय किया जाता है। गुरु साहिबान ने इस काव्य-रूप के माध्यम से वैराग्यमयी बाणी का उच्चारण किया है। सांसारिक मृत्यु से दूर व्यक्ति के मन को प्रभु-प्रीति में जोड़ने का यत्न किया गया है और इसे ही सच्ची मृत्यु कहा गया है। वडहंस राग में श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रचित इस बाणी के छ:-छ: पंक्तियों वाले चार पद दर्ज किए मिलते हैं। गुरु जी द्वारा रचित इस बाणी के माध्यम से सहज अवस्था द्वारा प्रभु-प्राप्ति का मार्ग धारण करने पर जोर दिया गया है :

आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥ *(पन्ना ५८४)*

अनंदु : रामकली राग में उच्चरित यह श्री गुरु अमरदास जी की एक महत्वपूर्ण बाणी है जिसकी चालीस पउड़ियां हैं। पहली पांच तथा आखिरी एक पउड़ी जोड़कर संक्षिप्त 'अनंदु साहिब' सारे

**सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९८७२०-७४३२२*

खुशी-गमी के अवसरों पर अरदास से पहले पढ़ा जाता है। यह बाणी अमृत-संचार तथा नित्तनेम की बाणियों में भी निरंतर पढ़ी जाती है। सिक्ख परंपरा के अनुसार इस बाणी का उच्चारण गुरु जी ने अपने पोते (बाबा मोहरी के पुत्र) के जन्म के समय किया था। इस बाणी में शरीर तथा मन की समूह क्रियाओं को परमात्मा के नाम-सिमरन पर केंद्रित करने की ताकीद की गई है। आखिर में प्रभु-प्राप्ति हो जाने पर समूह इच्छाओं की प्राप्ति तथा समूह दुखों से मुक्ति की बात कही गई है :

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥
(पन्ना ९२२)

वार सत : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शीर्षक "बिलावल महला ३ वार सत घरु १०" आया है जो कि सप्ताह के सात दिनों को आधार बनाकर पेश की बाणी की तरफ संकेत करता है। इस शीर्षक के अंतर्गत आई समूची बाणी दस-दस पदों के दो जोड़ों में आई है। दोनों का सम्बंध सप्ताह के सात दिनों से है। अंतर केवल इतना है कि पहले जोड़ में दर्ज बाणी के पद सप्ताह के नाम से आरंभ होते हैं। समूची बाणी में इस बात की तरफ संकेत किया गया है कि शुभ या अशुभ कार्य का सप्ताह के किसी दिन के साथ कोई विशेष सम्बंध नहीं और व्यक्ति का आवागमन कर्म के साथ जुड़ा हुआ है। सप्ताह, महीने, वर्ष में आने वाले दिन, थितियां, ऋतुएं आदि बदलती रहती हैं। ये व्यक्ति के कर्म तथा आध्यात्मिक जीवन को नहीं बदल सकतीं, केवल परमात्मा का नाम और गुरु के शबद की समझ ही मनुष्य-जीवन में परिवर्तन ला सकती है :

पंद्रह थिंती तै सत वार ॥
माहा रुती आवहि वार वार ॥
दिनसु रैणि तिवै संसारु ॥
आवा गउणु कीआ करतारि ॥
निहचलु साचु रहिआ कल धारि ॥
नानक गुरमुखि बूझै को सबदु वीचारि ॥
(पन्ना ८४२)

मारू सोलहे : सोलह पदों वाले शबद को 'सोलहा' कहा जाता है। यह आवश्यक नहीं कि इनकी गिनती सदा सोलह ही हो, कई बार कम-ज्यादा भी हो जाती है। इस शीर्षक के अंतर्गत श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी दर्ज है। श्री गुरु अमरदास जी ने सोलह-सोलह पदों तथा चौबीस शबदों की बाणी का उच्चारण किया है। उन्होंने परमात्मा को सृष्टि का कर्त्ता मानकर उसकी प्रशंसा करने पर जोर दिया है। प्रभु की प्रशंसा मन में से अहंकार को खत्म करने का कार्य करती है। सतिगुरु के नेतृत्व में चलते हुए प्रभु-मार्ग की समझ आती है। सतिगुरु का मिलाप प्रभु की कृपा द्वारा संभव है और यह तभी संभव है यदि मनुष्य प्रभु के हुक्म में चले। गुरु जी समझाते हैं कि प्रभु का हुक्म मानने से सुख प्राप्त होता है :

भाणा मंने सो सुखु पाए भाणे विचि सुखु पाइदा ॥ *(पन्ना १०६३)*

वार सूही : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यह बाणी *"वार सूही की सलोका नालि महला ३"* शीर्षक के अंतर्गत दर्ज है। शीर्षक से प्रतीत होता है कि इस बाणी का सम्बंध केवल श्री गुरु अमरदास जी से है, मगर ऐसा नहीं। इस वार में पांच-पांच पंक्तियों की बीस पउड़ियां दर्ज हैं जिनमें श्री गुरु नानक देव जी तथा गुरु अंगद साहिब की बाणी भी दर्ज है। शीर्षक से यह भी ज्ञात होता है कि इस वार में पउड़ियों के साथ श्लोक

भी दर्ज किए हुए हैं जिनमें अधिक गिनती गुरु नानक साहिब के श्लोकों की है।

इस बाणी में श्री गुरु अमरदास जी बताते हैं कि परमात्मा द्वारा सृजित धरती धर्म कमाने का स्थान अर्थात् धर्मशाला है। यहां व्यक्ति को सांसारिक पदार्थों में आबद्ध होने की बजाय परम-पद प्राप्त करने का यत्न करना चाहिए। चाहे कि गुरबाणी में सब रंग परमात्मा की सृजना माने गए हैं लेकिन श्री गुरु अमरदास जी सूहे रंग (गाढ़ा लाल रंग) को दुनियावी पदार्थों के प्रतीक-रूप में पेश करते हुए इस बात पर जोर देते हैं कि यह वेश अर्थात् दुनियावी पदार्थों का संग्रह अहंकार का प्रतीक है तथा इस वेश को उतार कर प्रभु-गुण रूपी रत्नों से मन का शृंगार व साधना करनी चाहिए तभी व्यक्ति लोक-परलोक में प्रवान चढ़ता है :

--*सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥*
पेईऐ साहुरै बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥ (पन्ना ७८६)

--*सतिगुरि मिलिऐ सूहा वेसु गइआ हउमै विचहु मारि ॥*
मन तनु रता लालु होआ रसना रती गुण सारि ॥ (पन्ना ७८७)

गूजरी की वार : २२ पउड़ियों वाली संयुक्त यह वार *"सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी"* पर गाने का आदेश है। एक ही भाईचारे से सम्बंधित सिकंदर तथा इब्राहिम (बिराहिम) नेकी व बदी के गुणों के प्रतीक हैं। इब्राहिम एक ब्राह्मण की नई ब्याही स्त्री को बुरी नजर से देखता है। ब्राह्मण डर कर सिकंदर की शरण में चला जाता है और सहायता के लिए निवेदन करता है। सिकंदर इब्राहिम पर हमला करके उसे पकड़ लेता है और पश्चाताप करने पर छोड़ देता है। सिकंदर नेकी का प्रतीक है तथा इब्राहिम बद-रुचियां छोड़कर नेकी की शरण में आकर बच जाता है। ढाढी इस वार को गाते हैं। इस वार की धुनी गुरबाणी में गुरमुख तथा मनमुख के द्वंद को पेश करती है कि यदि मनमुख गुरु-दर्शाए मार्ग के अनुसार गुरमुख बनने का प्रयत्न करता है तो बच सकता है नहीं तो सांसारिक भवसागर में गोते लगाता रहता है।

पांच-पांच पंक्तियों वाली २२ पउड़ियों में से हर पउड़ी के साथ दो-दो श्लोक हैं। इस वार में परमात्मा की एकता, गुरु, शबद, नाम-सिमरन, नम्रता, मुक्ति आदि का वर्णन करने के साथ-साथ माया, ममता, पाप तथा अहंकार का भी जिक्र मिलता है। श्री गुरु अमरदास जी बाणी को निरंकार (प्रभु) का स्वरूप बताते हुए कहते हैं कि इससे ऊपर और कुछ भी नहीं है:

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (पन्ना ५१५)

रामकली की वार : यह वार *"जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी"* पर गाने का आदेश है। इन योद्धाओं का जीवन आजादी तथा संयम वाला था। पूरबाण राजपूत के दो बहादुर पुत्र--जोधा तथा वीरा ने बादशाह अकबर की अधीनगी स्वीकार न की और बहादुरों की भांति लड़ते हुए शहीद हो गए। ढाढी इन बहादुरों की वार गाते हैं जिन्होंने सांसारिक बादशाह की अधीनगी मानने से लड़ने-मरने को प्राथमिकता दी।

इस वार की पांच-पांच पंक्तियों वाली इक्कीस पउड़ियां हैं जिनके साथ श्लोक दर्ज किए मिलते हैं। इस वार में श्री गुरु अमरदास जी ने 'संसा' (आशंका) तथा 'सहज' (धैर्य) शब्दों का विस्तार करते हुए बताया है कि 'आशंका' व्यक्ति को व्यर्थ के बंधनों में बंधने एवं भटकने

का कार्य करती है जबकि 'सहज' टिकाव व शांति का प्रतीक है। 'सहज' में व्यक्ति को परमात्मा की रचना तथा हस्ती का ज्ञान होता है जो उसके मन में प्रेम, संतोष, दया तथा नम्रता जैसे गुणों का संचार करता है। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि सतिगुरु की शरण ग्रहण करने से आशंका का निवारण हो जाता है तथा प्रभु-कृपा का सदका परम-पद की प्राप्ति संभव हो सकती है :

भरमि भुलाई सभु जगु फिरी फावी होई भालि ॥
सो सहु सांति न देवई किआ चलै तिसु नालि ॥
गुर परसादी हरि धिआईऐ अंतरि रखीऐ उर धारि ॥
नानक घरि बैठिआ सहु पाइआ जा किरपा कीती करतारि ॥ *(पन्ना ९४८)*

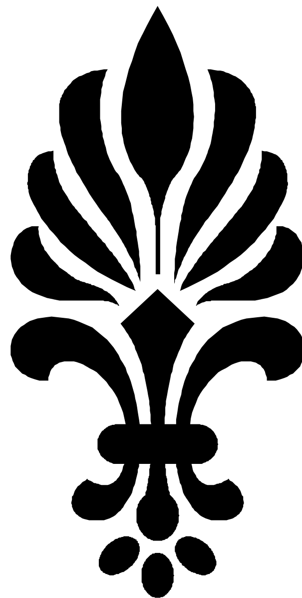
मारू की वार : "मारू वार महला ३" शीर्षक के अंतर्गत इस बाणी से प्रतीत होता है कि इस वार में भी श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रचित बाणी ही दर्ज होगी, मगर ऐसा नहीं है। इस वार का आरंभ गुरु नानक साहिब के श्लोक से होता है। इस बाणी में दर्ज ४७ श्लोकों में से गुरु नानक साहिब के १८, गुरु अंगद साहिब का एक, श्री गुरु अमरदास जी के २३, श्री गुरु रामदास जी के ३ तथा गुरु अरजन साहिब के २ श्लोक शामिल हैं। इस वार की २२ पउड़ियां हैं और प्रत्येक पउड़ी की पांच-पांच पंक्तियां हैं। अंतिम पउड़ी छः पंक्तियों की है। जैसे पउड़ियों में पंक्तियों की संख्या लगभग एक समान है, उसी प्रकार का नियम श्लोकों पर लागू नहीं है। श्लोकों में पंक्तियों की संख्या कम-ज्यादा है।

यह बाणी आध्यात्मिक उच्चता ग्रहण करने पर जोर देती है। गुरु नानक साहिब कहते हैं कि गुणों को ग्रहण करके अवगुणों को दूर करते हुए आध्यात्मिक उच्चता का मार्ग धारण किया जा सकता है। अवगुण गले की जंजीरों की भांति हैं जो मन को बुराइयों से आजाद नहीं होने देते। इस बाणी में श्री गुरु अमरदास जी खरे-खोटे की पहचान का स्रोत हृदय में विद्यमान परमात्मा के स्वरूप को मानते हैं जिस तक गुरु के शबद द्वारा पहुंचा जा सकता है :

अंदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥
गुर सबदी दरु जाणीऐ अंदरि महलु असराउ ॥
खरे परखि खजानै पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥
सभु सचो सचु वरतदा सदा सचु निआउ ॥
(पन्ना १०९२)

श्री गुरु अमरदास जी का जीवन तथा बाणी मनुष्य को सांसारिक भवसागर में से हंस की भांति मोती चुगने की प्रेरणा करती है जो कि अकाल पुरख, गुरु, शबद की वीचार, नाम-सिमरन आदि पर आधारित सेवा, सब्र, संतोष, दया, धर्म और धैर्य जैसे गुणों के माध्यम से प्रकट होते हैं।





श्री गुरु अमरदास जी की बाणी "अनंदु साहिब" का विषय-वस्तु

-डॉ. परमजीत कौर*

श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रामकली राग में उच्चारण की गई 'अनंदु' बाणी का प्रत्येक गुरसिक्ख के जीवन में बहुत महत्व है। यह बाणी न केवल 'अमृत' की पांच बाणियों में सम्मिलित है बल्कि प्रत्येक गुरसिक्ख परिवार में सुख-दुख के समय इसकी कम से कम पहली पांच तथा अंतिम पउड़ी का पाठ अरदास करने से पहले अवश्य किया जाता है। यह बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना ९१७ से ९२२ तक दर्ज है। इस बाणी की कुल ४० पउड़ियां हैं।

'अनंदु साहिब' में जीवन के परम लक्ष्य 'आनंद' की प्राप्ति का मार्ग निर्दिष्ट किया गया है तथा इस तथ्य को दृढ़ किया गया है कि परमात्मा की प्रीति के बिना मानव शरीर निरर्थक है :

साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥
देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥
(पन्ना ९१७)

प्रभु-प्रेम के बिना तृष्णा से संतप्त मनुष्य की सारी इंद्रियां सदैव बहिर्मुखी रहती हैं, जीवन विकारग्रस्त तथा दुखपूर्ण हो जाता है।

भौतिक पदार्थों के रस में निमग्न मनुष्य को समझाते हुये गुरु साहिब सुचेत करते हैं कि आनंद के स्रोत परमात्मा ने तेरे अंदर अपनी ज्योति रखी तब तू इस जगत में पैदा हुआ है, पर इस संसार में आकर तूने अन्य कार्यों में व्यस्त होकर परमात्मा को भुला दिया है। यह समझ लो कि अकाल पुरख के सिमरन के आनंद के बिना अन्य रसों में लिप्त रहने से तृष्णा समाप्त नहीं होती:

--ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै
किआ तुधु करम कमाइआ ॥
कि करम कमाइआ तुधु सरीरा
जा तू जग महि आइआ ॥
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ
सो हरि मनि न वसाइआ ॥ (पन्ना ९२२)
--ए रसना तू अन रसि राचि रही
तेरी पिआस न जाइ ॥
पिआस न जाइ होरतु कितै
जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥
हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु
बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ ॥ (पन्ना ९२१)

प्रभु-सिमरन का आनंद अनुभव होने लगे तो तृष्णा समाप्त हो जाती है, अन्य सारे स्वाद भूल जाते हैं :

कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे
जा हरि वसै मनि आइ ॥ (पन्ना ९२१)

जीवन में आनंद की प्राप्ति के लिये अपनी इंद्रियों को संयम में रखकर अंतरमुखी करने का उपाय बताते हुये गुरु साहिब समझाते हैं कि मन से वैर-विरोध की भावना को त्यागकर नेत्रों से सब में परमात्मा के दीदार करो, कानों से परमात्मा के गुण-कीर्तन की बाणी सुनो, जिसे सुनने के लिये परमात्मा ने भेजा है :

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥
साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति
बाणी ॥ (पन्ना ९२२)

House No. 620, Gali No. 1, Chhoti Line, Santpura, Yamunanagar (Haryana)-135001

मन को समझाया है कि हे मन! सदा परमात्मा के साथ जुड़ा रह, सच्चे प्रभु को सदा अंदर संभाल कर रख तथा जिस काम को करने से अंत में पश्चाताप करना पड़े, वह काम कभी नहीं करना चाहिए :

--ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥
हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥
(पन्ना ९१७)
ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ . . .
ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥
(पन्ना ९१८)

क्योंकि भक्तों की जीवन-युक्ति दुनिया के लोगों से भिन्न होती है। वे बड़े कठिन मार्ग पर चलते हैं। लालच, लोभ, अहंकार, ममता, माया की तृष्णा आदि को त्याग देते हैं। बहुत कम बोलते हैं, अपनी प्रशंसा नहीं चाहते :

भगता की चाल निराली ॥
चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥
लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥
खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥
गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥
कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥
(पन्ना ९१८)

प्रभु-प्रेम से प्राप्त आनंद का मार्ग प्रशस्त करते हुये श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी बाणी 'अनंदु साहिब' में परमात्मा, गुरु, गुरबाणी, नाम-महिमा, माया, प्रभु-कृपा आदि विषयों पर प्रकाश डाला है।

आत्मिक आनंद : आत्मिक आनंद एक ऐसा अमृत है जिसे देवता, मनुष्य तथा मुनिजन खोजते फिरते हैं :

सुरि नर मुनि जन अंम्रितु खोजदे सु अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ *(पन्ना ९१८)*

गुरु-मिलाप को आत्मिक आनंद का स्रोत बताया गया है। गुरु के मिलने से मन भटकना छोड़कर स्थिर हो जाता है तथा मन में खुशी के नाद बजने लगते हैं। गुरु से परमात्मा के गुण-कीर्तन की दात मिलती है, मन में नाम बस जाता है तथा पूर्ण आनंद पैदा हो जाता है:

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ *(पन्ना ९१७)*

वही प्रसन्नचित्त रह सकता है, वही आत्मिक आनंद का अनुभव कर सकता है जो आपा-भाव त्याग देता है। जहां माया के मोह के कारण सहम है, दुविधा है, वहां आत्मिक आनंद नहीं है। जो लोग गुरु के उपदेश के अनुसार जीवन बनाते हैं, वे माया के मोह से मुक्त हो जाते हैं, उनका मन विकारग्रस्त नहीं होता:

जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥
बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल
सतिगुर ते करणी कमाणी ॥
कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥
(पन्ना ९१९)

आत्मिक आनंद की अवस्था में मन की सारी दौड़-भाग समाप्त हो जाती है, सारे संकल्प पूरे हो जाते हैं, दुख, रोग, क्लेश, चिंता-फिक्र समाप्त हो जाते हैं। आनंद की यह अवस्था सतिगुरु की बाणी से प्राप्त होती है। सतिगुरु की बाणी को गाने तथा सुनने वालों के जीवन ऊंचे हो जाते हैं। उनको गुरबाणी में सतिगुरु ही प्रत्यक्ष दिखायी देते हैं :

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥
दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥

सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ (पन्ना ९२२)

केवल बातें करने से आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं होता :

इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ (पन्ना ९१९)

बाहर से धार्मिक दिखायी देने वाले कर्मकांडों से भी आत्मिक-आनंद का अनुभव नहीं होता। अनेक लोग ऐसे कर्म करके हार गये हैं पर मन की चिंता, सहम ऐसे किसी तरीके से दूर नहीं होते:

करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥
नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ (पन्ना ९१९)

कर्मकांड के अनुसार कौन-सा पाप-कर्म है तथा कौन-सा पुण्य-कर्म है, केवल यह विचार मनुष्य के अंदर आत्मिक आनंद पैदा नहीं कर सकता। गुरु की कृपा से जो मनुष्य सदा परमात्मा के नाम का सिमरन करता है, उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश होता है, प्रभु हृदय में आ बसता है। गुरु के शबद द्वारा एकरस गुण-कीर्तन के प्रवाह से सम्बंध बन जाता है, प्रभु का नाम प्राप्त हो जाता है तथा प्रभु-मिलाप का आनंद अनुभव होने लगता है :

--सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे
ततै सार न जाणी ॥ (पन्ना ९२०)
--मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥
हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ ॥
हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥
गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥
अनहत बाणी गुर सबदि जाणी
हरि नामु हरि रसु भोगो ॥
कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ
करण कारण जोगो ॥ (पन्ना ९२१)

परमात्मा : परमात्मा अगम, अगोचर है, अनंत है, इंद्रियों की पहुंच से परे है। अपने वास्तविक स्वरूप को प्रभु स्वयं ही जानता है। कोई जीव परमात्मा स्वयं ही बोलता है, प्रत्येक जीव की स्वयं संभाल करता है :

अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥
अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥
जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥
आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥
कहै नानकु तू सदा अगंमु है तेरा अंतु न पाइआ ॥ (पन्ना ९१८)

परमात्मा जिस प्रकार जीवों को जीवन-मार्ग पर चलाता है वैसे ही जीव चलते हैं :

जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी
होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ (पन्ना ९१९)

परमात्मा की रजा के अनुसार ही जीव माया के हाथों में नाच रहे हैं। जिस किसी को प्रभु सामर्थ्य देता है वह गुरु के बताये हुये मार्ग पर चलता है, माया के बंधनों से स्वतंत्र हो जाता है। परमात्मा जीव के सभी दुखों को दूर करने वाला है तथा सारे कार्य पूर्ण करने में समर्थ है--स्वयं ही जीव की 'मां' तथा स्वयं ही 'पिता' है :

--अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ . . .
घरि त तेरै सभु किछु है जिस देहि सु पावए ॥ (पन्ना ९१७)
--हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ (पन्ना ९२१)

परमात्मा ने प्राण को शरीर-गुफा में टिका कर जिह्वा को बोलने की शक्ति दी, नाक, कान

आदि नौ कर्म-इंद्रियां प्रत्यक्ष रूप से बनायीं, दसवें द्वार को गुप्त रखा। प्रभु ने जिसको गुरु-दर पर पहुंचा कर अपने नाम में श्रद्धा-प्यार पैदा किया, उसे दसवां द्वार भी दिखा दिया :

हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै
वाजा पवणु वजाइआ ॥
वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए
दसवा गुपतु रखाइआ ॥
गुरदुआरै लाइ भावनी
इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ (पन्ना ९२२)

गुरु तथा गुरबाणी : श्री गुरु अमरदास जी अपनी बाणी द्वारा बार-बार दृढ़ करवाते हैं कि गुरु की शरण के बिना आत्मिक आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती। आत्मिक आनंद की सूझ-समझ गुरु से ही प्राप्त होती है :

कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ . . .
आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥ (पन्ना ९१७)

गुरु-कृपा से मन निर्मल हो जाता है, पाप दूर हो जाते हैं :

गुर परसादी मनु भइआ निरमलु
जिना भाणा भावए ॥ (पन्ना ९१७)

आत्मिक आनंद के दाता परमात्मा के मिलाप का एक ही रास्ता है--मनुष्य अपने आप को 'गुरु' के हवाले कर दे, 'गुरु' द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चले तथा परमात्मा की सिफत-सलाह के गीत गाता रहे। गुरु के सिक्ख के लिये गुरबाणी ही 'गुरु' है। जीवन-सफर में गुरबाणी में बताये गये मार्ग पर चलना ही अपने आप को गुरु के हवाले करना है, तन-मन अर्पित करना है। गुरु की मति पर चले बिना मन पवित्र नहीं होता तथा सहज अवस्था नहीं बनती :

तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥
हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ (पन्ना ९१८)

वही मनुष्य गुरु के सम्मुख खड़ा होने में समर्थ है, वही प्रसन्नचित्त रह सकता है तथा आत्मिक आनंद का अनुभव कर सकता है जो 'मैं' की भावना त्यागकर 'गुरु' का आश्रय लेता है तथा गुरु के बिना किसी अन्य के चक्कर में नहीं पड़ता:

आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥ (पन्ना ९१९-२०)

गुरु के बिना माया के बंधन से मुक्ति नहीं मिल सकती :

अनेक जूनी भरमि आवै बिनु सतिगुर मुकति न पाए ॥ (पन्ना ९२०)

गुरु द्वारा यह समझ आती है कि आत्मिक आनंद प्राप्त करने के लिये परमात्मा का नाम ही वास्तविक पूंजी है तथा मन व्यापारी है। मन व्यापारी ने आत्मिक आनंद रूपी लाभ प्राप्त करने के लिये परमात्मा के नाम की पूंजी व्यापार में लगानी है :

हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥
हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ (पन्ना ९२१)

गुरु की शरण में आकर जीवन सफल हो जाता है :

कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ
जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ (पन्ना ९२२)

श्री गुरु अमरदास जी ने सदा कायम

रहने वाली, परामात्मा के साथ जोड़ने वाली गुरबाणी के गायन का उपदेश दिया है। गुरु जी की बाणी अन्य सभी बाणियों में श्रेष्ठ है :

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥
(पन्ना ९२०)

सतिगुरु के बिना अन्य 'बाणियां' आत्मिक आनंद का साधन नहीं बनतीं। ऐसी 'बाणी' मन को कमजोर कर देती है, मन विचलित रहता है तथा माया-मोह में फंसा रहता है:

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥
बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥
कहदे कचे सुणदे कचे कची आखि वखाणी ॥
(पन्ना ९२०)

सतिगुरु का शबद परमात्मा के बढ़प्पन से पूर्ण एक अमूल्य देन है। जो मनुष्य इस गुरबाणी से अपना मन जोड़ता है, उसके अंदर परमात्मा के लिये प्रेम पैदा हो जाता है, मन की मैल दूर हो जाती है तथा वो परमात्मा में लीन हो जाता है:

गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥
सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ ॥
सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥
(पन्ना ९२०)

इस बाणी को सुनने वाले, उच्चारण करने वाले सभी पवित्र हो जाते हैं, मन प्रफुल्लित हो जाता है। परमात्मा के गुण-कीर्तन की आत्मिक आनंदमयी बाणी को साधसंगति में बैठकर गायन का निर्देश दिया गया है :

एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥
गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ *(पन्ना ९२२)*

नाम-महिमा : प्रभु का नाम आत्मिक जीवन देने वाला जल है, अमृत है। परमात्मा के नाम का सिमरन ही गुरु द्वारा निर्दिष्ट जीवन-मार्ग है। यदि नाम जीवन का आधार बन जाये तो सारी इच्छाएं, सारे लालच समाप्त हो जाते हैं, मन में सुख-शांति का निवास हो जाता है :

साचा नामु मेरा आधारो ॥
साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥
करि सांति सुख मनि आइ वसिआ
जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ *(पन्ना ९१७)*

गुरु की कृपा से, मोह की नींद से वही मनुष्य जागते हैं जिनके अंदर परमात्मा का नाम बसता है :

गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंम्रित बाणी ॥ *(पन्ना ९२०)*

नाम-सिमरन करने वाले शुद्ध आचरण वाले हो जाते हैं। काम, क्रोध, अहंकार आदि उन पर अपना प्रभाव नहीं डालते। वे सदैव इंद्रियों तथा मन पर विजय प्राप्त करने का यत्न करते रहते हैं। उनकी संगत में उनके माता-पिता, परिवार के लोग भी पवित्र जीवन वाले बन जाते हैं। उनके लिये नाम की तुलना में माया के रस कुछ महत्व नहीं रखते :

पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥
हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥
पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥ *(पन्ना ९१९)*

जिन लोगों के मन में 'नाम' बस जाता है, उनके अंदर मानो अनेक साजों की मिली-जुली सुर बजने लगती है, मन में चाव, खुशी पैदा हो जाती है :

नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥
(पन्ना ९१७)

माया : परमात्मा द्वारा पैदा की गयी मोहिनी

'माया' ने सारे त्रिगुणी जीवों को वश में किया हुआ है जिस कारण से भी मनुष्य तथा परमात्मा के बीच दूरी पैदा हो जाती है या जो कुछ भी परमात्मा से अधिक प्यारा लगता है वह सब 'माया' है। बहुत धन की प्रसिद्धि या रुतबे की भूख, भौतिक पदार्थों की चाहत, स्त्री, पुत्र, पति आदि का मोह सब माया के ही रूप हैं। जैसे मां के पेट में अग्नि है वैसे ही बाहर जगत में माया-अग्नि दुखदायी है :

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥
माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥
जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥
लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥
एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ *(पन्ना ९२१)*

यह 'माया' जीवों को अपने मोह में फंसाने के लिये बड़ी मोहिनी है। इसने इस भ्रम में डाल रखा है कि मोह मधुर व आकर्षक वस्तु है। इस तरह यह जीवों को कुमार्ग पर ले जाती है। यदि मनुष्य अंदर से 'माया' के मोह में फंसा रहे तो बाहर से चतुराई की बातों से आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती :

ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥
चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥
एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥
माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ *(पन्ना ९१८)*

'माया' के मोह में फंसे रहने से मन में चिंता, सहम बना रहता है : *"सहसै जीउ मलीणु है . . . ॥"* मन विकारग्रस्त रहता है तथा माया-लिप्त जीव अपना जीवन ऐसे व्यर्थ गंवा देता है जैसे कोई जुआरी जुए में धन हार जाता है।

प्रभु-कृपा : जब तक परमात्मा की कृपा-दृष्टि न हो तब तक अनेक उपायों द्वारा भी परमात्मा का दर प्राप्त नहीं होता। मनुष्य जगत् में मायिक पदार्थों में आनंद ढूंढता है। प्रभु की कृपा से ही यह समझ आती है कि सुख, आनंद का दाता प्रभु स्वयं है। अपने उद्यम से कोई मनुष्य आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं कर सकता। जिस मनुष्य पर प्रभु की कृपा होती है उसे वो गुरु से मिलाता है, उसकी विचारशक्ति प्रदीप्त हो जाती है, वह प्रभु के नाम में जुड़ता है तथा सिमरन की बरकत से नामी प्रभु स्वयं अंदर बस जाता है :

--करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥
अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ *(पन्ना ९१७)*
--बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥
पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ *(पन्ना ९१८)*

परमात्मा की कृपा से मन भटकना छोड़कर स्थिर हो जाता है तथा तृष्णाएं परमात्मा के नाम में लीन होकर समाप्त हो जाती हैं और जीव तलवार की धार से तीक्ष्ण तथा अत्यंत सूक्ष्म भक्ति के मार्ग पर चलने में समर्थ हो सकता है :

कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ *(पन्ना ९१८)*

कृपा हो जाये तो ध्यान सांसारिक कार्य करते हुये भी प्रभु में जुड़ा रहता है तथा आत्मिक आनंद बना रहता है :

--कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥ *(पन्ना ९२१)*
--इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ *(पन्ना ९२२)*



'अनंदु' बाणी की बहुविध महिमा

-डॉ. नवरत्न कपूर*

बाणी की संरचना और सामाजिक पक्ष : 'अनंदु' वस्तुत: संस्कृत शब्द 'आनंद' का अपभ्रंश रूप है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इसकी अर्थवत्ता इस प्रकार प्रकट की है : *मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ ॥ (पन्ना ३९६)*

'अनंदु' (आनंद) का अर्थ है- खुशी, प्रसन्नता। भाई कान्ह सिंघ ने श्री गुरु अमरदास जी की इस बाणी के कारण और सिक्खों के सामाजिक जीवन में इसकी महत्ता को इस प्रकार दर्शाया है :

१. बाबा मोहरी के पुत्र के जन्म के अवसर पर संवत् १६११ में रचित श्री गुरु अमरदास जी की बाणी, जो कि 'रामकली' राग में निबद्ध है। बाबा मोहरी गुरु साहिब का छोटा पुत्र था।

२. सिक्ख धर्मावलंबियों के विवाह की रस्म को भी 'अनंद कारज' कहा जाता है, *"बिना अनंद बिआह के भुगते पार की जोइ। मेरा सिख न सोइ।" (रतनमाल)* इस बाणी का गायन अन्य शुभ अवसरों पर भी होता है, जैसा कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जन्म के अवसर पर हुआ था--*"गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥"*[१]

श्री गुरु अमरदास जी ने सदैव स्त्री जाति की महिमा का प्रतिपादन किया। अपनी धर्मपत्नी के कथन पर अपनी पुत्री बीबी भानी जी का विवाह श्री (गुरु) रामदास जी से किया, जो कि चौथे पातशाह के रूप में गुरु-पदवी पर आसीन हुए।

'वैसाखी' और 'दीवाली' पर गोइंदवाल में गुरु साहिब के दर्शनार्थ आने वाले अपने श्रद्धालुओं को प्रेरित किया कि वे अपनी धर्मपत्नी एवं बाल-बच्चों के साथ पधारें। सती-प्रथा को रोकने और विधवा के पुनर्विवाह पर बल दिया। इस प्रकार सामाजिक सुधार में श्री गुरु अमरदास जी की अद्वितीय देन को स्वीकारते हुए उनकी 'अनंदु' बाणी सिक्खों के 'अनंद कारज' का एक अविच्छिन्न अंग बन गई। इसके सम्बंध में भाई कान्ह सिंघ नाभा का कथन है :

"(विवाह स्थल पर) सुबह के समय 'आसा की वार' पाठ के पश्चात ('अनंद कारज' करवाने वाला ग्रंथी) श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज वधू और वर के लिए निर्देशों का उल्लेख करके विवाह की पुष्टि करे। फिर 'लावां'[२] का मूल पाठ और 'अनंदु' बाणी का गायन करने के पश्चात् शुभ कार्य हेतु तैयार किया गया कड़ाह-प्रसाद बांटे।" (Early in the morning, after 'Asa Di Var', the bride and bridegroom should be imparted instructions according to the scripture and their marriage be confirmed. Then the 'Lavan' (circumalulatory) text and 'Anand' be recited and consecrated pudding distributed.)[३]

कालांतर में 'अनंद कारज' को २२ अक्तूबर, १९०९ को एक अधिनियम का दर्जा मिल गया। इस विषय में भाई कान्ह सिंघ नाभा का कथन प्रस्तुत है :

"विवाह की 'अनंद विधि' सिक्खों में बहुत पुरानी (चली आ रही) है। नाभा के राजकुंवर रिपुदमन सिंघ ने इसे कानूनी दर्जा दिलवाने का

*९०१, टावर डी-३, सागर दर्शन टावर्स सोसाइटी, पाम बीच रोड, सेक्टर-१८, नेरूल (नवीं मुंबई)-४००७०६

प्रयास किया था। एक विधेयक काउंसिल में ३० अक्तूबर, १९०८ को पेश किया गया। सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया के प्रयास के फलस्वरूप २७ अगस्त, १९०९ को 'चुनिंदा सदस्यों की समिति' से प्रतिवेदन मांगा गया। २२ अक्तूबर, १९०९ को 'अनंद कारज' अधिनियम पारित हुआ।"[४]

गहन जीवन-दृष्टि और गुरमति : सिक्ख गुरु साहिबान गृहस्थ-जीवन को त्याग कर, फकीरी अपनाकर और कमंडल धारण करने के विरुद्ध थे। उन्होंने गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी ईश्वर-भक्ति की पद-रचना करके 'ब्रह्मानंद' की प्राप्ति पर जोर दिया। 'ब्रह्मानंद' वस्तुतः इंद्रियों से जुड़े भोग-विलास से परे की चीज है, जिसे 'अतींद्रिय' कहा जाता है और यह स्थायी होता है। इस आनंद को मनुष्य अपने मुख से बता नहीं सकता, इसलिए 'अकथनीय' कहलाता है। इस अकथनीय आनंद की प्राप्ति मनुष्य को आत्म-समर्पण से ही होती है। इस विषय में श्री गुरु अमरदास जी के मनोहर वचन सुनिए :

--आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥
करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ (पन्ना ९१८)

--गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥
आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥२१॥ (पन्ना ९१९)

गुरु की कृपा से कर्मों की कालिमा तथा मोह का बंधन-पाश टूटने से आत्मिक आनंद की प्राप्ति होती है :

जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥
करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥
अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥७॥ (पन्ना ९१७)

माया-मोह में ग्रस्त व्यक्ति अतींद्रिय सुख से वंचित रहता है। इस संदर्भ में डॉ. तारन सिंघ ने 'अनंदु' बाणी के परिप्रेक्ष्य में लिखा है :

"सो यदि 'माया की लगन' रास्ते में आ जाए तो मनुष्य गुरु-रब्ब (भगवान-स्वरूप गुरु) की ओर नहीं जा सकता, वह स्वै-काबू (आत्म-नियंत्रण) तथा स्वै-ज्ञान (आत्म-ज्ञान) प्राप्त नहीं कर सकता, वह बीच में ही अटक जाता है तथा खुशी (आनंद) से दूर रहता है।"

'अनंदु साहिब' का विषय "खुशी की प्राप्ति" है। इसके सारे साधन एवं इसके मार्ग में आने वाली रुकावटों (बाधाओं) का वर्णन है और सभी कुछ को लांघने का तरीका (विधि) बताया गया है।"[५]

आत्म-ज्ञान और सहजानंद में बाधक मनोविकारों का उल्लेख श्री गुरु अमरदास जी ने इस प्रकार किया है :

क) क्रोध : *सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥*
एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥
इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ (पन्ना ९१९)

ख) भय : *एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥*
साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥
ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥ (पन्ना ९१८)

ग) घृणा : *बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥*
एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ (पन्ना ९१९)

इन्हीं विकारों के कुप्रभाव से सुचेत करते हुए गुरु साहिब ने लिखा है :

कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ (पन्ना ९१९)

मानवीय मनोविकारों के कुप्रभावों का संकेत करते हुए और उनसे बचने का उल्लेख करने के साथ-साथ गुरु साहिब ने मानव-प्राणियों को निरुत्साहित नहीं होने नहीं दिया है। वे ईश्वर-भक्तों को उत्साहित करते हुए लिखते हैं:

हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ (पन्ना ९१७)

ईश्वर-प्राप्ति और ब्रह्मानंद की उपलब्धि के मार्गदर्शक गुरु तथा उसकी अनहद बाणी ही मनुष्य को अपनानी चाहिए, यही गुरु साहिब के मनोहर वचन हैं, यथा :

मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥
हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ ॥
हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥
गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥
अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥ (पन्ना ९२१)

इसी तथ्य की पुष्टि श्री गुरु अमरदास जी ने अपने एक अन्य पद में इस प्रकार की है:

गुर गिआनु प्रचंडु बुलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ (पन्ना २९)

इतिहासकार डॉ. हरीराम गुप्ता ने इन्हीं बातों का उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया है:

It is a discourse on God's glory and grandeur. 'Anand' may be divided into three parts :

1. In the first place the Guru points out hurdles lying in the way of a devotee. They are avarice, ego, falsehood, greed, hypocrisy and worldly desires. The devotee should avoid then as far as possible while performing his duties towards his family, in his professional career and in the service of society.

2. The devotee should keep constant association with the Guru, the holy SANGAT, and join in the KIRTAN and recitation of GURBANI.

3. He should surrender himself completely to God's will. Then all grief and sorrows would disappear. The devotee would be blessed with divine wisdom. He would become JIWAN-MUKT or the liberated one.[6]

जिस प्रकार मानव-जीवन की सफलता में मनुष्य की गुरु-भक्ति सदा-सर्वथा साथ देती है, इसी प्रकार सिक्ख 'अनंद कारज' में गुरमुख द्वारा 'अनंदु' बाणी का उच्चारण यही संदेश देता है कि पति-पत्नी का सामंजस्य-भाव ही उनके जीवन की सफलता का एकमात्र सही साधन है। इससे श्री गुरु अमरदास जी की इस महान बाणी में विद्यमान प्रतीकात्मकता लक्षित होती है।

संदर्भ ग्रंथ

१. Bhai Kahan Singh Nabha : Encyclopedia of the Sikh Literature ('गुरू शबद रतनाकर : महान कोश' का अंग्रेजी अनुवाद), पृष्ठ १५४, Vol. I, Punjabi University, Patiala (2006)।

२. भाँवर; पुआधी (पंजाब के मालवा क्षेत्र की बोली) में इसे 'फेरे' कहा जाता है।

३-४. Bhai Kahan Singh Nabha : Encyclopedia of Sikh literature, Vol. I, Page 246.

५. डॉ. तारन सिंघ : स्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दा साहितक इतिहास, पृष्ठ ३४३-३४४ (शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर, सन् १९६३)

६. Dr. Hari Ram Gupta : History of the Sikhs, Vol. I, Page 124 (Munshi Ram Manohar Lal Publishers Pvt. Ltd. Delhi; 1984)



श्री गुरु अमरदास जी द्वारा उच्चरित 'सतवारा' बाणी

*-ज्ञानी मोहन सिंघ**

'सतवारा' राग बिलावलु में साहिब श्री गुरु अमरदास जी के मुखारबिंद से उच्चरित बाणी है जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ८४१ पर अंकित है। इस बाणी को विचारने से पूर्व "श्री गुरु ग्रंथ साहिब क्या है, इसमें क्या है और इसको संपादन करने की आवश्यकता क्यों पड़ी" के बारे में जानना अति आवश्यक है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्ख धर्म का वह पवित्र ग्रंथ है जिसको "असवारा साहिब, बीड़ साहिब, सरूप साहिब, दरबार साहिब" आदि नामों से पुकारा जाता है।

धर्म-ग्रंथ के बिना कोई भी धर्म नहीं चल सकता। धर्म-ग्रंथ में अंकित विचार ही एक धर्म से दूसरे को अलग करके उसकी विलक्षणता कायम करते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब को तैयार करने का विचार श्री गुरु नानक देव जी का ही था, इसी लिए आप जी ने बाणी रची और इसको आगामी गुरु साहिब तक पहुंचाने का विचार बनाया। दूसरा कारण यह था कि हिंदू धर्म के ग्रंथ संस्कृत में होने के कारण इनको देवबाणी माना जाता था, अत: इन ग्रंथों के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में लिखी गई रचना को पवित्र नहीं माना जाता था। दूसरे शब्दों में वह रचना धर्म-कर्म के कार्यों में स्वीकृत नहीं होती थी। गुरु साहिब ने इन स्वर्ण भांति की मिथों को तोड़कर लोगों की भाषा में रचित कृतियों को और लिखी गई बाणी को दैवी स्वीकृति दिलाने की आवश्यकता समझ कर इस पावन ग्रंथ को संपादित करने की जरूरत महूसस की। इन सभी तथ्यों को सामने रखकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रचना की गई। श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्खों के 'शबद-गुरु' हैं। निर्मल आचरणमूलक विचारों के इस उत्तम भंडार एवं अथाह खजाने में छ: सिक्ख गुरु साहिबान, पंद्रह भक्त साहिबान, ग्यारह भट्ट साहिबान तथा अन्य गुरु के सिक्खों की बाणी शामिल है। समस्त बाणी ३१ रागों में विद्यमान है। युगो-युग अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब के भीतर का संदेश समस्त मानव-जाति के लिए परस्पर प्रेम-प्यार, परोपकार, समानता एवं सांझीवालता आदि दैवी गुणों से भरपूर है। इसकी समस्त बाणी सरल पंजाबी एवं साध-भाषा में होने के कारण साधारण से साधारण जीव की समझ में आ जाती है। इसके खजाने रूहानी विचारों, गुरमति सिद्धांतों तथा भावों रूपी रत्नों के साथ भरे पड़े हैं परंतु ये प्राप्त उनको होते हैं जिन पर प्रभु कृपा करे। यह वो सौदा है जिसका लाभ तथा इसमें से नाम रूपी कमाई प्राप्त की जा सकती है :

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार ॥
गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु ॥
सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु ॥१॥
(पन्ना ६४६)

इस पवित्र ग्रंथ में मनुष्य के हरेक प्रश्न

**एल-६/९०५, गली नं: ३/६, न्यू शहीद ऊधम सिंघ नगर, श्री अमृतसर। मो: ९७७९६०८०५०*

का उत्तर है; आवश्यकता है उसको ढूंढने, समझने, विचारने तथा व्यवहार में लाने की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जहां ऋतुओं, महीनों, थितों, दिन-रैणि, पहरे आदि का जिक्र है वहां मानवी जीवन से जुड़े सातों वारों के बारे में भी विचार दिये गए हैं इसलिए कि संसारी जीव वारों के भ्रमों में से निकल कर गुरु-चरणों के साथ जुड़ सकें।

सातों वारों को अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है, जैसे कि वीक, हफ्ता, सप्ताह, सतवारा, सतवाड़ा आदि। जिस प्रकार ये अलग-अलग नाम हैं उसी प्रकार सातों वारों को अलग-अलग भाषाओं एवं धर्मों के अनुसार अलग-अलग नामों के साथ जाना जाता है:

१. रविवार: अंग्रेजी-Sunday, Weekend[1], संस्कृत-आदित्य, पंजाबी-ऐतवार, उर्दू[2]-इतवार, अरबी[3]-यौम-अल-अहद, गुरबाणी-आदितवारि आदि।
२. सोमवार: अंग्रेजी-Monday, संस्कृत-सोम, पंजाबी-सोमवार, उर्दू-पीर, अरबी-यौम-अल-इसनैन, गुरबाणी-सोमवारि।
३. मंगलवार: अंग्रेजी-Tuesday, संस्कृत-मंगल, पंजाबी-मंगलवार, उर्दू-मंगल, अरबी-यौम-अल-सलसाअ, गुरबाणी-मंगलवारे, मंगलि।
४. बुधवार: अंग्रेजी-Wednesday, संस्कृत-बुद्ध, बुद्धि, पंजाबी-बुधवार, उर्दू-बुध, अरबी-यौम-अल-अरबिआ, गुरबाणी-बुधवारि।
५. गुरूवार: अंग्रेजी-Thursday, संस्कृत-बृहस्पति, हिंदी-वृहस्पति, पंजाबी-वीरवार, उर्दू-जुमेरात, अरबी-यौम-अल-खसीस, गुरबाणी-बृहस्पति, वीरवारि।
६. शुक्रवार: अंग्रेजी-Friday, संस्कृत-सुकृत, हिंदी-शुक्रवार, उर्दू-जुमा, अरबी-यौम-अल-जुमा, गुरबाणी-सुकृत, सुक्रवारि।
७. शनिवार: अंग्रेजी-Saturday, संस्कृत-शनैश्चर, हिंदी-शनिवार, उर्दू-हफ्ता, अरबी-यौम-अल-सुबत, गुरबाणी-छनिछरवारि।

सिक्ख धर्म के अनुसार कोई भी दिन-वार अच्छा-बुरा नहीं, सब दिन-वार समान हैं। सिक्ख धर्म को मानने वालों के लिए किसी दिन-वार की वीचार करना मनमति है। उसके लिए सभी दिन तथा वार अच्छे हैं जिस पर परमेश्वर कृपा करे, जैसा कि 'बारह माहा मांझ' में फरमान है :

माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥
(पन्ना १३६)

गुरु के सिक्ख मात्र गुरु के हुक्म को ही सुनते तथा मानते हैं।

'सतवारा' बाणी की रचना करने के बारे में विद्वानों का मानना है कि इस बाणी की रचना श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खों द्वारा विनती किये जाने पर की थी।

'सिधांतक सटीक' में सतवारे के बारे में भूमिका इस प्रकार लिखी गई है:

सिक्खों ने श्री गुरु अमरदास जी के सम्मुख होकर विनती की, हे गुरु! जैसे गुरु नानक देव जी ने तुखारी राग में बारह महीनों के माध्यम से और बिलावलु राग में थितों के माध्यम से कल्याणकारी उपदेश बख्शा है उसी प्रकार आप जी भी सात दिनों के माध्यम से उपदेश बख्श दो तो हजूर जी हरेक दिन के द्वारा उपदेश करते हैं।[४]

(१) अमृतसरी टकसाल भी उपर्युक्त विचार से सहमत है।

श्री गुरु अमरदास जी द्वारा उच्चारण किया 'सतवारा', जो बिलावलु राग में है, को दशम घर के भीतर गायन करने की हिदायत है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सात वारों के बारे में दो स्थानों पर जिक्र आता है :

रागु गउड़ी वार कबीर जीउ के ७
बिलावलु महला ३ वार सत घरु १०

दोनों की 'रहाउ' की पंक्तियों का भावार्थ यह है कि सातों वारों में अन्य सभी विचारों तथा वहमों-भ्रमों को छोड़कर प्रभु-भक्ति में लीन होना है।

१. रविवार को गुरबाणी में 'आदित वारि' संबोधन द्वारा उपदेश देते हुए श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि वह परमेश्वर ही सभी में ताने-पेटे की भांति व्यापक है। जो जीव उस प्रभु के नाम का चिंतन करते हैं उनको आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है तथा इसको कोई बिरला गुरमुख ही बूझ सकता है:

आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥
आपे वरतै अवरु न कोई ॥
ओति पोति जगु रहिआ परोई ॥
आपे करता करै सु होई ॥
नामि रते सदा सुखु होई ॥
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥१॥ (पन्ना ८४१)

२. सोमवार (सोमवारि) के माध्यम से विचार व्यक्त करते हैं कि उस प्रभु की कीमत कही नहीं जा सकती, सब लोग उसकी महिमा कह-कह कर थक गए हैं। वह हरि इंद्रियों की पहुंच से परे (दूर) है, वह जाना नहीं जा सकता। गुरु-शबद की कमाई करने से यह पता चलता है कि वह हरि परमेश्वर सब में समाया हुआ है :

सोमवारि सचि रहिआ समाइ ॥
तिस की कीमति कही न जाइ ॥ . . .
अगम अगोचरु लखिआ न जाइ ॥
गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ ॥२॥

३. मंगलवार (मंगलि) के माध्यम से उपदेश है कि उस परमेश्वर ने ही माया का मोह पैदा करके समस्त संसार के जीवों को व्यवसायों में लगाया है। जो जीव प्रभु-भक्ति करते हैं उनको यह सारी सोझी (सूझ-बूझ) आ जाती है कि शबद के द्वारा अहंकार तथा मोह को जलाया जा सकता है :

मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ॥
आपे सिरि सिरि धंधै लाइआ ॥ . . .
प्रेम भगति करे लिव लाइ ॥
हउमै ममता सबदि जलाइ ॥३॥

४. बुधवार (बुधवारि) के माध्यम से उपदेश देते हुए गुरु साहिब फरमान करते हैं कि श्रेष्ठ बुद्धि देने वाला वो करतार स्वयं ही है। परमेश्वर का नाम-सिमरन ही मलीन मन को निर्मल करने वाला है। इससे हउमै रूपी मैल का नाश हो जाता है तथा जीव सच्चे परमेश्वर के दर पर सदैव शोभा पाता है। नाम की दात (ऊंची वस्तु) गुरु की कृपा से ही प्राप्त होती है इसलिए नाम के दाता सतिगुरु की जय-जयकार करनी चाहिए भाव उस पर बलिहार जाना चाहिए:

बुधवारि आपे बुधि सारु ॥
गुरमुखि करणी सबदु वीचारु ॥ . . .
नानक नामु रखहु उर धारि ॥
देवणहारे कउ जैकारु ॥५॥

५. बृहस्पतिवार (वीरवारि) द्वारा यह कथन है कि सभी पुराणों के मुताबिक जो बावन बीर हैं, उनको स्वयं उसने ही भटकना में डाला हुआ है; भूत-प्रेत सब माया में लगे हुए हैं, परंतु हे कर्ता! सबको तेरा ही सहारा है, सब तेरी ही शरण में हैं परंतु तेरे साथ उसका ही मिलाप होता है जिसको तू स्वयं अपने साथ मिला लेता है:

वीरवारि वीर भरमि भुलाए ॥
प्रेत भूत सभि दूजै लाए ॥ . . .

जीअ जंत तेरी सरणाई ॥
सो मिलै जिसु लैहि मिलाई ॥६॥

६. शुक्रवार (सुक्रवारि) के माध्यम से उपदेश है कि वह परमेश्वर सभी में व्यापक है। उसने ही सारी सृष्टि बनाई है तथा उसने स्वयं ही उसकी कीमत पाई है। इस रहस्य को वही जीव समझ सकता है जो गुरु के सन्मुख होकर, उसके गुणों को विचार कर मन में बसाता है, शेष मिथे हुए कर्मकांड, व्रत तथा पूजा आदि के उद्यम आत्मिक सोझी के बिना भ्रम-भुलेखों में ही रखने वाले हैं:

सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ॥
आपि उपाइ सभ कीमति पाई ॥ . . .
वरतु नेमु निताप्रति पूजा ॥
बिनु बूझे सभु भाउ है दूजा ॥७॥

७. शनिवार (छनिछरवारि) के माध्यम से बताते हैं कि समस्त संसार 'मैं, मेरी' में भटक रहा है। संसारी जीव द्वैत-भाव में अंधे होने के कारण यम के दरबार में बंधे हुए चोटें खा रहे हैं। वही मनुष्य गुरु-कृपा से आत्मिक सुखों की प्राप्ति करेगा जो सच्ची करणी तथा सच्चे के साथ लिव लगाएगा :

छनिछरवारि सउण सासत बीचारु ॥
हउमै मेरा भरमै संसारु ॥ . . .
गुर परसादी सदा सुखु पाए ॥
सचु करणी साचि लिव लाए ॥८॥

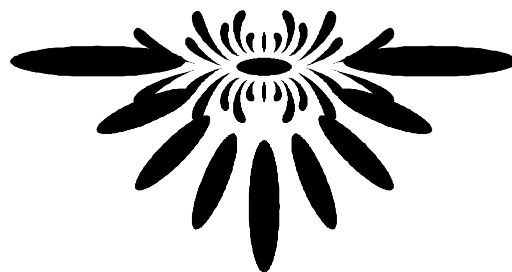
अंत में उपदेश है कि जीवों को वह हरि स्वयं ही अपनी ओर लगाता है तथा यह समझ गुरु के सन्मुख होने से आती है। यहां गुरु साहिब संसारी जीवों के भ्रमों की निवृत्ति करते हुए बताते हैं कि थितों-वारों आदि की पूजा में भटकते रहने की बजाय यही देखना चाहिए कि वही दिन शुभ है जो दिन प्रभु की स्मृति में गुजर जाए, नहीं तो ये सब समय के विभाजन मात्र हैं :

पंद्रह थिती तै सत वार ॥
माहा रुती आवहि वार वार ॥
दिनसु रैणि तिवै संसारु ॥
आवा गउणु कीआ करतारि ॥ (पन्ना ८४२)

प्रसंग :

१. अंग्रेजी-पंजाबी कोश, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ ७४८
२. मोहम्मद मिरसाद, अरबी-फारसी-उर्दू टीचर, जामा मस्जिद खैरउदीन, हाल बजार, श्री अमृतसर।
३. उपरोक्त।
४. गुरशबद रतनाकर महानकोश, पृष्ठ ६८६
५. हिंदुओं के व्रत और त्यौहार, लेखक पंडित राधे श्याम शर्मा, पृष्ठ १८४
६. गुरशबद रतनाकर महान कोश, पृष्ठ ९९०
७. उदय सिंह, पादरी, चर्च, कोर्ट रोड, श्री अमृतसर
८. गुरशबद रतनाकर महान कोश, पृष्ठ १०४९
९. सिधांतक सटीक श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पांचवीं सैंची, पृष्ठ ७०९





श्री गुरु अमरदास जी से सम्बंधित महत्वपूर्ण स्रोत-सूचना

*-डॉ. गुरमेल सिंह**

जीवन/शख्सियत स्रोत

- श्री गुरु अमरदास जी की अपनी बाणी
- रामकली सदु (पन्ना ९२३)
- रामकली की वार-सत्तै-बलवंडि (पन्ना ९६६)
- तुखारी महला ४ (पन्ना १११६)
- भट्ट साहिबान के सवैये (पन्ना १३९२)

भाई गुरदास जी

- वारां--१:४६, ११:१६, २४:९,१०,११,१२,१३; २६:३३ आदि विशेष

गोसटि गुरु अमरदास जी कृत सोढी हरि जी: संपादक डॉ. राय जसबीर सिंघ, गुरु अमरदास स्रोत पुस्तक, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर, १९८६

बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का कृत भाई केसर सिंघ छिब्बर

संपादक डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), 'परख', भाग-२, १९७२, पंजाब यूनीवर्सिटी, चंडीगढ़, पृष्ठ २९, चरण-३, वृत्तांत गुरु अमरदास जी।

परचीआं कृत सेवादास

संपादक प्रो. हरी सिंघ, (संशोधन) डॉ. गंडा सिंघ, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, १९६३, पृष्ठ ६४

महिमा प्रकाश कृत सरूपदास भल्ला--भाग-२, खंड-१ : संपादक डॉ. उत्तम सिंघ (भाटिया), भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, १९९९ (तीसरी बार), पृष्ठ १४७

गुरबिलास पा: ६

संपादक डॉ. अमरजीत सिंघ--ज्ञानी जोगिंदर सिंघ, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शि: गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर, १९९८

सवैये उसतति स्री सतिगुरू अमरदास जी की कृत कुशल दास

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ कृत भाई संतोख सिंघ

संपादक भाई वीर सिंघ, जिल्द पांचवीं, मैनेजर खालसा समाचार, श्री अमृतसर, १९६२

गुर कीरत प्रकाश कृत वीर सिंघ बल्ल

संपादक डॉ. गुरबचन कौर, पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, १९८६, पृष्ठ ९६, हुलास-३

गुरपुर प्रकाश कृत संतरेण कवि प्रेम सिंघ

श्री अमृतसर, ४९६ सं. नानकशाही

श्री गुरपद प्रेम प्रकाश कृत बाबा सुमेर सिंघ

संपादक डॉ. अछर सिंघ (काहलों), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९९५

गुर प्रणालीआं

संपादक भाई रणधीर सिंघ, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शि: गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर, १९७७

गुर रतनावली कृत बाबा तोला सिंघ भल्ला

संपादक डॉ. मनविंदर सिंघ, प्रकाशक संपादक स्वयं, पोस्ट बाक्स नं. १५, श्री अमृतसर, १९९५

संछेप दस गुर कथा कृत कवि कंकण

संपादक डॉ. गुरमुख सिंघ, रघबीर रचना प्रकाशन, ३६८/३५-बी, चंडीगढ़, १९९१, पृष्ठ ३३.

नोट: डॉ. बलवंत सिंघ (ढिल्लों) द्वारा संपादित "श्री गुर अमरदास अभिनंदन", गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८५ में

**श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९०४१०-४६३७२*

ऐसे अन्य कई कवियों के रचना-पाठ दिए हैं जिनके आधार पर गुरु साहिब के शख्सियत-निर्माण में भारी मदद मिलती है।

श्री गुर पंथ प्रकाश कृत भाई रतन सिंघ भंगू

संपादक डॉ. जीत सिंघ सीतल, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शि: गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर, १९९४, (दूसरी बार) पृष्ठ ६०, (साखी सतिगुर की बंसावली . . .)

तवारीख गुरू खालसा कृत ज्ञानी गिआन सिंघ

(पहला भाग), भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, १९७० (दूसरी बार), पृष्ठ ३१६

श्री गुर पंथ प्रकाश (पंथ प्रकाश) कृत ज्ञानी गिआन सिंघ

(भाग प्रथम), संपादक ज्ञानी किरपाल सिंघ, प्रकाशक मनमोहन सिंघ, गली शहीद बुंगा, श्री अमृतसर, अक्तूबर १९७०, पृष्ठ ५८६

महिमा प्रकाश (गद्य)

महिमा प्रकाश श्री गुरु अमरदेव कृत बिशन सिंघ भल्ला

अन्य सम्बंधित हुए कार्य

* *"गुरू अमरदास स्रोत पुस्तक"*, संपादक डॉ. राय जसबीर सिंघ, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८६
* *"श्री गुरू अमरदास अभिनंदन"*, संपादक डॉ. बलवंत सिंघ (ढिल्लों), गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८५
* *"अमर कवी गुरू अमरदास"*, डॉ. बलबीर सिंघ 'दिल', भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, १९७५ (पी. एच. डी. थीसिस)
* *"तीजी पातिशाही श्री गुरू अमरदास जी"*, डॉ. बलबीर सिंघ 'दिल', श्री गुरू अमरदास फाउंडेशन, फिरोजपुर, १९८७
* *"गुरू अमरदास : जीवन, रचना ते सिक्खिआ"*, डॉ. तारन सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८६
* *"गुरू अमरदास"*, डॉ. दलीप सिंघ 'दीप', पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८०
* *"अमर सरूप गुरू अमरदास जी"*, प्रो. जोगिंदर सिंघ, प्रीत प्रकाशन, नई दिल्ली, दिसंबर १९७९
* *"जीवनी गुरू अमरदास जी ते अनंदु साहिब"*, महिंदर सिंघ पाल, न्यू बुक कंपनी, माई हीरां गेट, जलंधर, १९८०
* *"परबतु मेराणु"*, प्रिं. सतिबीर सिंघ, न्यू बुक कंपनी, माई हीरां गेट, जलंधर, १९७८
* *"गुरू अमरदास : जीवन अते चिंतन"*, (संपादक) कृष्ण लाल शर्मा, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८६
* *"गुरू अमरदास : जीवन ते उपदेश"*, डॉ. हरबंस सिंघ (चावला), पंजाबी राईटर्ज, कोआपरेटिव, नई दिल्ली, १९८२
* *"जीवन कथा श्री गुरू अमरदास जी"*, भाई जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा, इंटरनेशनल सिक्ख एजूकेशन फाउंडेशन, लंदन, मई १९७९

नोट: सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर ने पुनर्प्रकाशन भी किया है।

* *"मनुक्खता दे गुरू"*, (भाग दूसरा), ज्ञानी सोहन सिंघ सीतल, सीतल पुस्तक भंडार, सीतल भवन, माडल ग्राम, लुधियाना, मई १९७१
* *"गुरू अमरदास जी : जीवन ते रचना"*, जसबीर सिंघ (भल्ला), नवीन प्रकाशन, श्री अमृतसर, १९७९
* *स्री गुरू अमरदास जी (जीवनी काव्य रूप)*, मास्टर सेवा सिंघ, नवीन प्रकाशन श्री अमृतसर, २००८
* *"संखेप जीवन ब्रितांत गुरू अमरदास जी"*, शिरोमणि सिक्ख समाज, १००, संत नगर, नई दिल्ली, मई १९७९
* *"Guru Amardas : Life and Teachings"*, (Guru Amardas Quincentenary Memorial

Volume), Dr. Fouja Singh, Sterling Pub. Pvt. Ltd., New Delhi, 1979.

* *"Perspecitves On Guru Amardas",* Editor Dr. Fouja Singh-Dr. Rattan Singh Jaggi, Punjabi University, Patiala, 1982.

* *"Guru Amardas"*, Dr. Harbans Singh, Gurmat Missionary College, Sant Nagar, 100, New Delhi, May 1979.

कुछ विशेषांक

– "पंजाबी दुनीआं" (मासिक), श्री गुरु अमरदास विशेष अंक, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, मई-जून १९७९

– "श्री गुरू अमरदास साहित गोशटी", गोइंदवाल; ६ मई, १९७९

– "गुरू अमरदास जी चित्रावली", लोक संपर्क विभाग, चंडीगढ़, २ मई, १९७९

– "खोज पत्रिका" (छमाही), गुरु अमरदास विशेष अंक, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, अंक-१४, सितंबर १९७९

– "The Punjab : Past and Present", Vol. XIII-II, Serial No. 26, Punjabi University, Patiala, Oct. 1979.



"रामकली की वार" में . . . *(पृष्ठ ६५ का शेष)*

राजाओं के समक्ष की जाने वाली व्यक्तिगत प्रशंसा या अपने हितों की पूर्ति के लिये की जाने वाली प्रशंसा नहीं है, यह तो परमेश्वर के रूप गुरु साहिबान के दैवी गुणों को प्रकट करती है। इसी संदर्भ में भाई सत्ता जी श्री गुरु अमरदास जी की प्रतिभा को चित्रित करते हुए कहते हैं कि खुद अकाल पुरख श्री गुरु अमरदास जी के रूप में जगत में आये हैं :

--अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ (वही)

--किआ सालाही सचे पातिसाह जां तू सुघड़ु सुजाणु ॥ (वही)

लंगर की व्यवस्था : गुरु-काल में ऐतिहासिक दृष्टि से लंगर-प्रथा के बारे में सूचना देने वाला यह सबसे पहला स्रोत है। भाई सत्ता जी कहते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी के समय गुरु के लंगर की व्यवस्था अच्छी थी। लंगर में रोजाना घी, मैदा, चीनी आदि पदार्थों का प्रयोग किया जाता था। इस तथ्य से गुरु जी के आर्थिक तौर पर खुशहाल होने का प्रमाण भी मिलता है :

नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ (वही)

इस प्रकार भाई सत्ता जी-भाई राय बलवंड जी कृत यह वार गुरु-प्रतिभा के अलग-अलग आध्यात्मिक और ऐतिहासिक पक्षों को पेश करती हुई वास्तव में गुरु-स्तुति पर केंद्रित है।



आवश्यक सूचना

पाठकगण अपना चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजते समय मनीआर्डर फार्म पर दिये गए 'संदेश' स्थान पर यह अवश्य लिखा करें कि यह चंदा या राशि 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका की वार्षिक या आजीवन सदस्यता प्राप्त करने हेतु है।

-संपादक

श्री गुरु अमरदास जी से संबंधित ऐतिहासिक स्थान

*-बीबा मनमोहन कौर**

गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु अमरदास जी, बासरके गिल्लां : बासरके श्री अमृतसर जिले का प्रसिद्ध ऐतिहासिक गांव है। यह गांव श्री अमृतसर से (छेहरटा होकर) बीड़ बाबा बुड्ढा जी मार्ग पर स्थित है। रेलवे स्टेशन छेहरटा यहां से ५ किलोमीटर दूर है। गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु अमरदास जी जिला अमृतसर के इसी गांव बासरके गिल्लां में सुशोभित है। इस पवित्र स्थान पर श्री गुरु अमरदास जी का जन्म हुआ था। इस पावन स्थान के अलावा इस गांव में श्री गुरु अंगद देव जी की सपुत्री बीबी अमरो जी और भाई गुरदास जी की यादगारें भी सुशोभित हैं।

गुरुद्वारा संन साहिब, बासरके गिल्लां : गुरुद्वारा संन साहिब गांव बासरके गिल्लां में उस स्थान पर सुशोभित है जहां श्री गुरु अमरदास जी गुरगद्दी मिलने के पश्चात श्री गुरु अंगद जी के सपुत्र बाबा दातू के विरोध के कारण श्री गोइंदवाल साहिब से आकर रहे थे। यहां आकर गुरु साहिब ने एक कमरे में बैठ कमरे को बाहर से बंद करवा दिया और यहां अकाल पुरख की भक्ति में लीन हो गए। आपने अपनी संगत को उस कमरे को न खोलने का आदेश देते हुए कमरे के बाहर लिखवा दिया था कि जो कोई भी इस दरवाजे को खोलेगा उसका वंश नाश हो जाएगा। लेकिन जब संगत गुरु साहिब के दर्शन के लिए बेचैन होने लगी तो बाबा बुड्ढा जी कमरे की पिछली दीवार में सेंध लगा कर हुए अंदर पहुंचे। इस तरह उन्होंने गुरु साहिब के आदेश का पालन भी कर लिया और गुरु साहिब से विनती कर बेचैन संगत को दर्शन देने के लिए भी मना लिया। वो सेंध (संन) गुरुद्वारा संन साहिब जी की इमारत की पिछली दीवार में आज भी संगत को दर्शन देने के लिए मौजूद है।

गुरुद्वारा साहिब, खान छप्पड़ी : खान छप्पड़ी जिला तरनतारन का एक गांव है जो गांव फतेहाबाद से ५ किलोमीटर और रेलवे स्टेशन तरनतारन से १९ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक छोटा-सा गांव है, जिसे श्री गुरु अमरदास जी के अलावा श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की पवित्र चरण-छोह प्राप्त है। गुरु साहिबान की पवित्र आमद की याद में यहां गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

गुरुद्वारा नथाणा साहिब पातशाही तीसरी, जंड मघोली : गुरुद्वारा नथाणा साहिब पातशाही तीसरी पंजाब के पटियाला जिले के गांव जंड मघोली में श्री गुरु अमरदास जी की पवित्र आमद की याद में सुशोभित है। इतिहास के स्रोत बताते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी यहां श्री गुरु अंगद देव जी से मिलने से पहले २२ बार आए थे। महान कोश के अनुसार यहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की याद में भी एक गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

खडूर साहिब : खडूर साहिब जिला तरनतारन की एक तहसील है। यह ब्यास-गोइंदवाल साहिब रेलवे लाईन पर ब्यास से २२ किलोमीटर और गोइंदवाल साहिब से ६ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह अमृतसर से ४३ और तरनतारन से १९ किलोमीटर की दूरी पर है। खडूर

**८३६३, गली नं: २, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर।*

साहिब की पावन धरती पर नौ गुरु साहिबान ने अपने पावन चरण-स्पर्श की बख्शिश की है। इसी स्थान पर ही श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर गुरगद्दी की बख्शिश की थी। इस गांव में श्री गुरु अमरदास जी के अलावा श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु नानक देव जी की ऐतिहासिक यादगारें भी सुशोभित हैं।

गुरुद्वारा दमदमा साहिब : गुरुद्वारा दमदमा साहिब गोइंदवाल साहिब से खडूर साहिब को जाते मार्ग पर तीन किलोमीटर दूर है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार यह वही स्थान है जहां श्री गुरु अमरदास जी ब्यास दरिया से खडूर साहिब तक श्री गुरु अंगद जी के स्नान के लिए हर सुबह जल की गागर लाते समय रास्ते में आराम के लिए कुछ समय के लिए ठहरते थे।

किल्ला साहिब : ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, अंगीठा साहिब में वह किल्ला आज भी मौजूद है, जिससे जल की गागर लाते समय ठोकर खाकर श्री गुरु अमरदास जी गिरे थे।

गुरुद्वारा थड़ा साहिब, खडूर साहिब : गुरुद्वारा थड़ा साहिब, खडूर साहिब में उस स्थान पर सुशोभित है जहां श्री गुरु अरमदास जी को ७२ साल की आयु में श्री गुरु अंगद देव जी ने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर गुरगद्दी की बख्शिश की थी।

गोइंदवाल साहिब : गोइंदवाल नगर, श्री गुरु अमरदास साहिब ने गोइंदा नाम के सिक्ख की ज़मीन पर बसाया था। आजकल यह नगर जिला तरनतारन की तहसील खडूर साहिब में तरनतारन से ४० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गोइंदवाल साहिब में रेलवे स्टेशन भी है। इस नगर में श्री गुरु अमरदास जी के अलावा श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी और श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने भी अपने मुबारक चरण रखे हैं। गोइंदवाल साहिब में श्री गुरु अमरदास जी के ज्योति-जोत दिवस पर हर वर्ष जोड़-मेला लगता है। यहां श्री गुरु अमरदास जी से सम्बंधित निम्नलिखित गुरुद्वारा साहिबान सुशोभित हैं:

गुरुद्वारा चुबारा साहिब : गुरुद्वारा चुबारा साहिब गोइंदवाल साहिब में उस स्थान पर सुशोभित है जहां श्री गुरु अमरदास जी अपने परिवार समेत रहते थे। इसको हवेली साहिब भी कहा जाता है। यहां चांदी के दरवाजों वाले एक कमरे में चांदी की पालकी में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होता है। इसी नगर में श्री गुरु रामदास जी का गुरगद्दी-स्थान, पांचवें पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का प्रकाश-स्थान, बीबी भानी जी का चूल्हा, श्री गुरु रामदास जी के ज्योति-जोत समाने का स्थान और भाई गुरदास जी से संबंधित स्थान आदि यादगारें भी स्थापित हैं।

गुरुद्वारा श्री बाउली साहिब : १५५२ ई में गुरगद्दी मिलने के पश्चात श्री गुरु अमरदास जी खडूर साहिब से आकर गोइंदवाल साहिब रहने लगे। उस समय दिल्ली से लाहौर तथा अफगानिस्तान जाने के लिए लोग दरिया ब्यास से गोइंदवाल का पत्तन (घाट, बंदरगाह) पार कर ही जाया जाता था और यहां से गुजरने वाले लोगों के लिए साफ पानी की बड़ी कठिनाई थी। पानी की समस्या को दूर करने के लिए आप जी ने लगभग छ: साल की मेहनत के पश्चात उपरोक्त बाउली की खुदवाई करवाई। इस बाउली की ८४ सीढ़ियां हैं। इस गुर-स्थान की सेवा पहले मिसलों के सरदार और फिर बाद में महाराजा रणजीत सिंघ ने करवाई थी। यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रकाश के लिए चार-मंजिला शानदार इमारत १९३८-४४ में बनवाई गई। गोइंदवाल साहिब का यह मुख्य व बड़ा गुरुद्वारा है। यात्रियों की सुविधा के लिए साफ-

सुथरे कमरे और लंगर का प्रबंध है। बहुत सारे मुगल बादशाह, रियासत नाभा और रियासत कपूरथला के अलावा आस-पास के गांव की तरफ से इस बाउली के नाम बहुत सारी जमीन लगवाई है।

थड़ा साहिब : थड़ा साहिब वो पावन स्थान है जहां पर बैठ कर श्री गुरु अमरदास जी बाउली की खुदाई की निगरानी किया करते थे।

किल्ली साहिब : गुरुद्वारा चुबारा साहिब के बाहर एक दीवार पर श्री गुरु अमरदास जी की यादगार लकड़ी की वह किल्ली (खूंटी) आज भी दिखाई पड़ती है जिसकी गवाही ऐतिहासिक स्रोत देते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी इस किल्ली को पकड़े खड़े होकर एक अकाल पुरख की स्तुति में लीन भक्ति किया करते थे। इस पर अब चांदी लगा दी गई है।

ज्योति-जोत स्थान श्री गुरु अमरदास जी (कोठड़ी साहिब) : गोइंदवाल साहिब में ही श्री गुरु रामदास जी के गुरगद्दी पर विराजमान होने के स्थान के पास ही छोटा-सा संगमरमर का वह स्थान सुशोभित है जहां श्री गुरु अमरदास जी ज्योति-जोत समाए थे। इसी स्थान पर ही करीब सात साल बाद चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी भी ज्योति-जोत समाए थे। इस स्थान को कोठड़ी साहिब भी कहा जाता है।

हरिद्वार : हरिद्वार उत्तराखंड राज्य का प्रसिद्ध नगर है। यह शहर हिंदू मत की सात पुरियों में गिना जाता है। इसका क्षेत्र हरि की पउड़ी से लेकर कनखल तक है। यह हिंदू मत का प्रसिद्ध तीर्थ है।

गुरुद्वारा साहिब सती घाट, कनखल : हरिद्वार के एक गांव कनखल में श्री गुरु अमरदास जी की याद में गुरुद्वारा साहिब सती घाट सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि इस स्थान को श्री गुरु अमरदास जी के अलावा श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पवित्र चरणों का स्पर्श भी प्राप्त है।

कुरुक्षेत्र : थानेसर, कुरुक्षेत्र का एक प्रसिद्ध नगर है जो प्राचीन समय से ही हिंदू मत का एक मुख्य केंद्र रहा है। इस नगर को श्री गुरु अमरदास जी के अलावा श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी, श्री गुरु हरिराय साहिब जी, श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पवित्र चरण-छोह प्राप्त है। गुरु साहिबान की पवित्र आमद की याद में इस नगर में अनेक ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान सुशोभित हैं:

गुरुद्वारा साहिब पातशाही तीसरी व सातवीं थानेसर : गुरुद्वारा साहिब पातशाही तीसरी व सातवीं थानेसर में गुरुद्वारा मोहल्ला गकरोबा में स्थित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी ने इस स्थान पर १५५३ ई में सूर्य-ग्रहण के समय आकर श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का प्रचार किया था।

गुरुद्वारा साहिब ज्योतिसर : गुरुद्वारा साहिब ज्योतिसर कुरुक्षेत्र से ८-१० किलोमीटर दूर स्थित है। यहां एक पुराना तालाब भी है जिसके नाम पर गुरुद्वारा साहिब का नाम पड़ा। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी ने इस स्थान पर अपने मुबारक चरण डाले थे।

गुरुद्वारा मंजी साहिब, पिहोवा : गुरुद्वारा मंजी साहिब हरियाणा के जिला कुरुक्षेत्र में सरस्वती नदी के किनारे स्थित प्राचीन नगर पिहोवा में गुरुद्वारा बाउली साहिब के नजदीक श्री गुरु अमरदास जी की पवित्र आमद की याद में सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार इस स्थान को श्री गुरु अमरदास जी के अलावा श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी, श्री गुरु हरिराय साहिब जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मुबारक चरण-छोह प्राप्त है।

पाकिस्तान : पाकिस्तान १९४७ ई: से पहले भारत

का ही एक हिस्सा था। भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के पश्चात हमारे बहुत सारे ऐतिहासिक स्थान पाकिस्तान में छूट गए, जिनमें से श्री गुरु अमरदास जी से संबंधित स्थान इस प्रकार हैं :

गुरुद्वारा सच्ची मंजी पातशाही पहिली (हफ्तमदर) : पाकिस्तान के जिला शेखूपुरा और तहसील ननकाणा साहिब में गांव हफ्तमदर आता है जो भाई फेरू खुंडा मार्ग पर जातरी से आगे है। मुख्य मार्ग से कोई पांच किलोमीटर लम्बा छोटा-सा मार्ग गांव तक जाता है। इस गुरुद्वारा साहिब को गुरुद्वारा सच्ची मंजी पहिली पातशाही भी कहा जाता है। यहां श्री गुरु नानक देव जी का एक यादगारी पलंघ गिल्ल जिमींदार के पास था। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी एक प्रचार-यात्रा के दौरान यहां आकर अपने एक सिक्ख को एक छड़ी की बख्शिश की थी। श्री गुरु अमरदास जी के एक पैर का जोड़ा यहां और दूसरा गांव धुनी (जिला हाफिजाबाद) में बताया जाता है। अब गुरुद्वारा साहिब की इमारत नष्ट हो चुकी है।

गुरुद्वारा साहिब श्री गुरु अमरदास जी, धुनी: पाकिस्तान के जिला हाफिजाबाद के गांव धुनी में श्री गुरु अमरदास जी की आमद की याद में यह गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। इस गुरुद्वारे में गुरु साहिब के एक पांव का जोड़ा, जो ११ इंच लम्बा और ३.५ इंच चौड़ा था, भाई चैना मल्ल (धीरोमल), जो गुरु साहिब का प्रेमी सिक्ख था, के पास बताया जाता है। गुरु साहिब ने उसकी सेवा से प्रसन्न होकर उसको अपना जोड़ा बख्शा था, जिसका एक पैर इस गांव और दूसरा हफ्तमदर गांव जिला शेखूपुरा में बताया जाता है। लोगों का विश्वास है कि हजीरा के रोगी इन स्थानों पर जाकर जोड़े की छोह से आरोग्य होते थे। इस स्थान पर अब अंबाला से आए हुए शरणार्थी लोग रहते हैं।

गुरुद्वारा झाड़ी साहिब, तरगे कसूर : गुरुद्वारा झाड़ी साहिब श्री गुरु अमरदास जी की पवित्र आमद की याद में पाकिस्तान के कसूर के गांव कादीविंड से अगले गांव तरगे में सुशोभित है। यह गुरुद्वारा साहिब तरगे गांव का एक थेह (टीला) है जो कादीविंड से पूर्व की तरफ एक किलोमीटर की दूरी पर है। ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि जब श्री गुरु अमरदास जी कसूर की तरफ जा रहे थे तब यहां के लोगों की प्रेम भरी विनती मान कर गुरु साहिब कुछ समय के लिए यहां ठहरे थे। गुरुद्वारा साहिब के नाम ढाई घुमां जमीन भाई सुलक्खण सिंघ, निवासी कादीविंड और ढाई घुमां जमीन गांव निवासियों की तरफ से लगाई गई है।

गुरुद्वारा भाई बहिलोल जी, कादीविंड : गुरुद्वारा भाई बहिलोल जी पाकिस्तान के कसूर के एक गांव कादीविंड के बाहर श्री गुरु अमरदास जी की पवित्र आमद की याद में सुशोभित है। कहा जाता है कि श्री गुरु अमरदास जी के एक ठहराव के दौरान दीवानचंद दिल्ली वाले ने उनके पास आकर विनती की कि आप मेरी कोई यादगार बनवा दें ताकि मेरे मरने के पश्चात भी मेरा नाम चलता रहे। उसकी इस इच्छा के अनुसार ही भाई बहिलोल की १०० एकड़ जमीन पर गुरु साहिब ने एक तालाब और कुछ पक्के निवास स्थान बनवा दिए। इसी जमीन पर यहां के निवासियों ने भाई बहिलोल की मृत्यु के पश्चात उसकी यादगार भी बना दी। जनाब इकबाल केसर के अनुसार आजकल गुरुद्वारा साहिब के कमरों में सरकारी स्कूल चल रहा है और जमीन वक्फ बोर्ड आफ पाकिस्तान के कब्जे में है। गुरुद्वारा साहिब की हालत बहुत ही नाजुक है। ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि पंजाब के प्रसिद्ध ढाढी, उपन्यासकार और इतिहासकार ज्ञानी सोहन सिंघ सीतल भी इसी गांव के निवासी थे और यहां अभी भी उनका बाग और घर मौजूद है।



जात-पात का खंडन करने वाले भक्त रविदास जी

*-डॉ. दादूराम शर्मा**

आदि काल से ही धर्म भारतीय समाज का मेरुदंड रहा है। वह सत् शिक्षा और संस्कार देकर मनुष्य को यथार्थ में मनुष्य बनाता है, उसकी दृष्टि व दृष्टिकोण को विस्तार देता है, व्यवहार को संयत और मर्यादित करता है एवं आचरण को उदात्त बनाता है, उसे 'स्व' की मैं-मेरा, तू-तेरा की कार से मुक्त करता है तथा औरों के लिए कुछ सोचने, कुछ करने और जीने की प्रेरणा देता है। मध्य काल में कर्मों पर आधारित हिंदुओं की वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में बदल गई। "जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते" (प्रत्येक व्यक्ति जन्म से शूद्र ही पैदा होता है, फिर संस्कार और सदाचार उसे द्विज बनाते हैं) की मान्यता समाप्त हो गई और संस्कार-विहीन दुराचारी व्यक्ति भी ऊंची जाति में पैदा होने के कारण श्रेष्ठ, सम्माननीय और पूज्य माना जाने लगा तो सदाचारी, गुणी तथा परोपकार-परायण मानव भी नीची जाति में पैदा होने के कारण ही हेय और तिरस्कार का पात्र बन गया और सबसे बढ़कर हैरानी की बात यह है कि जीव मात्र में अभेद या समदृष्टि रखने वाला तथा सब में 'ब्रह्म' का दर्शन करने वाला ज्ञानी समाज अपने ही समाज के श्रम-जीवी, समाज की भौतिक उन्नति और समृद्धि के आधार अत्यंज (दलित या शूद्र वर्ग) को 'अछूत' मानकर उससे घृणा करने लगा और अपने ही गतिशील पैरों पर कुल्हाड़ी मारकर अपाहिज होने लगा। धर्म वाह्याचरों, कर्मकांडों और मिथ्या रूढ़ियों में सिमट गया, अनेक सम्प्रदायों में बंट गया और उनके अनुयायी आपस में टकराकर समाज को शक्तिहीन करने लगे तथा दूसरी ओर विजेता के दर्व से उन्मत्त और धर्मोन्माद में अन्धे शासक समुदाय उस पर तरह-तरह के जुल्म ढाने लगे। तब पथ-भ्रष्ट हिंदुओं को सही रास्ते पर लाने और शासकों के अत्याचारों पर रोक लगाने के लिए भक्ति का सशक्त एवं देशव्यापी आंदोलन उठ खड़ा हुआ।

भारत में जितनी भी क्रांतियां हुईं सभी के पीछे धर्म रहा है। धर्म के आलोक में ही हमारे महापुरुषों ने, हमारे लोकनायकों ने हमारे समाज को सत्य-पथ पर प्रेरित किया है। मध्य युग में चौदहवीं सदी से लेकर सोलहवीं सदी तक धर्म की, ज्ञान और भक्ति की पावन धारा प्रवाहित हुई जिसमें समग्र भारतीय समाज अपने समस्त पात-ताप धोता रहा। हमारे धार्मिक नेता 'संत' और 'भक्त' कहलाए। उनके पावन उपदेशामृत को पीकर और उनके सदाचरणों का अनुसरण करके मनुष्य यथार्थ में मनुष्य बने और समाज ने जरा-मरण के भय से मुक्ति पाई। भक्त कबीर जी ने "ऊंचे कुल का जनमिया, जो करनी ऊंचन होइ--सुबरन कलस सुरै भर्‌या, साधू निंद्‌या सोइ" कहकर तो भक्त रविदास जी ने "रविदास सुकरम करन तैं नीच ऊंच ह्वै जाय--करइ कुकरम जो ऊंच भी महानीच कलहाय" कहकर व्यक्ति की श्रेष्ठता और सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार सत्कर्मों को माना है और जातिवाद की व्यर्थता सिद्ध करते हुए "हरि भक्ति" को वरेण्य निरूपित किया है।

भक्त रविदास जी का जन्म तथाकथित

*प्राध्यापक, महाराज बाग, भैरोगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१, फोन ०७६९२-२२२७९२

दलित जाति में हुआ था। उन्होंने इस बात का कभी अफसोस नहीं किया अपितु डंके की चोट पर विनम्रतापूर्वक सात्त्विक गर्व के साथ अपनी जाति का स्मरण किया है:

--काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥
ऊहां गनी बसहि मामूर ॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥ (पन्ना ३४५)

--मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी
ओछा जनमु हमारा ॥
तुम सरनागति राजा राम चंद
कहि रविदास चमारा ॥ (पन्ना ६५९)

--जाती ओछा पाती ओछा
ओछा जनमु हमारा ॥
राजा राम की सेव न कीन्ही
कहि रविदास चमारा ॥ (पन्ना ४८६)

"कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥ बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥" कहकर अपनी नीच जाति पर बलिहारी जाने वाले भक्त कबीर जी की तरह उन्हें भी अपनी जाति इसलिए प्रिय है क्योंकि इसी जाति में जन्म लेकर तो उन्होंने भगवद कृपा, परम प्रियतम प्रभु का सानिध्य और संतों का संग पाया है।

भक्त रविदास जी दूबा से भी विनम्र, वृक्ष के जैसे सहिष्णु (सहनशील, सर्दी-गर्मी, आंधी, आघातों को सहने वाले), क्षमाशील (पत्थर मारने वाले को भी फल देने वाले), स्वयं अमानी (सम्मान न चाहने वाले या मान-अपमान की परवाह न करने वाले), किन्तु सभी को सम्मान देने वाले (सबहिं मानप्रद आपु अमानी) परम संत हैं।

श्रमशील स्वावलम्बी गृहस्थ संत

हमारे ये संत अपने-अपने जातीय व्यवसाय में संलग्न रहकर जीविकोपार्जन करते थे। भक्त कबीर जी जुलाहे थे, कपड़ा बुनते थे। भक्त नामदेव जी दर्जी थे, कपड़े सीते थे। भक्त सैण जी नाई थे, नाई का व्यवसाय करके रोटी कमाते थे। भक्त रविदास जी जूते बनाकर अपने परिवार का पेट पालते थे। वे आत्मनिर्भर थे। गृहत्यागी, सन्यासी नहीं, गृहस्थी संत थे। भक्ति की भागीरथी में सपरिवार सतत् अवगाहन करते थे तथा औरों को भी डुबकी लगवाते थे। ये अपना काम पूरी लगन और परिश्रम से समय पर पूरा करते तथा समय की पाबंदी, मधुर व्यवहार और भगवद्चर्चा से ग्राहकों का मन मोह लेते थे। वे 'कर्म ही उपासना है' का ज्वलंत उदाहरण थे।

हाथों को सतत् कर्मरत रखना, संतों और दीन-दुखियों की सेवा करना, मुख से हरि-नाम का उच्चारण करना और कानों से प्रभु-नाम संकीर्तन सुनना तथा सतसंग करना यही थी उनकी दिनचर्या।

जात-पात, छुआछूत और ऊंच-नीच की भावना का खंडन :

तत्त्वदर्शी ब्रह्मज्ञानी तथा समदर्शी होता है। वह ब्राह्मण और चांडाल में, गाय, हाथी और कुत्ते में कोई भेद नहीं करता। कालांतर में यह अभेद-दृष्टि विलुप्त हो गई और भारतीय समाज सर्वत्र अछूत भेद करने लगा। वर्ण-व्यवस्था आगे चलकर जन्म पर आधृत जाति-व्यवस्था में बदल गई। इस महा रोग से ग्रस्त हमारे भारतीय समाज की नब्ज सबसे पहले भक्त रविदास जी ने टटोली। यह जातिवाद का जंजाल हमारे भ्रातृभाव में, मेल-जोल में, संगठन में सबसे बड़ी बाधा है, हमें तोड़ रहा है, एक नहीं होने दे रहा है।

भक्त रविदास जी बड़ी सौम्यता और

(शेष पृष्ठ १०९ पर)

जपि मन मेरे तू एको नामु

*-डॉ. मधु बाला**

सिक्ख मत के तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने गुरमति के प्रचार के लिए आपने सम्पूर्ण भारत में बाईस अलग-अलग स्थानों पर प्रचार-केन्द्र स्थापित किए। इन केन्द्रों को बाईस "मंजियां" कहा जाता है। यह गुरु जी की विलक्षणता थी कि उन्होंने ७२ वर्ष की आयु में बाणी-रचना आरंभ की और ९० वर्ष की उम्र में "अनंदु साहिब" जैसी महान बाणी अपनी भावी पीढ़ी को प्रदान की। आपने बहुत सारी बाणी की रचना की है। यह बाणी सिरीराग, माझ, गउड़ी, आसा, गूजरी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठि, धनासरी, सूही, बिलावल, रामकली, मारू, भैरउ, बसंत, सारंग, मलार और प्रभाती रागों में दर्ज है। इन रागों में बहत्तर पदे, इक्यानवे अष्टपदियां, बीस छंद, चार सौ नौ श्लोक और चार वारों में पिचासी पउड़ियां दर्ज हैं। इसके अतिरिक्त 'पट्टी' (१८ पउड़ियां), 'वार सत' (१० पउड़ियां), 'अनंदु' (४० पउड़ियां), 'सोलहे' (२४ पउड़ियां) और 'अलाहुणीआं' विशेष बाणियां दर्ज हैं।

आकार की दृष्टि से श्री गुरु अमरदास जी की बाणी तीसरे स्थान पर है। तत्कालीन प्रचलित सरल भाषा में वर्णित अनेक विषयों को सरलतापूर्वक प्रस्तुत करती हुई जनमानस में प्रभु के प्रकाश को फैलाने वाली है। "राग गूजरी महला ३ घरु २" में "हरि" का वर्णन किया है। "हरि" शब्द में सम्पूर्ण सृष्टि का सार है। "हरि" के अतिरिक्त कुछ भी शाश्वत नहीं है। "हरि" की सत्ता चौदह भुवनों में व्याप्त है। "हरि" कण-कण में है। "हरि" प्रत्येक जीव में है। "हरि" प्राण रूप है। "हरि" की महिमा का गायन असंभव है क्योंकि वह असीमित है, अनंत है, अकथनीय है, अवर्णनीय है। "हरि" का वास श्वास-श्वास में है, रोम-रोम में है। "हरि" ही सब कुछ है, "हरि" ही सर्वत्र है।

परमात्मा के प्रति पूर्णतः समर्पित "राग गूजरी महला ३ घरु २" का यह पद अत्यंत महत्वपूर्ण है और चिंतन एवं मनन के योग्य है:

हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी ॥
हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥१॥
हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥
गुर प्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ ॥१॥रहाउ॥
हरि मेरा सिम्रिति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ॥
हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु त्रिपतै हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ॥२॥
हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई ॥
हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई ॥३॥
सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई ॥
कहै नानकु हरि का भाणा होआ कहणा कछू न जाई ॥४॥ *(पन्ना ४९०)*

राग वडहंस, "वडहंस महला ३ घरु १" में उनकी बाणी की एक पंक्ति है--*"जपि मन मेरे तू एको नामु"*। इस पंक्ति के अनुसार उन्होंने

**आई-१०९, गली नं. ५, मजीठिया इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, फोन : ०१७५-३२००९४६*

मानव मन को प्रेरणा दी है कि "हे मन! तू एक ही 'नाम' का जाप कर क्योंकि उस 'नाम' में सब कुछ समाया हुआ है। उस 'नाम' से ही सब निर्मित पदार्थों का स्मरण कर। सब वस्तुओं का जन्म-दाता, कर्ता वही 'नाम' है। वह एक ही 'नाम' सब में है तथा सब उसी 'नाम' के अधीन कार्य करते हैं। वह नाम है 'हरि'।" उपर्युक्त पद के अनुसार हरि की सेवा ही सार्थक फल देने वाली है। अन्य सभी सेवा व्यर्थ है। एक हरि की सेवा से ही हम मनचाहे अनेक फल प्राप्त कर सकते हैं। दूजे अर्थात् भौतिक संसार में व्याप्त पदार्थों, जीवों, वस्तुओं का सेवन, सेवा, चाकरी, हजूरी सब व्यर्थ है क्योंकि ये सब पदार्थ नाशवान हैं। हमें नित्य विद्यमान रहने वाले 'हरि' की सेवा में तत्पर रहना चाहिए। 'हरि' ही मेरी प्रीति है, जीवन की रीति है और कथा-कहानी भी 'हरि' ही है। मन की केवल यही कामना होनी चाहिए कि मेरा मन सदा गुरु की कृपा से, गुरु के प्रसाद से भीगा रहे। यदि मनुष्य के मन में 'हरि' के प्रति प्रेम हो तो उसे अन्य स्मृतियों, शास्त्रों की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जिसने 'हरि' के आनंद-रस को प्राप्त कर लिया हो, 'हरि' के रूप-दर्शन का साक्षात्कार कर लिया हो उसे अन्य सभी ज्ञान स्वत: प्राप्त हो जाते हैं। 'हरि' ही सच्चा बंधु है क्योंकि जब सभी सहारे छूट जाते हैं अथवा बंधु छोड़ जाते हैं तब केवल परमात्मा ही जीवन रूपी नौका को पार लगाने वाला होता है, परंतु भाई-बंधु, सगे-सम्बंधी सभी कुछ, यदि परमात्मा को मन से ही स्वीकार कर लिया जाए तो सांसारिक सम्बंधों की कटुता मन को दुखी नहीं करती। मुझे भूख भी लगे तो केवल 'हरि-नाम' की और मन की तृप्ति भी हो तो हरि-नाम का श्रवण करके। केवल प्रभु का संग ही ऐसा है जो अंत तक मनुष्य का सहायी बनता है। दूसरे सभी रिश्ते, धन, सम्पत्ति कुछ भी मनुष्य के अंतिम समय में साथ नहीं जाता। केवल 'हरि' का नाम ही ऐसी सम्पत्ति है जो मनुष्य के साथ इस लोक में भी है और परलोक में भी। 'हरि' रूप धन ऐसा है जो जीव के साथ-साथ ही चलता है। मनुष्य का अगला जन्म किसी भी योनि में हो परंतु परमात्मा की कृपा उस पर सदैव बनी रहती है। जो असत्य पदार्थों का सेवन करता है, झूठे कर्म करता है, झूठी सम्पत्ति अर्थात् निरर्थक-धन का संशय करता है वही व्यक्ति झूठा है। इतना सब होने पर भी वे कुछ कहने में असमर्थ हैं क्योंकि होता वही है जो 'हरि' का 'भाणा' 'हरि' की इच्छानुसार होना है।

'हरि' के प्रति मन का चिंतन, स्मरण और मनन के विषय में अनेक प्रकार से विचारों को अभिव्यक्त करने के बाद भी 'हरि-इच्छा' का विशेष स्थान है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य गुण-अवगुण जानता है, विवेक-अविवेक का ज्ञान रखता है, तथापि भूल करता है, गलतियां करता है, परन्तु कुछ मनुष्य जो विचारवान हैं पश्चाताप करके उनका प्रायश्चित कर लेते हैं तथा कुछ समझते हुए भी नहीं समझ पाते तो इसमें भी उनका कोई दोष नहीं है। उनके पूर्व कर्मों का फल है। जब तक वह बुरा-समय समाप्त नहीं होता उनका कल्याण नहीं हो सकता। सबसे बड़ी विडंबना भी तो यही है कि किसी मनुष्य को यह नहीं मालूम कि उसका 'अच्छा समय' कब आने वाला है अथवा बुरा समय कब समाप्त होने वाला है? जीवन की अवधि कितनी है? किससे सम्बंध जुड़ने वाला है अथवा वर्षों से चले आ रहे सम्बंधों की आयु समाप्त होने वाली है। भविष्य रूपी अंधकार में सबके पास देखने योग्य दिव्य-चक्षु नहीं हैं। अत: मनुष्य के वश में एक ही बात है कि जब तक जीवन है तब तक सुख में, दुख में किसी भी स्थिति में केवल 'हरि' का ही 'नाम' जपे।

बिनु गुर रोगु न तुटई . . .

*-डॉ. देवेंद्रपाल कौर**

शरीर को बलवान बनाने के लिए शारीरिक साधना है, मन को बलवान बनाने के लिए मानसिक उपाय है तथा आत्मा को ऊंचा उठाने के लिए आध्यात्मिक नियम है। श्री गुरु अमरदास जी ज्ञान रूपी प्रकाश के पुंज थे एवं मानव के कल्याण-कार्य में सदा रत रहते थे। अपनी अद्वितीय सेवा-साधना के कारण वे सिक्ख धर्म के तृतीय गुरु बने। जे. डी. कनिंघम के शब्दों में- "गुरु अमरदास साहिब ने उदासियों को निष्काम और वैरागी सम्प्रदा को क्रियाशील तथा गृहस्थी सिक्खों से भिन्न कर दिया और इस प्रकार बाल सिक्ख-सम्प्रदा को आलोप हो जाने से बचा लिया।" इसके अतिरिक्त डॉ. इंदु भूषण बैनर्जी के अनुसार- "गुरु अमरदास जी के गुरु-काल को सिक्ख धर्म के इतिहास में कई प्रकार से एक महत्वपूर्ण मोड़ लाने वाला काल समझा जा सकता है।" हिंदू धर्म-शास्त्रों के अनुसार मोक्ष-प्राप्ति के तीन साधन हैं- "कर्म-मार्ग, ज्ञान-मार्ग एवं भक्ति-मार्ग।" भक्त रविदास जी की भक्ति की तीन विशेषताएं हैं- "प्रेम, प्रार्थना और रहमत।" सिक्ख साधना मार्ग में "हुकमि रजाई चलणा" का विशेष महत्व है। वस्तुत: यह भावना गुरुदेव जी ने अपनी बाणी 'जपु जी' में व्यक्त की है। वस्तुत: हुक्म, रजा व भाणा इन तीनों का सम्बंध उस परम सत्ता से है। श्री गुरु अमरदास जी ने 'हुक्म' शब्द के साथ 'भाणा' शब्द का खुलकर प्रयोग किया है। इसी संदर्भ में श्री गुरु अमरदास जी ने 'रजा' शब्द का प्रयोग भी किया है। उनका तो विचार था कि नाम-सिमरन उसी व्यक्ति द्वारा संभव है जिस पर परमात्मा अपनी इच्छा से कृपा-दृष्टि करता है।

नाम-साधना के साथ-साथ सतसंगति से ही साधक को निरंतर भक्ति की प्रेरणा मिलती है। श्री गुरु अमरदास जी लिखते हैं :

सतसंगति महि नामु हरि उपजै
जा सतिगुरु मिलै सुभाए ॥ (पन्ना ६७)

लेकिन नाम-स्मरण के लिए गुरु साहिब सतिगुरु को विशेष महत्व देते हैं। जब तक सतिगुरु नहीं मिलता तब तक मानव की भक्ति-साधना अपूर्ण रहती है। संतों की संगत से नाम-साधना की प्रेरणा मिलती है :

पूरे गुर ते सतसंगति ऊपजै
सहजे सचि सुभाइ ॥ (पन्ना ४२७)

परमात्मा के नाम में रमने पर अर्थात् नाम-स्मरण करने पर ही हमारा मन निर्मल हो सकता है :

साचा मरै न आवै जाइ ॥
नानक गुरमुखि रहै समाइ ॥ (पन्ना २२९)

गुरमुख अर्थात् गुरु के सन्मुख रहने वाला साधक परमात्मा में रमण करता है, उसमें लीन हो जाता है। वह न तो मरता है और न ही आवागमन के चक्कर लगाता है।

गुरु जी ने समस्त जगत को परम सत्ता का खेल-मात्र माना है। उन्होंने ईश्वर को अकथनीय, निराकार, अगोचर, अलक्ष्य, अगम आदि विशेषणों से संबोधित किया है :

तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥
तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ ॥
(पन्ना ५८५)

गुरु की कृपा से हरि के स्वरूप का बोध होता है अर्थात् 'प्रभु सर्वत्र विद्यमान हैं' का ज्ञान

**१०५-सी, प्रोफेसर कॉलोनी, सामने पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००१, फोन : ९४६३६१८९११*

होता है।

श्री गुरु अमरदास जी का गुरमति रहस्यवाद मनुष्य की आत्मा को सर्वगुण-सम्पन्न मानता है और मनुष्य के शरीर को अनमोल और असंख्य वस्तुओं से भरपूर देखता है। इनका प्रत्यक्ष दर्शन और प्राप्ति गुरु की सहायता से ही हो सकती है। गुरु जी ने बाणी द्वारा मानव को अपना आध्यात्मिक भविष्य उज्जवल करने की प्रेरणा प्रदान की।

आपके वृद्ध शरीर में एक ज्योति प्रज्वलित थी जो आपको आनंद में विभोर करके रखती थी। आप बुढ़ापे में निरंतर आनंद को अनुभव करके कहते :

ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥ (पन्ना १४१८)

आध्यात्मिक क्षेत्र में गुरु का विशेष महत्व रहता है :

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ (पन्ना ९१७)

उस सतिगुरु को प्राप्त करके मुझे अथाह आनंद की प्राप्ति हुई है। गुरु से ज्ञान प्राप्त करके ही साधक प्रभु की भक्ति कर सकता है। भक्ति के द्वारा ही सेवा की भावना पैदा होती है। सेवा की भावना पैदा होने से ही मानव का अहंकार नष्ट होता है। अहंकार के कारण हम अपने लिए जीते हैं लेकिन सेवा-भावना से व्यक्ति स्वार्थ को छोड़कर परोपकार की ओर अग्रसर होता है।

बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइ ॥ (पन्ना ३६)

श्री गुरु अमरदास जी एक उच्च कोटि के समाज-सुधारक थे। उनका उद्देश्य वास्तव में सिक्खों का बेअर्थ और उलझन भरे रीति-रिवाजों से छुटकारा करवाना, पुजारी श्रेणी के शोषण से उनकी रक्षा करना, आपसी प्रेम-भाव बढ़ाना और संगत को परमेश्वर तथा गुरु के प्रति अपने कर्त्तव्य की याद दिलाना था। उन्होंने जात-पात, भेद-भाव, नशों तथा सती-प्रथा की निंदा व पर्दा-प्रथा की मनाही की। गुरु जी ने गोइंदवाल साहिब में बाउली स्थापित करके नए तीर्थ-स्थान की स्थापना की, 'अनंदु साहिब' नामक बाणी मन को आनंद देने के लिए रची।

सेवा करना बड़ा कठिन कार्य है। जो व्यक्ति प्रभु-सेवा, गुरु-सेवा करता है उसे मनवांछित फल मिलता है अर्थात् सच्ची भक्ति वही है जिसमें प्रभु-सेवा के साथ-साथ गुरु-सेवा भी हो। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि भूखे को अन्न, निर्वस्त्र को वस्त्र देना, हजारों हवनों और यज्ञों से भी उत्तम है। 

जात-पात का खंडन करने वाले भक्त रविदास जी *(पृष्ठ १०५ का शेष)*

सहजता से जात-पात का खंडन करते हैं। उनका विचार है कि यदि सभी में प्रभु मौजूद हैं तो फिर ऊंच-नीच का भेद कैसा?

इस प्रकार उन्होंने अपने सदुपदेशों की महा औषधि से उच्च वर्ग के मिथ्याभिमान, थोथे दम्भ और पाखंड के महारोग की चिकित्सा करके उन्हें निरभिमान, निरहंकार और विनम्र बनाया तो दलितों के हीनभाव का उपचार करके उनमें आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान का भाव जगाया और उन्हें सम्मानपूर्वक जीने की शक्ति तथा प्रेरणा देकर समाज में सद्भाव, एकता और भ्रातृभाव स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया। परमात्मा की तलाश और परलोक सुधारने के नाम पर घर-गृहस्थी त्याग कर अपने सांसारिक उत्तरदायित्वों से पल्ला झाड़ने वाले पलायनवादी बाबाओं को उन्होंने युक्ति-युक्त होने की सीख दी है। 

धर्म की उत्कृष्टता

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

बाबा बंदा सिंघ बहादुर जब अपनी विजय-पताका फहराते हुए सरहिंद पहुंचे तो सैनिक आवेश में आकर बोले, "यही वो स्थान है जहां छोटे साहिबजादों को जीते-जी दीवार में चिनवाया गया था। हमें इस शहर को आग लगा देनी चाहिए।"

यह आक्रोश देखकर बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सैनिकों को शांत करते हुए जो मार्मिक, गहरे और अत्यंत सहृदयतापूर्ण वचन कहे, वे इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं और हर देश-काल के लिए प्रासंगिक हैं। बाबा जी ने कहा, "भाइयो, मैं तुम्हारी मन:स्थिति समझता हूं लेकिन इस शहर के लोगों ने हमारा क्या बिगाड़ा है? निरपराध को सताना तो स्वयं अधर्म है। अगर हमारे साथ अधर्म हुआ तो इसका अर्थ यह नहीं कि हम दूसरों के साथ अधर्मपूर्ण आचरण करने लगें। हमारी लड़ाई के पीछे प्रतिशोध की भावना नहीं बल्कि अन्याय और अत्याचार को मिटाने की भावना होनी चाहिए।"

वास्तव में उक्त गुरसिक्ख-वाक्यों में आदर्श और न्याय की इतनी सुंदर स्थापना हुई है कि हृदय श्रद्धापूरित हो जाता है। इन वचनों से यह भी सिद्ध होता है कि जो युद्ध अन्याय और अत्याचार के खिलाफ लड़ा जाता है उसमें होने वाली हिंसा तभी तक सात्विक है जब तक वह बेकसूरों को नुकसान नहीं पहुंचाती। जिस युद्ध, से निरपराधों की हानि होने लगती है वह युद्ध अधर्म का रूप धारण कर लेता है।

वर्तमान में इन सब बातों की प्रासंगिकता इसलिए ज्यादा है क्योंकि धर्म अथवा मजहब के नाम पर हो रही हिंसा में बेकसूर ही मारे और सताये जा रहे हैं। जो धर्म अथवा मजहब शांति, न्याय और प्रेम की आधारशिलाओं पर खड़े होने का दावा करते हैं उन्हीं के कथित नुमाइंदे अपनी स्वार्थपूर्ण रोटियां सेंकने के लिए उन्माद भड़काते हैं, दंगे करवाते हैं और जिनका अंतिम तथा पहला शिकार बेकसूर ही बनते हैं। दरअसल आज लोग धर्म अथवा मजहब की ऊपरी सजावट, बाहरी प्रतीकों और रस्मों-रिवाजों पर तो ज्यादा जोर देते हैं लेकिन जब धर्म के मूल आचरणों, सद्गुणों को अपनाने की बात आती है तो व्यवहारिकता और सांसारिकता की दुहाई देकर ना-नुकुर करने लगते हैं। ऐसे में होता यह है कि धर्म का असली तत्व, असली स्वरूप लुप्त हो जाता है और बाहरी दिखावे की होड़ बढ़ने लगती है जो प्रेम-विस्तार के बजाय नफरत-विस्तार में बदल जाती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने-अपने धर्म की उत्कृष्टता उसके सद्गुणों को अपनाकर सिद्ध करें। एक-दूसरे की भावनाओं को आहत करने, बेकसूरों पर जुल्म ढहाने, धर्म की बाहरी साज-सजावट पर ही जोर देने से सिर्फ कलह-विद्वेष और अधर्म ही बढ़ता है। जिस प्रकार पहले तत्व होता है, फिर उसका प्रतीक, ठीक उसी प्रकार पहले धर्म के मूल सिद्धांतों को साधें, बाहरी चीजें (प्रतीक) अपने आप उत्कृष्ट हो जाएंगी। तब सभी धर्म, मजहब, संप्रदाय एक-दूसरे से स्पर्धा नहीं बल्कि सहयोग करते नजर आएंगे। 

**४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो: ०९४११६०७६७२*

गुरबाणी चिंतनधारा : ४९

अनंदु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥
हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥
तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥
गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥
कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥
(पन्ना ९२०)

२६वीं पउड़ी में श्री गुरु अमरदास जी, उस परमेश्वर के हुक्म में ही सब कुछ संभव है, इस भाव को दृढ़ करवाते हुए पावन फरमान करते हैं कि वह मालिक सिव अर्थात् जीवात्मा, सकति अर्थात् माया को पैदा करके उन पर स्वयं ही हुक्म चला रहा है। प्रकृति के प्रत्येक जीवन एवं प्रत्येक कण पर उसी का ही हुक्म चल रहा है। प्रभु स्वयं ही अपने हुक्मानुसार जीवों पर माया का प्रभाव डालता है अर्थात् उन्हें मायाधीन करके यह कौतुक देख रहा है। स्वयं ही किसी विरले पर अपनी कृपा-दृष्टि से उसे यह समझ बख्शता है कि यह माया केवल प्रपंच (छलावा) है और उसे इस बंधन से मुक्त रखता है।

ईश्वर स्वयं ही जिस भाग्यशाली को गुरु-दर्शाए मार्ग पर चलाता है वही खुशकिस्मत इंसान यह मर्म समझता है। वही एक अकाल पुरख परमेश्वर में चित्त जोड़ता है। ऐसे हृदय में ही आत्मिक आनंद सदैव बना रहता है जहां माया अपना प्रभाव नहीं डाल सकती।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि परमेश्वर स्वयं ही माया की रचना करता है और स्वयं ही किसी विरले (भाग्यशाली) को सूझ बख्शता है कि माया उसी प्रभु के अधीन है अर्थात् उसी की दासी है।

वस्तुतः सर्वत्र माया के तीन गुणों (रज, सत और तम) का प्रसार है। सारा संसार इसी के प्रभावाधीन है। यही नहीं, त्रिदेव तक को भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं माना जा सकता। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने इसी भाव को दृढ़ करवाया है, यथा :

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥
(पन्ना ७)

अर्थात् एक विशेष युक्ति से माया प्रसूता हुई और उसने तीन प्रमाणिक देव--ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव पैदा किए, जिनमें से ब्रह्मा को सृष्टि का रचयिता, विष्णु को पालनकर्ता तथा शिव को संहारकर्ता माना जाता है। यह त्रिदेव भी माया के अधीन हैं, लेकिन माया स्वयं स्वतंत्र नहीं है, वह ईश्वर के अधीन है। आश्चर्य की बात है कि ये तीनों देव जो हैं इनके प्रत्येक क्रिया-कलाप को ईश्वर देख रहा है पर ये उस परमेश्वर को नहीं देख सकते। वस्तुतः गुरबाणी आशयानुसार त्रिदेव भी माया के प्रभाव से मुक्त नहीं हैं, यथाः

ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै मूरति त्रिगुणि भरमि भुलाई ॥
गुर परसादी त्रिकुटी छूटै चउथै पदि लिव लाई ॥
(पन्ना ९०९)

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ०९३१४६-०९२९३*

अत: माया के त्रिगुणि प्रभाव से वही मुक्त हो सकता है जिसे वह प्रभु आप इसके प्रभाव से स्वतंत्र करवाता है।

गुरबाणी आशयानुसार कोई विरला भाग्यशाली ही सही मार्ग पर उसी की रहमत से बच सकता है, यथा गुरबाणी का प्रमाण है :

भूले मारग जिनहि बताइआ ॥
ऐसा गुरु वडभागी पाइआ ॥
सिमरि मना राम नामु चितारे ॥
बसि रहे हिरदै गुर चरन पिआरे ॥
(पन्ना ८०३-०४)

वस्तुत: उस परमेश्वर के अजब रंग हैं। वह किसी को अपने चरणों की प्रीति बख्श कर अपने में ही लीन रखता है और किसी को माया में ही गलतान कर देता है, यथा श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी का प्रमाण है :

इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥
इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ *(पन्ना ४६३)*

वह प्रभु किसी विरले को अपने चरणों की प्रीति बख्श कर उसके समस्त संताप दूर कर सहजावस्था में लाकर उसे सदैव अपने रंग में रंग कर आनंदित रखता है, यथा:

अनंदु सहज रस सूख घनेरे ॥
दुसमन दूख न आवै नेरै ॥
गुरि पूरे अपुने करि राखै ॥
हरि नामु जपतु किलविख सभि लाथे ॥
(पन्ना १३४०)

सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥
ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥
तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥
गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंम्रित बाणी ॥
कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥२७॥

२७वीं पउड़ी में श्री गुरु अमरदास जी इस तथ्य को समझा रहे हैं कि धर्म-ग्रंथों के केवल पठन मात्र से तब तकआत्मिक आनंद की प्राप्ति मुमकिन नहीं है जब तक इन ग्रंथों में निहित वास्तविक आत्मिक आनंद की प्राप्ति संभव नहीं।

गुरु पातशाह का पावन फरमान है कि सिम्रतियां तथा शास्त्र आदि धर्म-ग्रंथों को पढ़ने वाले पंडित केवल यही विचार करते हैं कि इन धर्म-ग्रंथों के अनुसार पाप क्या है तथा पुण्य क्या है? केवल यह विचारने मात्र से आत्मिक आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती। यह अटल सच्चाई है कि सतिगुरु की शरण में आये बिना आत्मिक आनंद का रस नहीं आ सकता। यह संसार त्रिगुणी माया में ही भटकता हुआ इसी के प्रभाव में गफलत की नींद में सोया पड़ा है और इसी निद्रा में उसके (बेशकीमती) जीवन की रात गुजरती जा रही है, क्योंकि सतिगुरु की शरण के बिना तत्व स्वरूप ईश्वर (नाम) को नहीं समझा जा सकता अत: ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग नहीं सूझता।

गुरु-कृपा से माया के मोह की नींद से वही जन जागते हैं जिनके मन में परमेश्वर का प्रेम बस गया, वही मुख से प्रभु के नाम की अमृतमयी बाणी उच्चारण करते हैं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वही मनुष्य आत्मिक आनंद प्राप्त करने में समर्थ होते हैं जो हर पल परमेश्वर की याद में हृदय को टिका कर रखते हैं और जिस (भाग्यशाली) की आयु मोह की निद्रा में न सोकर जागते हुए व्यतीत होती है अर्थात् गुरु-कृपा से जिन पर विकारों का प्रभाव नहीं पड़ता और जिनकी सुरति सदैव प्रभु-चरणों से जुड़ी रहती है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने स्पष्ट किया है कि केवल सिम्रतियों और शास्त्रों के वक्ता एवं श्रोता केवल यही विचार करते रहते हैं कि इन पुस्तकों के अनुसार पाप-कर्म क्या है तथा पुण्य-कर्म क्या है? लेकिन उसके अनुसार अपने जीवन में वे जब तक पुण्य-कर्म करने तथा पाप-कर्म त्यागने का यत्न नहीं करते तब तक उनका जीवन आनंद-विहीन है। इस संदर्भ में गुरबाणी हमारा मार्गदर्शन करती है कि यह पाप-कर्म और पुण्य-कर्म के संस्कारों को जीव अपने साथ उकेर कर ले जाता है और उस मालिक की दरगाह में उसके इन पुण्य एवं पाप-कर्मों के संस्कारों के अनुसार ही फल मिलता है, यथा जपु जी साहिब की बाणी में इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए श्री गुरु नानक देव जी कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हैं:

पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ (पन्ना ४)

यही नहीं भक्त कबीर जी तो यहां तक स्पष्ट करते हैं कि बुद्धि से सही और गलत की परख होते हुए भी अगर कोई गलत कार्यों में प्रवृत्त रहे, उसकी तो वही स्थिति होगी कि हाथ में जलता हुआ दीपक पकड़ा हुआ हो और फिर भी कुएं में जा गिरे। ऐसे ज्ञान का क्या लाभ? बाणी का प्रमाण है :

कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥
काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै ॥
(पन्ना १३७६)

वस्तुतः पुस्तकीय ज्ञान से नहीं अपितु सतिगुरु के मार्गदर्शन से ही अर्थात् गुरु द्वारा दर्शाए मार्ग पर सही मायने में चल कर ही आत्मिक आनंद की प्राप्ति हो सकती है। इस संदर्भ में पंजाबी भाषा की लोक-प्रचलित कहावत भी उल्लेखनीय है:

पढ़-पढ़ किताबां दे लाए ढेर,
बाहर चानणा ते अंदर हनेर।

अतः जब तक गुरु-कृपा से हृदय-घर में ज्ञान का दीपक नहीं जल जाता तब तक जीवन-सफर में भटकना ही बनी रहेगी। जब जीवन में ही भटकाव होगा अर्थात् रास्ता ही गलत चुना गया होगा तो कामयाबी की मंजिल कैसे प्राप्त हो सकेगी जिसकी प्राप्ति हेतु यह मानव-जीवन प्राप्त हुआ है? गुरबाणी इस संदर्भ में पावन दिशा-निर्देश करती है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ (पन्ना १२)

और केवल उस परमेश्वर का सिमरन करने वाले हृदयों में सदैव शांति, शीतलता, सुख-चैन तथा आत्मिक आनंद हर पल बना रहता है और ऐसा मनुष्य हर पल उसी परमेश्वर की सिफत-सलाह करता हुआ, उसी के रंग में रंगा हुआ, सर्वत्र में उसी का दीदार करता हुआ शोक-संताप से रहित सदैव आनंद की अनुभूति करता है और अपने जीवन-मनोरथ में कामयाब हो जाता है।

माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥
मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥
ओस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥
आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥
कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥२८॥

इस पउड़ी में गुरु पातशाह श्री गुरु

अमरदास जी उस पारब्रह्म परमेश्वर के प्रकृति के हर स्थान पर रहने वाले, जीवों की प्रतिपालना करने वाले, प्यार के सागर प्रभु के गुणगान करते हुए पावन फरमान करते हैं कि वह प्रभु, जो माता के उदर (पेट) में भी बालक की प्रतिपालना करता है, ऐसे (सर्व समर्थ) प्रभु को मन से कभी भुलाना नहीं चाहिए। इतने बड़े पारब्रह्म परमेश्वर को मन से क्यों भुलाएं जो माता के पेट की जठराग्नि में बच्चे के भोजन की व्यवस्था करता है, उसे खुराक पहुंचाता है? उस बच्चे को मां के पेट की अग्नि में किसी तरह की तपिश (ताप) का दुख नहीं लगता, जिसे वह अपने नाम-सिमरन की लिव लगाता है।

दुनियावी मोह के कारण जीव आत्मिक आनंद से वंचित रहता है लेकिन उस जीव को मोह आदि विकार छू भी नहीं पाते जिसे ईश्वर अपने चरणों की प्रीति बख्शता है। अत: हे भाई! गुरु की शरण में आकर सदैव प्रभु का सिमरन करते रहना चाहिए। श्री गुरु अमरदास जी पावन फरमान करते हैं कि आत्मिक आनंद की ख्वाहिश रखने वालों को इतने बड़े (समर्थ) प्रभु को कभी हृदय से भुलाना नहीं चाहिए।

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु साहिब ने माता के गर्भ का जिक्र किया है जहां अन्न, फल और खाद्य पदार्थ आदि घुलनशील हो जाते हैं उसी पेट की अग्नि में परमेश्वर छोटे से जीव को सुरक्षित रखता है। जहां उसके भोजन की मां भी व्यवस्था नहीं कर सकती वहां उसे आहार पहुंचाता है, उसकी सुरक्षा एवं प्रतिपालना की सुव्यवस्था करता है। उस मददगार दयालु प्रभु को मन से क्यों भूल जाते हो?

बाणी अनुसार गर्भ में उल्टा लटका हुआ जीव श्वास-श्वास उस प्रभु का सिमरन करता है और इसी सिमरन की बरकतों से उसकी सुरक्षा एवं खुराक का प्रबंध कुदरत वाला करता है। गुरबाणी में अन्यत्र इस तरह के उदाहरण प्रस्तुत कर समझाया गया है कि :

मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ ॥
नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिस दै नाइ ॥ (पन्ना ७०६)

उस समय जीव की क्या अवस्था होती है? ईश्वर से बहुत वायदे करके वेनती करके जीव बाहर आता है, लेकिन दुनियावी हवा, माया, मोह में इस कद्र गलतान हो जाता है कि ईश्वर से किया गया वायदा कि हे प्रभु! इस स्थान से निकालो, मैं सास-सास तेरा सिमरन करूंगा, सब कुछ भूल जाता है, यथा लोक-प्रचलित धारणा है :

गर्भ दे भुल्ल गए ने वायदे, जदों उल्टा लटकाइआ सी।
बेनती कर कर के मूरख जदों तूं बाहर आइआ सी।
बंदे मूरखा किउं रब नूं भुलाइआ ओए!
सुच्चे मोतीआं नूं मिट्टी विच रुलाइआ ओए!

गुरबाणी हमारा मार्गदर्शन करती है कि जिस गर्भ की जठराग्नि में उस परमेश्वर ने तेरी रक्षा की यहां इस संसार में भी वास्तव में वही तेरा सच्चा रक्षक है। तू उसी का सिमरन कर, यथा :

रचंति जीअ रचना मात गरभ असथापनं ॥
सासि सासि सिमरंति नानक महा अगनि न बिनासनं ॥ (पन्ना ७०६)

वस्तुत: त्रिगुणी माया का प्रभाव हमें ईश्वर से जुड़ने नहीं देता। इसलिए गुरबाणी हमें प्रेरित करती है उस ईश्वर के चरणों में सदैव अरदास विनती करने की कि हे रहमतों के सागर! तू हमें अपने नाम की दात बख्श जिसकी बदौलत हम इस मायावी प्रभाव से बच कर तेरा गुणगान कर सकें।

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥
माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥
जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥
लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥
एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥
कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२९॥ (पन्ना ९२१)

उपरोक्त पउड़ी में श्री गुरु अमरदास जी ने माता के उदर की अग्नि तथा जगत में माया की अग्नि की प्रबलता में समानता बताई है और स्पष्ट किया है कि इन दोनों प्रबल अग्नियों से ईश्वर की कृपा से ही बचा जा सकता है।

गुरदेव फरमान करते हैं कि जैसे माता के पेट में आग है, ठीक वैसे ही संसार में माया के विकार की आग दुखदायी है। विकार हृदय को तपिश पहुंचाने वाले हैं। माया और समस्त अग्नियां एक-सी हैं। ईश्वर ने ऐसा ही खेल बनाया है: *"माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥"* इस पंक्ति का अर्थ भाई जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा जी के चिंतनानुसार इस प्रकार है- संसार में व्यापक हर तरह की माया तथा मां के पेट के बीच की आग एक जैसी प्रबल है। अकाल पुरख ने माया को संसार की प्रक्रिया चलाने तथा इसके विनाश का कारण बना कर आश्चर्यजनक खेल रच दिया है।

जब ईश्वर की रजा हुई अर्थात् जब अकाल पुरख को अच्छा लगा तब जीव ने संसार में जन्म लिया। जन्म लेते ही माता-पिता, भाई-बहन सारे परिवार के सगे-सम्बंधियों को वह जीव प्यारा लगने लगता है और जीव को परिवार प्यारा लगने लगता है। इस प्रकार दोनों के बीच मोह का बंधन बंध जाता है।

जीव के चित्त का जुड़ाव (जो माता के गर्भ में) अकाल पुरख से था वह (संसार) में आकर टूट जाता है। यहां माया की तृष्णा अपना-अपना जोर अर्थात् प्रभाव जीव पर डालती है तो जीव माया के हुक्म के अधीन चलने लगता है अर्थात् माया के बंधन में बंध जाता है।

हे भाई! जिस व्यक्ति या पदार्थ की प्राप्ति जीव को परमेश्वर से दूर कर दे उसकी रचना से मोह पड़ जाए, ईश्वर के बिना दूसरे पदार्थ ही प्यारे लगने लगें, यही है माया, यही है माया का प्रबल प्रभाव।

श्री गुरु अमरदास जी पावन फरमान करते हैं कि हे भाई! गुरु-कृपा से जिन जीवों की प्रीति प्रभु के चरणों से जुड़ती है उन्हें माया के पदार्थों में रहते हुए भी आत्मिक आनंद की प्राप्ति हो जाती है।

माया का प्रभाव जीव को तृष्णालु प्रवृत्ति का बना देता है और इसी तृष्णा के कारण जीव विकार-ग्रस्त हो जाता है, जैसा कि पावन बाणी में संसार के जीवों की अवस्था बताई गई है :

त्रिसना अगनि जलै संसारा ॥
जलि जलि खपै बहुतु विकारा ॥ (पन्ना १०४४)

इसी तृष्णा के अधीन जीव आवागमन के चक्कर से मुक्त नहीं हो सकता तथा नश्वर पदार्थों के मोह-जाल में फंस कर सुखों के निधान प्रभु को भुला बैठता है:

त्रिसना पंखी फासिआ निकसु न पाए माइ ॥
जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ ॥ (पन्ना ५०)

प्रभु-सिमरन के अतिरिक्त मनुष्य के पास इस तृष्णा से बचने का कोई मार्ग नहीं है, यथा:

त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥
महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥ (पन्ना ६८२-८३)

बिना संतोष कोई तृप्त नहीं हो सकता। पंचम पातशाह सुखमनी साहिब में भी यही पावन संदेश देते हैं:

अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥ (पन्ना २७९)

भक्त कबीर जी ने बंदर का उदाहरण देकर लालची मनुष्य की प्रवृत्ति और दशा का जिक्र किया है कि जैसे बंदर मुठ्ठी भर अनाज के लालच में मदारी की चाल में फंस जाता है और फिर मदारी द्वारा घर-घर नचाया जाता है ठीक यही दशा लालची मनुष्य की होती है, यथा:

मरकट मुसटी अनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि ॥
छूटन को सहसा परिआ मन बउरा रे नाचिओ घर घर बारि ॥ (पन्ना ३३६)

गुरबाणी में माया को तिनकों की आग तथा बादलों की छाया सदृश्य बताया गया है। जैसे ये क्षणिक हैं वैसे ही माया है। इसको पल में तौला, पल में मासा या हाथों की मैल भी कहा गया है। एक पल है तो हो सकता है कि अगले पल न भी हो तो इस माया का जो एक छलावा मात्र है उसका क्या अभिमान करना? बाणी-प्रमाण है :

माई माइआ छलु ॥
त्रिण की अगनि मेघ की छाइआ गोबिद भजन बिनु हड़ का जलु ॥ (पन्ना ७१७)

अत: गुरबाणी आशयानुसार इस माया का जितना मर्जी संग्रह कर लो इससे तृष्णा और बढ़ती जाती है। यह आग में घी का काम करती है। पंचम पातशाह की बाणी का प्रमाण है:

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥
(पन्ना २७८-७९)

इसी भाव को आम-जन की भाषा से भी समझा जा सकता है। लोक-गीत प्रचलित है:

आसां कदे बंदे दीआं हुंदीआं ना पूरीआं।
कलपदा बथेरा फिर वी रहिंदीआं अधूरीआं।
लक्खां वालिआं नूं आसा रहिंदी है करोड़ दी,
करोड़ हो जाण फिर वी पैंदीआं ना पूरीआं,
आसां कदे बंदे दीआं हुंदीआं ना पूरीआं।

स्पष्ट है कि इन इच्छाओं का कोई पारावार नहीं है। गुरबाणी हमारा मार्ग-दर्शन करती है कि इस मोह-माया के जाल से निकल कर हम करने योग्य कर्म करें। सारी मानवता हेतु गुरबाणी का पावन संदेश है:

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
(पन्ना २६६)

हम उस ईश्वर की आराधना करते हुए नेक कर्म करें। दुनिया में रहते हुए, गृहस्थ धर्म का पूर्ण निर्वाह करते हुए, हाथ-पांव से कर्म करते हुए चित्त को उस अकाल पुरख से जोड़ कर रखें यही पावन बाणी का उपदेश है, यथा भक्त कबीर जी की बाणी हम सबके लिए अनुकरणीय है :

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७६)

इस तरह जीव माया के प्रभाव से बच सकता है यदि केवल और केवल प्रभु-चरणों में इसके चित्त का जुड़ाव हो जाए। यही वास्तविक आनंद है।

हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥
मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥

जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥
हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥३०॥

३०वीं पउड़ी में श्री गुरु अमरदास जी उस अनमोल परमेश्वर का गुणगान करते हुए स्पष्ट करते हैं कि उसे दुनियावी किसी भी कीमत की एवज में पाया नहीं जा सकता। केवल गुरु-चरणों में अपना शीश भेंट करके ही उस प्रभु को पाया जा सकता है।

गुरदेव पावन फरमान करते हैं कि ईश्वर-प्राप्ति के बिना आनंद मुमकिन नहीं है और परमेश्वर अमूल्य है। वह किसी भी दुनियावी धन-दौलत के बदले नहीं मिल सकता। उस प्रभु की प्राप्ति हेतु अनेक विद्वान ज्ञानी पुरुष मिन्नतें कर-कर के थक गए, थक कर चूर हो गए लेकिन किसी ने अपनी चतुराई से हे प्रभु! तुझे नहीं पाया। अगर पूर्ण गुरु मिल जाए, जिससे मिलकर हृदय से कर्त्ता-भाव नष्ट हो जाए, ऐसे हरि-रूप गुरु के समक्ष अपना सिर भेंट कर देना चाहिए अर्थात् अपनी बुद्धि-सियानपें, अपना सर्वस्व गुरु के चरणों में समर्पित कर देना चाहिए।

गुरु की कृपा द्वारा उस प्रभु का पैदा किया हुआ जीव पुन: प्रभु-मिलाप का आनंद प्राप्त कर सके अर्थात् जीव का गुरु-कृपा से कर्त्ता-भाव मिटते ही प्यारा प्रियतम प्रभु उसके हृदय-घर में सदा के लिए बस जायेगा। उस परमेश्वर का हृदय-घर में निवास ही सच्चा आनंद है।

गुरु पातशाह पावन संदेश देते हुए कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हैं कि परमेश्वर किसी दुनियावी पदार्थ के बदले नहीं मिलता। वे जीव भाग्यशाली हैं जिन्हें पूर्ण गुरु मिलता है। उनकी तकदीर के सितारे जगमगा उठते हैं।

वह परमेश्वर अमूल्य है। उसका मूल्य नहीं आंका जा सकता, न ही दुनियावी पदार्थ के बदले और न ही अपनी सियानपों से उसे पाना मुमकिन है। केवल ईश्वर की रहमत से जिन्हें पूर्ण गुरु मिल जाता है उन्हें ही प्रभु तथा आत्मिक आनंद की प्राप्ति होती है। पंचम पातशाह की पावन बाणी भी यही भाव दृढ़ करवाती है :

ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे ॥
ना तू आवहि वसि बेद पड़ावणे ॥ . . .
ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥
ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥
सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥
तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥
(पन्ना ९६२)

अर्थात् वह परमेश्वर किसी तरह भी वश में नहीं आता। केवल एक ही कामयाब उपाय है कि गुरु-कृपा से हृदय-घर में उस पारब्रह्म की भक्ति दृढ़ हो जाए। फिर ऐसे भक्तों के वश में वह प्रभु सहज स्वभाव ही रहता है।

वस्तुत: गुरु का शबद ही अमृत-रस की खान है और जिस हृदय-घर में गुरु का शबद बस जाता है उसके समस्त दुख, कलेश, संताप मिट जाते हैं, यथा पावन बाणी का प्रमाण है:

गुर का सबदु अंम्रित रसु खाइण ॥
नानक जिसु मनि वसै तिस के सभि दूख मिटाइण ॥ (पन्ना ९६२)

आओ, गुरु की शरण में आकर नित्य उस परमेश्वर का सिमरन करें। यदि ऐसा कर सकें तो आत्मिक आनंद का निर्झर सदैव हृदय-घर में बहता रहेगा।



कविताएं

गुरु-कृपा

*–श्री संजय बाजपेयी रोहितास**

दानु किया तीरथ किया, किया मंत्र उपचार।
गुरु-चरनन जब मन रमा, तबहिं होत उजियार।
तीरथ जप-तप-मंत्र ते, समय कटत कटि जाये।
दूध दुहत चलनी सौ बरस, गुरु ते समझ उपाय।
ढाई आखर प्रेम दे, दुनिया लेत लपेट।
मन महुं श्रद्धा बढ़त है, नफरत मलियामेट।
गुरबाणी पढ़त-सुनत, कटत हैं भव के जाल।
मन महुं ज्ञान अमात है, आत्मा होत निहाल।
गुरु नानक साहिब की रजा, समझ देहि मन माहिं।
मोर प्रभु है शिखर पर, इनसे ऊपर कोऊ नाहिं।
गुरबाणी के शबद महुं, भरा ज्ञान भंडार।
लाइलाज हर रोग कहुं, एहि मा है उपचार।
गुरु का नेह अपार है, पार नहीं कोऊ पाव।
इन चरनन की कृपा ते, कांकर पावत भाव।
माटी ते उपजत सबहि, फिरि माटी मिलि जाय।
अमर रहत गुरु कै वचन, खुशी आत्मा छाय।
सोवत-जागत रटत हम, गुरु कै पावन नाम।
गुरु की किरपा ते बना, मोर हृदय गुरुधाम।
प्रभु-मार्ग दर्शाये है, गुरु का आसन उच्च।
गुरु ते ऊपर कोऊ नहीं, गुरु सुंदर परम सच।
गुरमति ज्ञान-प्रकाश ते, मन उजियारा होत।
दुनिया प्यारी लगत है, जब जगत ज्ञान-ज्योत।
नेह गुरु की खीर है, हंसत-हंसत सब खाव।
गुरबाणी कै सबद कहुं, सोवत-जागत गांव।

*C/o जनाब हुसैनी मियां साहब, स्टेशन रोड, कछौना (बालामऊ), जिला हरदोई (उ. प्र.)-२४११२६

सुख-दुख : एक दृष्टि

सुख में ऊंचा उछलेगा तो, दुख भी उतना व्यापेगा।
सुख-दुख में जो सम रहता, वो हार के भी न हारेगा।
उथली नदिया का पानी ही, क्षण-क्षण में इतराता है।
शांत-दृश्य गंभीर सिंधु की गहराई दर्शाता है।
सुख-दुख दोनों लौट-लौट के आयेंगे, जब निश्चित है,
तो छोटे-छोटे दुखों से मानव, क्यों होता विचलित है?
दुख कोई ज्यादा व्यापे तो, जग के भीषण दुख विचारो।
पाओगे दुख अपना हल्का, इसे प्रभु की कृपा ही मानो।
दुख जीवन में नहीं मिले तो, सुख की कोई कदर न समझे।
सुख में इतना डूब जायेगा, शायद प्रभु को याद न रखे।
दुख जितना सहते जायेंगे, पाप-कर्म का बोझ घटेगा।
सुख जितना भोगेंगे, उतना संचित में से पुण्य कटेगा।
फल की इच्छा छोड़ अगर, कर्मों पर ध्यान लगायेंगे।
सत्कर्मों के मीठे फल, बिन मांगे ही मिल जायेंगे।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो: ९४११६०७६७२



जत्थेदार अवतार सिंघ की ओर से प्रो. अमरजीत सिंघ (कांग) के निधन पर शोक व्यक्त

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कुरुक्षेत्र यूनीवर्सिटी के डीन यूनीवर्सिटी इन्सट्रक्शन्ज (यू. डी. आई), गुरमति साहित्य के विद्वान और पंजाबी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक प्रो. अमरजीत सिंघ (कांग) के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए परिवार के साथ सहानुभूति का प्रकटावा किया है।

यहां से जारी शोक-संदेश में उन्होंने कहा कि प्रो. अमरजीत सिंघ पंजाबियत के समर्थक, जाने-माने आलोचक तथा बहुत ही मिलनसार इंसान थे। उन्होंने अपने जीवन-काल में पंजाबी साहित्य को प्रफुल्लित करने के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया। उनके द्वारा संपादित तथा मुद्रित रचनात्मक साहित्य के लिए हरियाणा सरकार तथा विभिन्न नामी-गिरामी संस्थाओं की ओर से उनको पुरस्कार तथा सम्मान प्रदान किये गए। उन्होंने कहा कि ऐसे विख्यात तथा महान विद्वान के निधन के साथ सिक्ख-जगत एवं साहित्य प्रेमियों की कभी पूरी न होने वाली क्षति हुई है। उन्होंने सतिगुरु के चरणों में अरदास की कि वे बिछुड़ी आत्मा को अपने चरणों में निवास बख्शिश करें तथा उनके परिवार, सज्जनों-मित्रों एवं स्नेहियों को प्रभु-हुक्म मानने का बल प्रदान करें। इस अवसर पर शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के सचिव स. दलमेघ सिंघ और स. जोगिंदर सिंघ ने भी गहरा शोक व्यक्त किया।

शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की सदस्या बीबी दलजीत कौर का निधन

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की सदस्या बीबी दलजीत कौर बड़ागुड़ा के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए परिवार के साथ सहानुभूति का प्रकटावा किया।

यहां से जारी एक शोक-संदेश में उन्होंने कहा कि बीबी दलजीत कौर धार्मिक विचारों वाले, नेक-हृदय तथा बहुत ही मिलनसार थे। गुरमति के प्रचार तथा प्रसार के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। सिक्ख-सिद्धांतों को दर्शाता साहित्य घर-घर जाकर वितरित करना उनके जीवन का नेम था।

१९९६ में प्रथम बार सिरसा (हरियाणा) से सिक्ख-जगत की प्रतिनिधि धार्मिक संस्था शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की सदस्या चुने गए और गुरुद्वारा प्रबंध को और अधिक अच्छा बनाने में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान डाला। उनके निधन के साथ शिरोमणि कमेटी, उनके पारिवारिक सदस्यों, रिश्तेदारों तथा स्नेहियों गहरा आघात पहुंचा है। उन्होंने अकाल पुरख के चरणों में अरदास की कि वे बिछुड़ी आत्मा को

अपने चरणों में निवास बख्शिश करें और उनके परिवार, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को प्रभु-हुक्म मानने का बल प्रदान करें।

सिक्खों की पहचान के संबंध में विभिन्न भाषाओं में ब्रोशर छापकर यू. एन. ओ. के अधीन सभी देशों के मुखियों और दिल्ली स्थित विभिन्न देशों के राजदूतों को भेजा जाएगा -जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से सिक्ख की पहचान के संबंध में अंग्रेजी तथा अन्य विभिन्न भाषाओं में ब्रोशर प्रकाशित करके यू. एन. ओ. के अधीन सभी देशों के मुखियों और भारत में विभिन्न देशों के राजदूतों को भेजा जाएगा और अमेरिका के एयरपोर्टों पर सिक्खों की तलाशी लेने के रोष में और दस्तार के महत्व को दर्शाता स्मरण-पत्र यू. एन. ओ. के महासचिव को भेजा जाएगा। इन विचारों का प्रकटावा शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की कार्यकारिणी कमेटी की एकत्रता के बाद पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए किया।

उन्होंने बताया कि एकत्रता में सिक्ख की पहचान को विश्व-स्तर पर उजागर करने के लिए सिक्खी-सरोकारों तथा मर्यादा सम्बंधी विस्तृत जानकारी विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित कराये जाने का निर्णय लिया गया है। विदेशों में सिक्खी के प्रचार व प्रसार के लिए अमेरिका के वाशिंगटन शहर में व्हाईट हाऊस लेन पर जगह लेकर 'सिक्ख मिशन' स्थापित किये जाने का भी महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है। इस कार्य के लिए वाशिंगटन में जगह प्राप्त करने के लिए शिरोमणि कमेटी की ओर से सोसायटी इनकारपोरेट कराई जाएगी जो खरीद की जाने वाली जगह का निर्णय लेकर स्वीकृति लेगी और अमेरिका में स्टेट नार्थ कैरोलीना के शहर शैरलैट में ढाई एकड़ जगह प्राप्त करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रकाशना के लिए मशीनें लगाये जाने पर होने वाले व्ययों की स्वीकृति का निर्णय किया गया है।

श्री हरिमंदर साहिब में आने वाले श्रद्धालुओं की गणना पर हुआ सर्वेक्षण

अमृतसर। काफी बड़ी संख्या में श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर की यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं की वास्तविक उनकी समस्याओं को ज्ञात करने तथा उन समस्याओं का समाधान करने के ख्याल से फेअरवुड कंसलटेंट प्राईवेट लिमिटिड कंपनी द्वारा १२५ कर्मियों की एक टीम बना कर ८ से १५ जनवरी तक कार्य कराते हुए श्रद्धालुओं की वास्तविक गिनती ज्ञात करने हेतु एक सर्वेक्षण कराया गया है। कंपनी द्वारा यह सर्वेक्षण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का सहयोग लेते हुए संपंन किया गया।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०२-२०११